भक्तप्रसाद : नेपाल में एक प्रचलित नाम
भ्यागुतो : नेपाली भाषा में मेंढक

काठमांडू घाटी का एक युवा उत्साही मेंढक अपने देश की यात्रा करने का निश्चय करता है। जहां कोई मेंढक पहले कभी नहीं गया, भक्तप्रसाद भ्यागुतो वहां जाता है। वह एक टीन के डिब्बे में बैठकर नदी की सैर करता है, विशाल चोटियों पर चढ़ता है। कुली, टट्टू और याक की पीठ पर दूर-दराज के गांवों में जाता है। काठमांडू वापस आने के पहले हवाई जहाज के पायलट की कमीज की जेब में घुसकर नेपाल के ऊपर उड़ता है।

पहाड़ी, मैदानी इलाकों और अनोखे पात्रों के माध्यम से भक्तप्रसाद के साहसिक कारनामों के द्वारा नेपाल की एक वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत की गई है। पाठक नेपाल देश को सजीवता से महसूस करेगा और वहां के लोग व जंतु-जगत से अपनापन जोड़ पाएगा।

अनुवादक **शशी जैन** ने विपुल मात्रा में अनुवाद कार्य एवं बाल साहित्य की सभी विधाओं में साहित्य-सृजन किया है। वे 'बचपन सोसायटी फॉर चिल्ड्रेंस लिट्रेचर एंड कल्चर', 'एसोसिएशन ऑफ राइटर्स एंड इलस्ट्रेटर्स फॉर चिल्ड्रेन' तथा 'लेखिका संघ' से भी सक्रिय रूप से जुड़ी हैं।

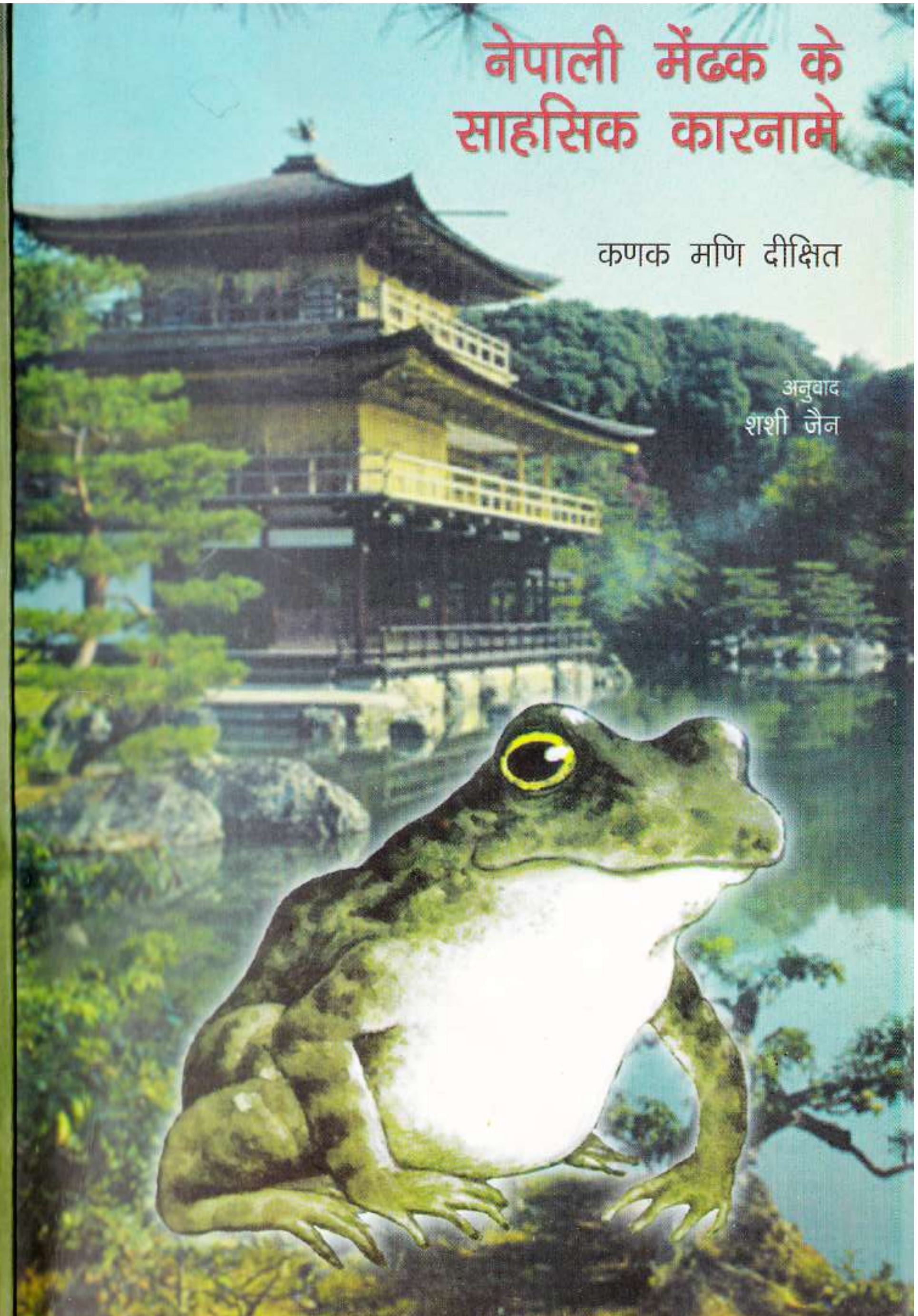
nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

₹ 45.00
ISBN 812375725-5
9 788123 757254
13141394

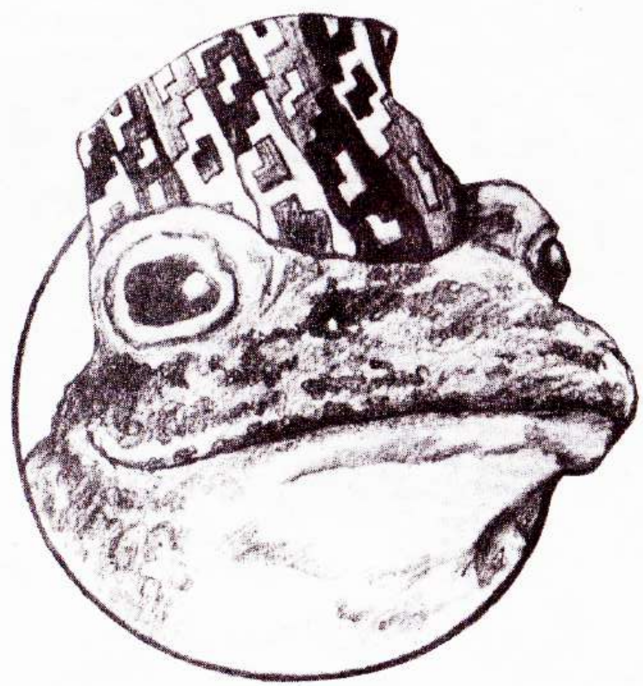
नेपाली मेंढक के साहसिक कारनामे

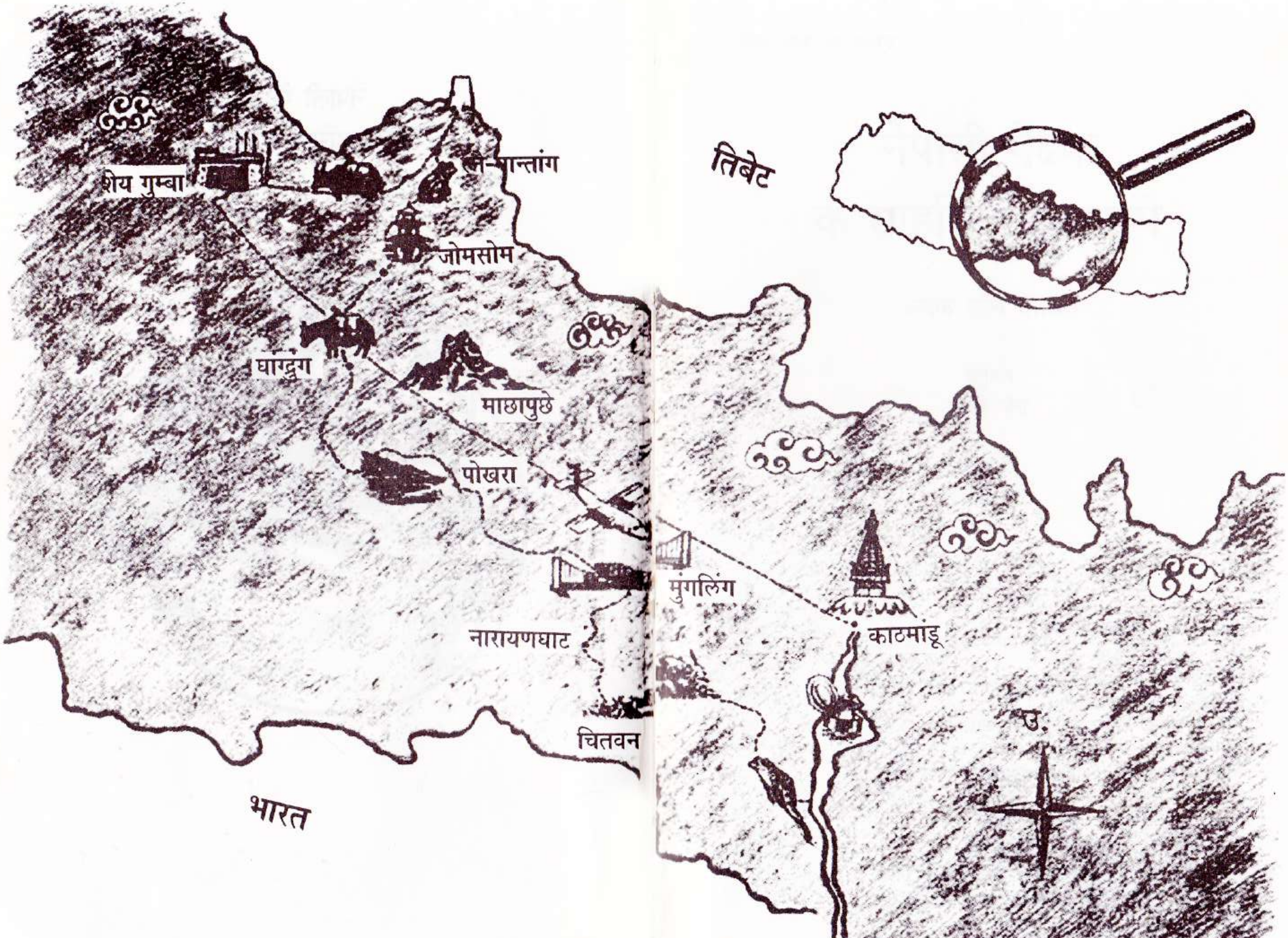
कणक मणि दीक्षित

अनुवाद
शशी जैन



नेपाली मेंढक
के साहसिक कारनामे





शेय गुम्बा
तिबेट
जोमसोम
घांद्रुग
माछापुछ्रे
पोखरा
मुंगलिंग
नारायणघाट
चितवन
काठमांडू
उ.
भारत

ISBN 978-81-237-5725-4
पहला संस्करण : 2010
दूसरी आवृत्ति : 2014 *(शक 1935)*

Adventures of A Nepali Frog *(English)*
Nepali Mendak Ke Sahsik Karname *(Hindi)*

₹ 45.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
Website : www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

नेपाली मेंढक के साहसिक कारनामे

कणक मणि दीक्षित

अनुवाद
शशी जैन

चित्रांकन
सुभाष राय

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

प्रस्तावना

भक्तप्रसाद भ्यागुतो के साहसिक कारनामों की कहानी मैंने 1989 में अपने बच्चों के साथ सोते समय रातों में रची। भक्ते मेंढक घूमता-फिरता आगे बढ़ता गया जब तक कि मैं उसे हवाई जहाज से वापस काठमांडू नहीं ले आया।

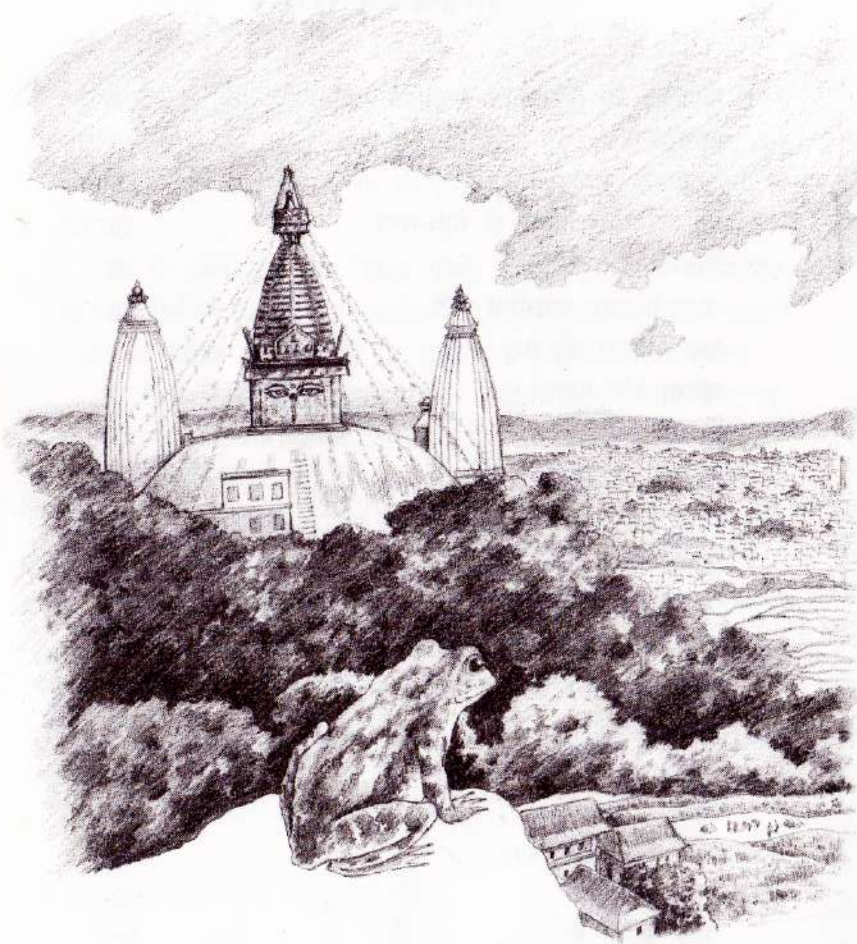
तब से भक्तप्रसाद का किस्सा पहले काठमांडू की एक साप्ताहिक पत्रिका 'राइजिंग नेपाल' में धारावाहिक के रूप में चलता रहा और वस्तुतः 1996 के बारिश के मौसम में यह पुस्तक के रूप में सामने आया।

इस मेंढक ने नेपाल की पहाड़ियों और घाटियों का जो रास्ता चुना, पूरा तो नहीं पर अधिकतर मेरी अपनी यात्राओं पर आधारित है। मैंने छंगतांग सीमा पर स्वयं गिलहरियों को देखा है। तराई के बैलों से दोस्ती की है, फेवा झील पर ढाबुस मेंढकों का टरटराना सुना है और जुफाल की खतरनाक हवाईपट्टी से उड़ान भरी है।

कुल मिलाकर, मुझे लगता है कि मुझे इन कारनामों को रचने में जितना आनंद आया भक्ते को भी अपने कारनामों में उतना ही मजा आया है। हम दोनों आशा करते हैं कि पाठक को भी उतना ही रोमांच होगा।

कनक मणि दीक्षित
पटन ढोका, नेपाल
2 नवंबर, 1996

विषय-सूची





काठमांडू का बुलावा

भक्तप्रसाद भ्यागुतो काठमांडू का एक नौजवान मेंढक था, जिसका कैशोर्य अभी-अभी छूटा ही था। वह अपने नाना बुद्धिप्रसाद, मां सानोमैया व भाई-बहनों के साथ, इचंगु गांव में, स्वयंभू स्तूप के पीछे, पहाड़ी के पास, धान के खेत में रहता था। दूसरे मेंढकों की तरह वह भी एक जिज्ञासु उभयचर था। लेकिन उसने और मेंढकों से जल्दी फुदकना शुरू कर दिया था। धीरे-धीरे वह धान-खेतों के कीचड़ भरे रास्तों पर निडर हो घूमने लगा, जिन रास्तों से लोग पहाड़ी से नीचे जाते थे।

उसने स्त्रियों-पुरुषों व बच्चों को उस पगडंडी से आते-जाते देखा और वह हैरान हुआ कि ये लोग कहां आते-जाते हैं। आमतौर पर मेंढक कहीं जाने की चिंता नहीं करते हैं। वे तो बस आस-पास भिनभिनाते कीड़े-मकोड़ों के इंतजार में रहते हैं या फिर बगीचे के सांपों पर नजर रखते हैं, जिन्हें इन उभयचरों को खाना पसंद है, नहीं तो कीचड़भरे पानी में लोट लगाते हैं या गला सूखने तक टर्र-टर्र चिल्लाते हैं। लेकिन तंग पगडंडी से आते-जाते लोगों को देखकर लगता था कि उन्हें कहीं पहुंचना है। लगता था उनका कुछ उद्देश्य है। ये कुछ ऐसी बातें थीं, जिनकी जरूरत किसी आम मेंढक ने कभी महसूस नहीं की।

''ठीक है, मेरा भी एक उद्देश्य होगा,'' गरमी की एक सुबह किशोर भक्तप्रसाद ने निश्चय किया। फिर अपनी पूंछ के गिर जाने तक, वह 'चौतारा' के आस-पास घूमता रहा। पगडंडी से आने-जाने वाले लोग इस स्थान पर गपशप के लिए रुकते थे। उन लोगों की बातों से उसने उस दुनिया के विषय में अनुमान लगाया जो धान के उन सुरक्षित खेतों से अलग थी, जहां उसके पूर्वज पता नहीं कब से रहते थे।

शाम का समय था। भक्तप्रसाद काठमांडू घाटी को निहार रहा था।



ढलते सूरज की किरणों से हरे धान के खेत चमक रहे थे। वहां से परे, उसने पैगोडा मंदिर-शिखरों और राजमहल की ऊंची इमारतों के बीच काठ की छतों वाले बहुत-से घर देखे। इचंगु के सब मेंढकों को पता था कि यह स्थान 'द सिटी' है। पर इस शब्द का मतलब किसी को पता नहीं था। चौतारा में भक्तप्रसाद ने मोटर गाड़ियों, स्ट्रीट लाइटों और सैकड़ों कमरों वाली आलीशान इमारतों के बारे में सुना था।

जिस शाम उसकी बची हुई पूंछ झड़ी, उसने अपना घर छोड़ने का इरादा सबको बता दिया। "पर क्यों? किसलिए?" सारे मेंढक एक साथ टर्रा उठे। उनको विश्वास नहीं हो रहा था कि कोई इचंगु के धान-खेतों को छोड़कर क्यों जाएगा? पूंछरहित भक्तप्रसाद ने हिम्मत से जवाब दिया, "क्योंकि मैं इन खेतों के बाहर की दुनिया को देखना चाहता हूं। मैं वह शहर देखना चाहता हूं, जहां लोग रहते हैं। मैं तराई जाना चाहता हूं। वहां की जमीन इतनी समतल है कि तुम बिना थके जब तक चाहो फुदक सकते हो। सुना है वहां सूरज क्षितिज में अस्त होता है, पहाड़ों के पीछे नहीं। मैं बड़ी-बड़ी नदियां, तरह-तरह के जीव-जंतु, खुले मैदान और पहाड़ देखना चाहता हूं!"

मेंढक कुल का बुजुर्ग प्रधान, बुद्धिप्रसाद ही केवल भक्तप्रसाद की इच्छा को समझ सका। बहुत साल पहले वह भी इसी तरह सोचता था। इस विषय में वह कुछ कर नहीं पाया, इस बात का उसे आज भी दुख था। वह नहीं चाहता था कि उसका नाती भक्तप्रसाद भी वही गलती करे। फिर भी बुद्धिप्रसाद ने अपने साहसी वंशज को प्रशंसा भरी नजरों से देखा और सोचने लगा, 'यह नौजवान मुझसे अधिक हौसले वाला है। भक्ते ने निश्चय कर लिया है और अब उसे कोई नहीं रोक पाएगा।'

आस-पास इकट्ठा हुए मेंढकों के पास जाकर बुद्धिप्रसाद ने कहा, "इसे जाने दो। यह बाहर की दुनिया देखेगा और वापस आकर हमें उस दुनिया के बारे में बताएगा।" भक्तप्रसाद ने नाना की बात को सबकी अनुमति माना और टर्र-टर्र कहकर सबसे विदा ली। उसकी मां सानोमैया अपने पिता से कुछ कहे इसके पहले ही वह नौजवान मेंढक उस पगडंडी पर छलांग लगाता चल पड़ा जहां से लोग 'द सिटी' जाते थे।

"धन्यवाद, हजूरबा!" वह अपने नाना के कंधे के ऊपर जाकर जोर से चिल्लाया। फिर उसने तब तक पीछे मुड़कर नहीं देखा जब तक वह ढलान के नीचे नहीं पहुंच गया। उसे पता था कि वह पक्की सड़क रिंग रोड कहलाती थी, जिसने काठमांडू को चारों तरफ से घेर रखा था। उसने आखिरी बार इचंगु के खेतों को देखा, मुड़ा और फुदककर आगे बढ़ने लगा।

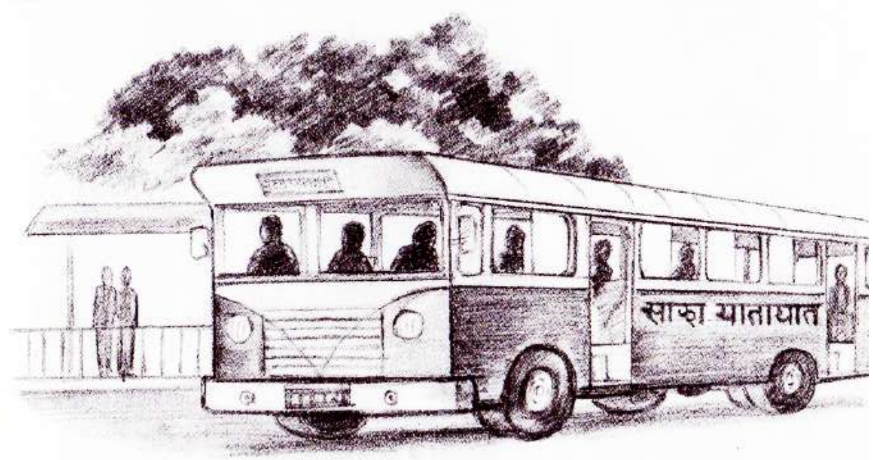
कुछ देर के बाद, भक्तप्रसाद पहाड़ी पर बने, स्वयंभू स्तूप के आगे से निकला। उसने देखा कि बुद्ध की हितैषी आंखें उसकी प्रगति का अनुकरण कर रही हैं और मानो कह रही हैं, 'बढ़ते जाओ, साहसी नौजवान, मैं तुम्हारी रक्षा करूंगा।' भक्तप्रसाद का हौसला बढ़ गया।

भक्तप्रसाद जैसे ही पक्की सड़क की सख्त सतह पर आया, थकान महसूस करने लगा। उसे याद आया कि चौतारा पर स्त्री-पुरुष बातें करते थे कि शहर जाने के लिए बस पकड़ेंगे। इसलिए वह उस जगह इंतजार करने लगा जहां पर बालाजू रोड रिंग रोड से मिलती थी। शीघ्र ही एक नीले रंग की 'साझा' बस आई। लेकिन उस बस के कंडक्टर ने उसे अंदर घुसने से मना कर दिया। कंडक्टर ने बताया कि साझा कंपनी के जनरल मैनेजर ने मेंढकों, दादुरों, कीड़ों, सांपों और चूहों आदि को पब्लिक ट्रांसपोर्ट में चढ़ने से मना किया है। कंडक्टर ने फिर बुरा-सा मुंह बनाकर कहा, "वैसे भी हम शहर के बीच रत्ना पार्क तक ही जाते हैं, और कोई मेंढक रत्ना पार्क क्यों जाना चाहेगा?"

"हजूर! रत्ना पार्क ठीक रहेगा," भक्तप्रसाद ने बड़ी विनम्रता से कहा। आज से पहले किसी ने इतनी विनम्रता से सम्मान देते हुए इस रूखे कंडक्टर से बात नहीं की थी। उसका पाला रोज असभ्य यात्रियों से पड़ता था, जो धक्का-मुक्की करते थे, पूरा किराया देने से इनकार करते थे और जब वह बार-बार किराया मांगता था तो गाली-गलौच करते थे। कंडक्टर को ही लोगों को 'हजूर' कहकर बुलाना पड़ता था। उसका बरताव मेंढक के साथ एकदम नरम पड़ गया। "आओ, आओ, जल्दी करो," उसने कहा। जैसे ही भक्तप्रसाद उछलकर अंदर चढ़ा, कंडक्टर ने बस के बाहर दो थपकियां दीं। यह ड्राइवर के लिए चलने का इशारा था।

बस ने बड़े-बड़े खेतों, विष्णुमती नदी और सीधी ढलान से होते हुए काठमांडू शहर में प्रवेश किया। बस राजा के रॉयल पैलेस, रानी-पोखरी के बड़े तालाब से होती हुई अंत में रत्ना पार्क बस अड्डे पर पहुंची।

यहां चमचमाती रोशनियों की चकाचौंध थी, तरह-तरह की आवाजें गूंज रही थीं, जिनसे भक्तप्रसाद ही क्या, काठमांडू के 'कांठ' या देहाती इलाके का कोई भी प्राणी हैरान हो जाता। सैकड़ों लोग इधर-उधर से आ-जा रहे थे। उनके साथ-साथ कारें, बसें, धक्का गाड़ियां, रिक्शे, साइकिलें और मोटरसाइकिलें चल रही थीं। इस धक्का-पेल में जमीन पर चलने वाला कोई मेंढक तुरंत कुचलकर मर सकता था। "यह ठीक नहीं रहेगा," भक्तप्रसाद ने अपने-आप से कहा। काठमांडू पैदल नहीं देखा जा सकता था।





आमवाला

एक पल के लिए, भक्तप्रसाद सोच में पड़ गया कि क्या करे। अगर वह शीघ्र ही बस से नहीं उतरा तो बस उसे वापस रिंग रोड ले जाएगी, और वह वापस इचंगु पहुंच जाएगा। 'यह अब तक का सबसे साधारण साहसिक कारनामा होगा,' मेंढक ने सोचा।

और तब, उसने अपनी हाजिरजवाबी का इस्तेमाल किया जो आने वाले दिनों में उसे काफी मददगार होने वाला था। भक्तप्रसाद ने बस की खिड़की से बाहर एक भरिया (बोझा ढोनेवाला) को पीठ पर टोकरी उठाए देखा कि तभी उसे एक उपाय सूझा। वह कंडक्टर की ओर देखकर चिल्लाया, "धन्यवाद, हजूऽऽऽर!" और झटपट खिड़की से बाहर कूद गया। वह छप्प से सीधा टोकरी में जा गिरा। टोकरी आमों से पूरी भरी थी। इसका मतलब था कि भरिया असन बाजार जा रहा था।

"वाह!" शहर घूमने का इससे अच्छा उपाय और क्या हो सकता था?—आमों से भरी टोकरी, 'डोको' में बैठकर सीधे नेपाल के सबसे भीड़ वाले बाजार में जा पहुंचना। भरिया को पता था कि कौन कूदकर उसके माल में आ छिपा है, पर उसने बुरा नहीं माना। उलटे, उसने मेहमान का स्वागत करते हुए कहा, "छुटकू, तुम चाहो तो शहर देखते-देखते आम भी चख सकते हो।"

भरिया का नाम जगत बहादुर था। वह काठमांडू शहर में साहुओं (व्यापारियों) का माल ढोकर अपना गुजारा करता था। वह अपनी पीठ पर कभी धातु से बनी चादरें, कभी चावल की बोरी, कभी फर्नीचर या फिर मिट्टी के तेल के कनस्तर लादता था। "आज मैं असन की एक दूकान के लिए आम ले जा रहा हूं।" जगत बहादुर ने बताया। "खाओ, तुम आम खाओ।" उसने कहा।

भक्तप्रसाद ने एक खूब पका हुआ आम चुना और असन की चमकती हुई दूकानों को देखते हुए चूसने लगा। वहां स्टोरों में खाना बनाने के तरह-तरह के बरतन, रंग व ब्रुश, कालीन व झाड़ू बिक रहे थे। कुछ स्टॉलों पर फल, सब्जी, मसाले, अनाज आदि बिक रहे थे।

भक्तप्रसाद स्वयं से ही बात करने लगा, "यार मेंढक, मैंने नहीं सोचा था कि खरीद-बिक्री के लिए इतनी सारी चीजें होती होंगी!"

"हां, हैं ना!" जगत बहादुर ने कहा। "अगर तुम नए स्टोरों में जाओगे तो इससे भी कुछ ज्यादा चीजें देखोगे, जिन्हें सुपर मार्केट कहते हैं।"

मेंढक और भरिया समृद्धि की देवी, अन्नपूर्णा देवी के तिमंजिले मंदिर के आगे से निकले। आगे चलकर उन्होंने काली की डरावने मुंह वाली मूर्ति के आगे सिर झुकाया, जिसे देखकर लगता था कि वह यात्रियों को उठाकर अपनी खोपड़ियों की माला में पिरो लेगी। वहां से वे काठमांडू दरबार के मंदिर और गलियारों के आगे से निकले, जो मंत्रों से गूंज रहे थे। जगत बहादुर ने बताया कि सदियों पहले नेपाल के शक्तिशाली राजा यहां राज्य करते थे।

शीघ्र ही यात्रा पूरी हो गई।

"अब तुम्हें जाना होगा", जगत बहादुर ने कहा। उसने एकमंजिले गणेश मंदिर के पास हांफते हुए अपनी टोकरी उतारी। गणेश यानी हाथी के सिर और मटके जैसे पेट वाले भगवान। "गणेश मंदिर कोई भी यात्रा शुरू करने के लिए शुभ स्थान है। अपने साहसिक अभियान में तुम अपना ध्यान रखना। नेपाल एक बड़ा देश है और तुम यहां आसानी से गुम हो सकते हो।" भरिया ने कहा।

मेंढक ने गणेश की मूर्ति के आगे जल्दी से सिर झुकाया। मूर्ति भी जैसे उसे देख रही थी। फिर वह पहाड़ से नीचे जाने वाले एक रास्ते पर चल पड़ा। अभी वह अंधेरे में ज्यादा आगे नहीं गया था कि कहीं से एक लंबा, तगड़ा कुत्ता आया और उसका रास्ता रोक लिया। वह झपटा और गुर्राने लगा। भक्तप्रसाद ने अपनी आदत के मुताबिक झटपट सोचा और एक ऊंची छलांग भरी। वह कुत्ते के ऊपर से होते हुए बिना आगे कुछ सोचे तेजी से ढलान पर फुदकता चला गया। वह एक गटर (नाली) में जा पहुंचा और छपाक से कूड़े-करकट पर जा गिरा। कूड़े-करकट ने गिरते समय गद्दी



का काम किया। उसे शरण तो मिली, भले ही वहां गंदगी थी। कुछ ही दूरी पर शिकारी पंजे उसके इंतजार में थे।

वह संकर कुत्ता वहीं इंतजार करता रहा, पूरी रात रोता व भौंकता रहा। लेकिन भक्तप्रसाद बहुत थक गया था, इसलिए उसने उधर कोई ध्यान नहीं दिया। बस की सवारी, भरिया की टोकरी की सवारी और एक अपरिचित शहरी कुत्ते का पीछा करना, ये सब किसी को भी थका सकते थे। भक्तप्रसाद का तो इचंगु से बाहर यह पहला दिन था। छोटी-सी नाली में अपने को सुरक्षित जानकर उसने कुछ देर सोने का निश्चय किया। "यह शहर खतरों से खाली नहीं है," मेंढक ने कहा। ऊंघते हुए उसने स्वयं को याद दिलाया, "कल मुझे तराई की ओर जाना होगा। वहां की जमीन समतल है और शायद वहां के कुत्ते कुछ शालीन हों।"



तराई की यात्रा

भक्तप्रसाद कच्ची नींद सोया। उसने सपने में अपने नाना बुद्धिप्रसाद भ्यागुतो को देखा, जो इचंगु और उसके आस-पास पूरी घाटी में सबसे बुद्धिमान उभयचर माना जाता था। बुद्धिप्रसाद गटर में आया और अपने नाती के कान में फुसफुसाया, "कांचा, तुम तराई जाना चाहते हो? तो नदी के रास्ते से जाना, क्योंकि सरकार की तरफ से मेंढकों का हवाई जहाज में जाना मना है। बस ड्राइवर भी ले जाने से इनकार कर देंगे। काठमांडू में रेलगाड़ी के नाम पर बस खिलौने जैसी एक गाड़ी है, जो मेला मैदान में गोल-गोल चक्कर काटती है। तुम्हारे पास तराई जाने का नदी के अलावा और कोई रास्ता नहीं है।"

सुबह के समय अचानक तेज बारिश होने लगी और छोटी नाली तेजी से आते पानी से भर गई। मेंढक ने जानबूझकर खुद को बहाव के साथ छोड़ दिया। जल्द ही वह वहां पहुंच गया, जहां नाली विष्णुमती नदी से जाकर मिलती थी। यह पवित्र नदी सूखे के महीनों में शहर के गंदे पानी और कूड़े-करकट से भरी रहती थी, मगर आज बरसात के पानी के बहाव से साफ हो गई थी।

भक्तप्रसाद को नदी किनारे एक जंग लगा टीन का डिब्बा मिला। उसने जांचा कि डिब्बे में कोई सूराख तो नहीं है और उसे पानी में धकेल दिया। जब डिब्बा पानी में तैरने लगा तो भक्तप्रसाद उस पर कूद गया। धीरे-धीरे टीन का डिब्बा और उसमें बैठा यात्री मेंढक विष्णुमती के प्रवाह में बह चले। हिलते-डुलते वे तेजी से आगे बढ़ने लगे।

कुछ देर के बाद विष्णुमती अपने से बड़ी बागमती नदी से जा मिली, जो बाईं तरफ से आती थी। संगम के आगे 'चोबर दर्रा' था। उस दर्रे से होकर बागमती काठमांडू घाटी से बाहर निकल गई। टीन के डिब्बे ने जब

दर्रे में प्रवेश किया तो वह डुबकियों, हिचकोलों और घूमने से चकरा गया। जब डिब्बा बड़े-बड़े पत्थरों पर होकर जाता और पानी तेजी से उछलता तो भक्तप्रसाद का सिर घूमने लगता। पर वह खुश था कि उसने एक मजबूत टीन के डिब्बे की नाव बनाई थी।

चोभार की तेज धारा के बाद पानी की यह यात्रा ज्यादा नहीं, पर थोड़ी आसान हो गई। मैदानी इलाका अभी भी काफी दूर था। पूरे दिन दूसरी नदियां आ-आकर बागमती में मिलती रहीं—पश्चिम से कुलेखानी, पूरब से कोकाझर और पूरब से ही मरीन भी। अब बागमती एक शक्तिशाली, झागवाली पानी की धारा में बदल गई थी। भक्तप्रसाद का सिर फिर से घूमने लगा था। उसने सोचा कुछ देर सो लेना ठीक रहेगा। वैसे भी शाम हो चुकी थी।

सुबह की चमकीली रोशनी से उसकी आंख खुली। उसके बहुत पहले ही बागमती नदी ने अपना पहाड़ी उग्र रूप छोड़ दिया था। अब नदी शांत व चौड़ी हो गई थी। पानी टीन के डिब्बे पर थपकी दे रहा था। नदी इतनी धीमी बह रही थी मानो ठहर गई हो। भक्तप्रसाद ने पूर्व दिशा में सूरज को क्षितिज से उगते देखा। आखिर वह तराई पहुंच गया था।

"वाह! मैं जीत गया!" भक्तप्रसाद खुशी से चिल्लाया, जिसकी ध्वनि उस विशाल नदी के चारों ओर फैल गई। वह जब भी बहुत खुश होता, ऐसे ही चिल्लाता था।





पूर्व-पश्चिम राजमार्ग के साथ-साथ

काठमांडू घाटी का भक्तप्रसाद भ्यागुतो तराई आ पहुंचा। पहाड़ी उभयचर या रेंगने वाले जंतु यहां शायद ही कभी आते थे। अपनी टीन के डिब्बे की हिलती-डुलती नाव में उसने कुछ देर आराम किया। सुबह की धूप ने उसके बदन की हर तरफ की त्वचा को गर्माहट से भर दिया। उसने अपना एक पांव नाव से बाहर निकाला और उससे नाव को खेते हुए कीचड़वाले किनारे तक ले गया। एक छोटा पक्षी कंकड़ों में चोंच मारकर अपने नाश्ते के लिए कीड़े ढूंढ़ रहा था। मेंढक उसके पास जाकर रुक गया। पक्षी ने गरदन उठाई और भक्तप्रसाद को अपना परिचय दिया। "हैलो! मैं प्रचंड पक्षी हूं। तुम इस टीन के छोटे-से डिब्बे में बैठ क्या कर रहे हो?"

भक्तप्रसाद हैरान था कि तराई का पक्षी भी वही भाषा बोलता है जो पहाड़ी मेंढक बोलता है। उसने कहा, "हां-हां, हैलो, सब मुझे भक्ते कहते हैं, जो भक्तप्रसाद का ही संक्षेप है। मैं काठमांडू से यहां आया हूं, क्योंकि मैं मैदानी इलाका देखना चाहता हूं। मुझे बहुत भूख भी लगी है।"

"ये खाकर देखो," प्रचंड ने कहा और अपनी चोंच से कुछ कीड़े पानी में निकालकर मेंढक को दिए।

"हूं, अच्छे हैं," भक्तप्रसाद ने कहा। वह पक्षी को नाराज नहीं करना चाहता था। जिंदा कीड़ों का स्वाद कड़वा था और वे उसके मुंह में जाकर चिपक गए थे। उसने जल्दी से कीड़ों को निगला और दूसरी बात करने लगा। "क्या तुम मुझे बता सकते हो कि तराई की यात्रा कैसे करूं?"

प्रचंड ने बताया, "तुम पूर्व-पश्चिम राजमार्ग पर चले जाओ। वहां पुल से होकर तुम शहर के किसी भी कोने में पूर्व या पश्चिम की तरफ जा सकते हो। वैसे, मैं कभी बहुत दूर तक नहीं गया हूं।" पक्षी ने मेंढक से कहा, "इस किनारे पर कीड़े समाप्त हो चुके हैं इसलिए मैं भी अब नदी



की दूसरी तरफ जाऊंगा।"

यह कहने के साथ ही पक्षी ने अपनी चोंच को विशेष तरीके से झुकाकर मेंढक से विदा ली। वह पानी पर तेजी से उड़ने लगा। उसके सलेटी और सफेद पंख सूरज की रोशनी में चमक रहे थे। मेंढक पक्षी के बताए रास्ते पर फुदकने लगा और उसने बागमती नदी के आर-पार बने पुल को देखा।

ढलान पर चढ़ते हुए वह एकाएक पक्की समतल जमीन पर बनी सड़क पर आ गया। भक्तप्रसाद फुदककर सड़क की दूसरी ओर जाने ही वाला था कि उसका सामना एक बड़े सिरवाले बैल से हो गया। उसके नथुने फूले हुए थे, आंखें बाहर को निकली हुई थीं, बड़े-से सींग थे और जीभ से लार टपक रही थी।

"तुलसीराम मेरा नाम है और गाड़ी खींचना मेरा काम है," बैल ने अपनी भारी आवाज में कहा। "जानते हो, बिना देखे-भाले सड़क पार करने से क्या होता? तुम्हारा कचूमर निकल जाता। ये ट्रक और बस तुम्हारे लिए नहीं रुकने वाले थे। न ही वे तुमको ये सब समझाने वाले थे। बताओ तो, कहां से आए हो?"

"मेरी जान बचाने के लिए धन्यवाद, दयालु बैल!" भक्तप्रसाद ने चहककर कहा। उसी समय दो बसें शोर मचाती पुल पर से निकल गईं। बसें पूर्व की ओर अपनी मंजिल की तरफ दौड़ी जा रही थीं।

"सचमुच, ये बसें मेरे लिए नहीं रुकतीं," भक्तप्रसाद ने बैल से सहमति जताई, जब उसने बसों को क्षितिज तक जाकर लुप्त होते देखा।

भक्तप्रसाद ने बैल को अपना नेपाल घूमने का इरादा बताया। यह भी कि वह अपनी यात्रा तराई से शुरू करना चाहता है। तुलसीराम बैल ने उसकी मदद की और एक अनुभवी गाइड की तरह अपनी भारी आवाज में कहा, "हां भई, नेपाल-तराई! सचमुच देखने वाली जगह है। मुझे खुशी है कि तुम जैसा पहाड़ का कोई प्राणी इसे देखना चाहता है। हमारे यहां की जमीन समतल है। यहां की भौगोलिक बनावट ऐसी नहीं है कि ध्यान इधर-उधर भटके। इसलिए मैदान के लोग बहुत चिंतनशील होते हैं। मैं तुम्हारा परिचय तराई की होशियार बिल्लियों, गायों, कुत्तों, कबूतरों और लोगों से करवाता हूं। बिल्ली की म्याऊं, बत्तख का नाच, यहां के लोगों के गीत और संगीत, तराई में सब अधिक मधुर होता है। जनाब! तराई का जंगल तो अपने आप में अनूठा है। तुम्हारे पहाड़ों से किसी तरह कम नहीं।"

भक्तप्रसाद ने उत्साहपूर्वक बीच में टोका, "बैल जी, मैंने बिल्लियां, गाय और लोग तो बहुत देखे हैं, पर जंगल नहीं देखा। वह कैसा होता है?"

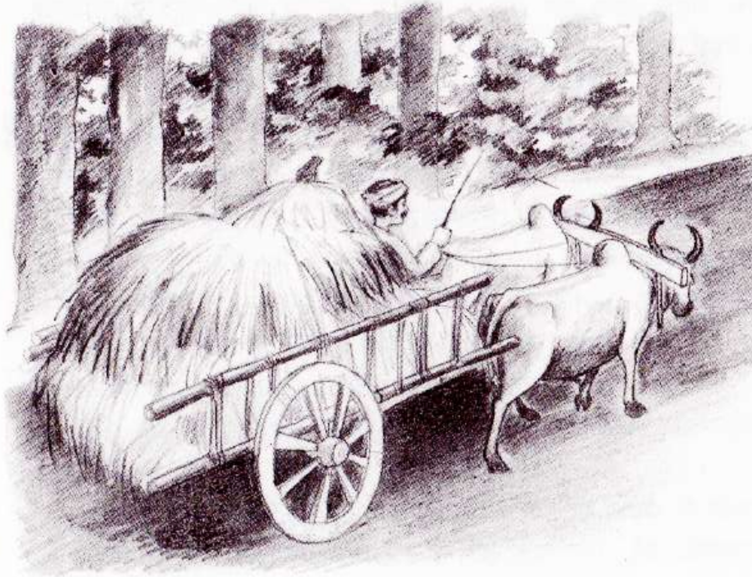
भक्तप्रसाद इचंगु के धान के खेतों का प्राणी था। वह केवल नागार्जुन

जंगल के बारे में जानता था, जिसे 'रानीवन' भी कहते हैं। उसके चारों ओर ऊंची दीवार बनी थी, जिसे खूब ताकतवर मेंढक भी पार नहीं कर सकता था। इसी कारण भक्तप्रसाद पहले कभी जंगल में नहीं गया था।

बुजुर्ग तुलसीराम ने बताया कि जंगल वह स्थान होता है जहां पेड़, झाड़ियां, ऊंची घास और इससे भी ज्यादा जहां जंगली जानवर और पक्षी होते हैं। "अब बताओ मेंढक, क्या तुम रॉयल चितवन नेशनल पार्क देखना चाहते हो? वहां ऐसे जंगली जानवर हैं जो तुम्हें नेपाल या दुनिया में और कहीं नहीं मिलेंगे!"

तुलसीराम ने भक्तप्रसाद को अपनी बैलगाड़ी पर रखे पुआल पर कूद जाने को कहा। बैल और मेंढक पश्चिम की ओर पूर्व-पश्चिम राजमार्ग पर चल पड़े। जहां तक नजर जाती थी, रास्ता एकदम सीधा था।

"जानते हो इस समय हमें कोई देखेगा तो कहेगा बैलमेंढक," कुछ दूर



जाने पर तुलसीराम ने कहा। तुलसीराम मजाक कर रहा था यह बात भक्तप्रसाद जरा देर में समझ सका। जो दिखता है सब सच नहीं होता है। यह रूखा-सा दिखने वाला बैल मजाकिया था।

एक रात और एक दिन की धीमी यात्रा के बाद वे दोनों 'पथलैया' चौराहे पर पहुंचे। बैल ने कहा, "यहां से मुझे दक्षिण की ओर मुड़ना है, जबकि तुम्हें पहले उत्तर दिशा में फिर पश्चिम दिशा में जाना है। भरतपुर तक समतल रास्ते पर चलते जाओ और वहां से बायें मुड़ जाना।" तुलसीराम ने जरा सोचकर बताया, "याद रखना, वे जंगली जानवर हैं, जो हम घरेलू जानवरों से एकदम अलग हैं। सावधान रहना।"



चितवन वनस्थली

दो दिन और तीन रात तक मुख्य मार्ग पर उछलते हुए भक्तप्रसाद एक दिन सुबह-सुबह भरतपुर पहुंच गया। उसने एक हवाई जहाज को अपने सिर के ऊपर से तेजी से जाते और सड़क के किनारे हवाई पट्टी पर उतरते हुए देखा था इसलिए वह यह बात जानता था। बताए अनुसार वह दक्षिण दिशा में बायें मुड़ा। कुछ घंटों बाद मेंढक ने एक बोर्ड पर लिखा देखा, 'रॉयल चितवन नेशनल पार्क'। वहां बांस के एक नाके पर खाकी वरदी पहने एक आदमी रखवाली कर रहा था। वह जंगल की सुरक्षा करने व जानवरों की चोरी करने वालों से उन्हें बचाने वाले कर्मचारियों में से एक था।

उसने मेंढक को संदेहपूर्वक देखा। भक्तप्रसाद ने साहस बटोरा और कर्मचारी के देखते-देखते बेफ़िक्री से नाके के पार कूद गया। उसने ऐसे दिखाया कि वह इसी जंगल का मेंढक है और पार्क के बाहर घूम-फिरकर वापस घर लौटा है। वह बाल-बाल बच गया।

"अरे शेरबहादुर, जरा इधर आना।" कर्मचारी ने अपने साथी को बुलाया। "इस मेंढक को तो देखो। यह हमारे यहां का नहीं लगता है। पार्क की नियम पुस्तिका में ऐसा कोई उभयचर प्राणी नहीं है।"

शेरबहादुर पास के एक तंबू से बाहर निकला और उसने मेंढक को गौर से देखा, "ऐसा है कि मेंढक किस जाति का है यह बताना बहुत मुश्किल है। मेंढक की अनेक जातियां हैं।"

"अभी तक यह बाहर था, अब भीतर आ रहा है।"

"गैंडे और सूअर भी तो भोजन की खोज में पार्क से बाहर जाते रहते हैं। मेंढक भी ऐसा ही करते होंगे। इसे जाने दो।"

शेरबहादुर ने जब तक अपना सुझाव दिया भक्तप्रसाद जंगल के भीतर दूर पहुंच गया था। वह एक सीधे पेड़ के पीछे रुक गया। पेड़ आसमान

को छू रहा था। उसने चैन की सांस ली। "बच गया!"

भक्तप्रसाद ने ऊपर की ओर देखा तो पाया कि वह सेमल के पेड़ की घनी छांव के नीचे था। पास की झाड़ी से "टर्र-टर्र" की आवाज सुनाई दी। यह एक उभयचर था, जिसने कहा, "हैलो, पहाड़ी भाई, मैं तराई का टोड हूं। मैंने तुम्हें उन कर्मचारियों के पास देखा था। तुम तो सचमुच एक अभिनेता हो!"

तराई के टोड ने अपना हाथ बाहर निकाला और बोला, "प्राणी-वैज्ञानिक मुझे 'बरो मेलानोस्टिक्टस' के नाम से जानते हैं। मुझे काली रीढ़ वाला टोड भी कहते हैं।"

भक्तप्रसाद ने भी हाथ हिलाकर उत्तर दिया, "मैं काठमांडू का 'राना टिगरिना' हूं।" तराई का टोड दिखने में बड़ा, हट्टा-कट्टा और गहरे रंग का था। उसकी पीठ पर एक काली रेखा थी। इसी से उसका नाम 'काली रीढ़ वाला' पड़ गया था।

"चितवन के निवासियों ने आज तक कितने ही देसी-विदेशी पर्यटक देखे हैं पर पहली बार कोई जानवर पर्यटक आया है," तराई के टोड ने कहा। "यह खुशी का अवसर है और हमें उत्सव मनाना चाहिए," उसने कहा।

तराई के टोड ने यह बात सबको बता दी और उस दोपहर चितवन के निवासी काठमांडू से आए मेहमान से मिलने के लिए, राप्ती नदी के पास, जंगल में, खुले मैदान में इकट्ठे हुए। हिरणों के एक झुंड ने उत्साहपूर्वक मेंढक का स्वागत किया, उन्होंने उसे अपने गीले नथुनों से छुआ। यह 'मगर' नामक घड़ियाल के 'हाय' कहने से तो कम दहलाने वाला था जो उसने अपने बड़े-बड़े दांतों समेत जम्हाई लेने के अंदाज में कही।

सेमल के पेड़ पर बैठे लंगूरों के एक जोड़े ने नीचे उतरना पसंद नहीं किया पर वहीं से 'खों-खों' कर स्वागत किया और खेल-खेल में पेड़ पर लगे रुई में लिपटे सेमल के बीज फेंके। एक नखरीला मोर अपने रंग-बिरंगे पंखों को फैलाता नीचे उतरा। सब जानते थे कि वह हमेशा दिखावा करता है। इसलिए सबने उसे अनदेखा कर दिया। फिर भी उसने अपना राग अलापना शुरू कर दिया--'ना...ना...न...,' इससे सब परेशान हो उठे।

तभी एक अजीब-सा प्राणी, किसी झोंपड़ी के छप्पर जितना बड़ा,



जिसके दोनों तरफ सलेटी रंग की खाल लटक रही थी, छप-छप करता आया और उसने थूथन से बाहर निकली अपनी सींग हिलाई। एक सींग वाली उस मादा गैंडे ने अपनी छोटी-सी आंख भक्तप्रसाद की ओर झपकाई। उसने अपने बच्चे का परिचय दिया। वह उसके भारी-भरकम शरीर के पीछे छिपा था।

"मेरे बेटे एकराज से मिलो। यह बहुत शर्मीला है। एकराज, जरा श्रीमान मेंढक को बता दो कि तुम एक सींग वाले राइनो हो या दो सींग वाले?"

"एक सींग वाला," एक हल्की-सी आवाज पीछे से आई।

"और दो सींग वाले राइनो कहां पाए जाते हैं?"

"अफ्रीका में," एकराज ने अब हिम्मत से जवाब दिया।

शीघ्र ही मेंढक और बालक राइनो में दोस्ती हो गई। ऊंची घास, जिसे हाथी घास भी कहते हैं, के बीच में लुका-छिपी का खेल शुरू हो गया।

ज्यों ही काली-पीली धारियों वाली आकृति झाड़ियों के बीच से आती दिखाई दी, जंगल के मैदान में होता शोर-शराबा एकदम शांत हो गया। ऐसा लगा कि यह हिंसक जानवर अनचाहे वहां आ गया था।

"आपने यहां आकर बड़ी कृपा की है शाहे बंगाल!" तराई के टोड ने खुशी से चहकते हुए कहा। वह बाघिन के वहां आने से खुश था। चितवन की एकछत्र साम्राज्ञी शाहे बंगाल प्रायः जंगल में किसी से मेलजोल नहीं रखती थी, किंतु वह भी इस मेंढक से मिलने को उत्सुक थी, जो काठमांडू से यात्रा करके यहां, इस चितवन वनस्थली तक पहुंचा था।

आपसी परिचय के बाद शाहे बंगाल ने बातचीत शुरू की, "तुम बड़े भाग्यशाली हो, मेंढक। जहां चाहे जा सकते हो।" उसकी आवाज में कोमलता थी।

भक्तप्रसाद ने गौर किया कि इस चतुर और बुजुर्ग बिल्ली की बात सुनने के लिए सब के साथ मोर भी शांत हो गया था। शाहे बंगाल ने कहना शुरू किया, "एक समय था, जब इस जंगल ने पूरे चितवन को एक सघन कालीन की तरह ढक रखा था। लोग इसे 'चार कोसी झाड़ी' के नाम से जानते थे। उनके लिए यह घना जंगल हिंसक जानवरों के अलावा राक्षसों और प्रेतात्माओं से भी भरा था। आज लोग पहाड़ी इलाकों से यहां

आने लगे हैं और उन्होंने हमारा प्राचीन व अमूल्य निवास छीन लिया है। पहले हम जंगल के आजाद प्राणी थे। इन लोगों ने जंगली प्रदेश को काट डाला है। खेत-खलिहान बना डाले हैं और हमें यहां कैद कर दिया है।"

"लेकिन, शाहे बंगाल, यह चितवन जंगल तो अभी भी कितना बड़ा है," भक्तप्रसाद ने हस्तक्षेप किया।

"यह बड़ा और सुरक्षित है पर केवल मेंढकों और टोडों के लिए, लेकिन हम जैसे बड़े प्राणियों को भोजन की खोज में इधर-उधर भटकना पड़ता है। शेर और गैंडों को जीने के लिए बड़ी जगह की जरूरत होती है। यह जो बचा है, हमारे लिए पर्याप्त नहीं है।"

जंगल की रानी की भावुक व बुद्धि वाली बातों ने सबको मुग्ध कर दिया। अंत में रानी ने कहा, "जंगल के दूर तक फैले स्थान समाप्त हो चुके हैं और दूसरे राष्ट्रीय पार्क और सुरक्षित स्थान इतनी दूर हैं कि हम बस्तियों से गुजरे बिना वहां नहीं जा सकते हैं। भक्त, तुम इच्छा होने पर काठमांडू से यहां आ सकते हो पर मैं चाहते हुए भी वहां नहीं आ सकती हूं। हमें यहां पर कैद कर दिया गया है।"



जोशीली और भावभीनी पार्टी

शाहे बंगाल से यह जानकर कि चितवन कभी सघन और लुभावना वन था सब उदास हो गए। भक्ते भी उदास था। कुछ पल के लिए सब भूल गए कि वहां पार्टी होने वाली थी। एकाएक बादल गरज उठे।

आसमान में बिजली चमकने लगी। पलभर में जंगल का वह मैदान बिजली की कड़क से दिल को दहलाने लगा। तेज हवाएं कहीं से आईं और पूरे जंगल को झकझोर दिया, सेमल के पेड़ की शाखाएं झुक गईं। काले बादल सिर पर मंडराने लगे। जल्दी ही बारिश शुरू हो गई। पहले बड़ी-बड़ी बूंदें पत्तों पर टपकीं, फिर गरज के साथ मूसलाधार वर्षा होने लगी जिसमें कड़कती बिजली भी दब गई।

मेंढक को बरसात से ज्यादा अच्छा कुछ नहीं लगता और भक्तप्रसाद ने इतनी तेज बारिश पहले कभी नहीं देखी थी। इस जंगल के अनुभव तो सचमुच घर जाकर सबको बताने लायक हैं। सभी जानवर वर्षा का आनंद उठा रहे थे। मगर ने अपना जबड़ा खोलकर ऊपर उठा रखा था कि बूंदें सीधी उसके तालू पर गिरें और गुदगुदा सकें। बंदर पेड़ के तनों से नीचे फिसलकर अंगूर की बेलों पर झूल रहे थे। तोते, कछुए, बत्तख और काले कौए चीख-पुकार करते जंगली मैदान में जहां-तहां उड़ रहे थे। उनके पंख हवा और पानी से अस्त-व्यस्त हो गए थे। शाहे बंगाल ने प्यार से भक्तप्रसाद को अपनी पीठ पर फुदकने के लिए आमंत्रित किया और फिर दोनों पानी भरे मैदान में चारों तरफ उछल-कूद करते रहे।

भक्तप्रसाद को इतना आनंद तो कभी अपने मेंढक साथियों के साथ खेलने में भी नहीं आया था। आज जरा इसकी शान तो देखो! चितवन के शेर की सवारी कर रहा है। साथ में इतने सारे नए मित्र! उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था।

"हा-हा-हा! मैं हीरो हूं!" भक्तप्रसाद ने घोषणा की।

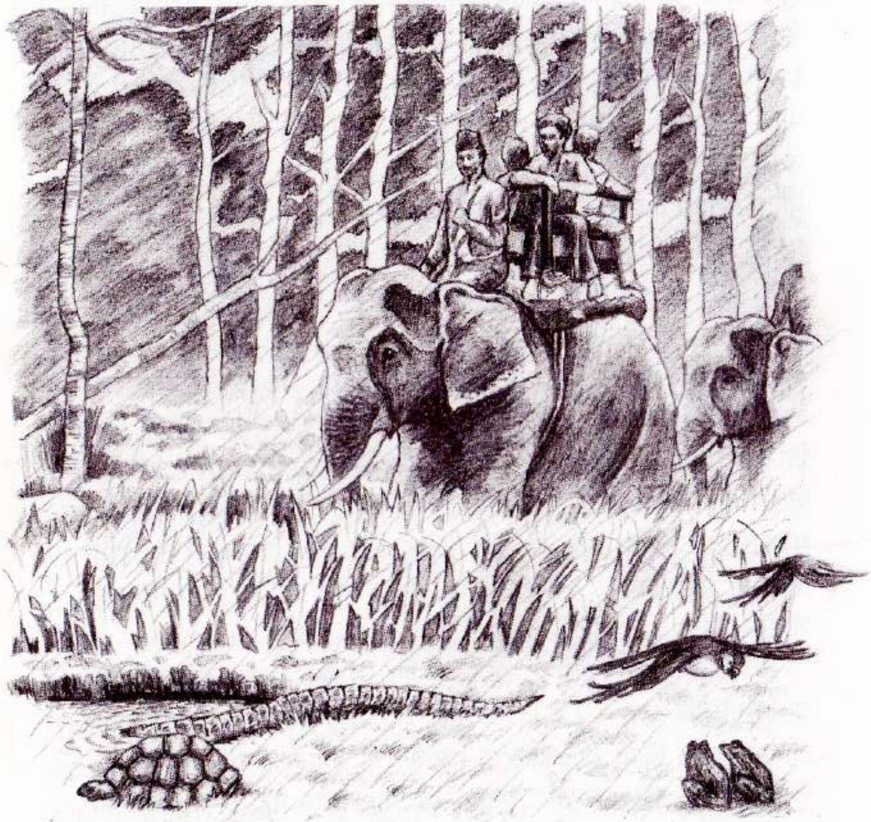
आंधी-तूफान जितनी तेजी से आया था उतनी ही जल्दी थम गया। कुछ देर के लिए जंगल एकदम शांत हो गया। तभी ऊंचाई पर बैठे तोते डर से चीख उठे, "हाथी आ रहे हैं! हाथी आ रहे हैं!" भक्तप्रसाद ने हैरानी से चारों तरफ देखा। सभी जानवर जल्दी-जल्दी झाड़-झंखाड़ों के पीछे और पानी में घुस रहे थे। 'मगर' घिसटता हुआ नदी में पहुंचा और उसने लंबी सांस ली। हमलावरों को पीछे छोड़ उसने पानी के तल में गोता लगाया। शाहे बंगाल ने पीछे मुड़कर देखा और खेदपूर्वक कहा, "क्षमा करें," और मेंढक को अपनी पीठ से झटक दिया। वह गैंडे के नरम गोबर पर जा गिरा। शेरनी ऊंची घास के पीछे लुप्त हो गई। पार्टी समाप्त हो गई।

तभी भद-भद की आवाज करते हाथी दिखाई दिए। एक कतार में शायद पांच हाथी थे। लेकिन यह क्या? ये जंगली हाथी नहीं थे जैसा कि भक्तप्रसाद ने सोचा था। तराई वाला टोड उसके पास ही था। इस जुलूस के निकल जाने के बाद उसने बताया, "ये पालतू हाथी हैं। मनुष्यों द्वारा सधाए गए। ये हाथी मनुष्यों के इशारों पर चलते हैं। हाथी की पीठ पर हौदे पर बैठे लोग सैलानी हैं। ये चितवन में हमारा वन्य जीवन देखने आते हैं।"

मेंढक और टोड ने गैंडे के गोबर के पीछे से झांका। साफ पता लग रहा था कि सैलानी खुश नहीं थे। उन लोगों ने यहां आने के लिए कितना समय और धन खर्च किया था। फिर भी चितवन के जीव-जंतु नहीं दिखाई पड़े। कितनी हैरानी की बात थी, झाड़ियों में चारों ओर गैंडे, शेर, भालू और जंगली सूअर थे पर उन लोगों को इसका कोई अनुमान नहीं था! उनके कैमरे और दूरबीनें बेकार ही गले से लटक रही थीं।

"ये लोग ढेर सारा धन खर्च करके चितवन बस पेड़-पौधे देखने आए थे!" भक्तप्रसाद ने हैरानी से कहा। उसे यह सोचकर बड़ी हंसी आ रही थी। तराई के टोड ने हां में सिर हिलाया। उसने अपनी हंसी रोकने की कोशिश की। हंसी के मारे उसका पेट अंदर-बाहर हो रहा था।

पालतू हाथी भी सैलानियों की तरह ही नाखुश लग रहे थे। धीरे-धीरे



हाथी भद-भद करते आंखों से ओझल हो गए। जंगल के उस मैदान में चारों तरफ जानवरों की खी...खी...सुनाई दे रही थी। वे सब अपनी हंसी रोकने की कोशिश कर रहे थे।

"पर्यटकों को चितवन एकदम बेकार लगता होगा, है न?" भक्तप्रसाद ने कहा। उसे टोड से कोई जवाब नहीं मिला तो उसने पलटकर देखा। टोड

कहीं नहीं दिखा। भक्तप्रसाद को चिंता हुई। वह इधर-उधर खोजने लगा। उसे 'मगर' घड़ियाल नजर आया। वह अपने बड़े-बड़े जबड़ों से खाने की कोई छोटी चीज चबा रहा था। 'मगर' नदी के किनारे पर खिसक आया।

पानी के धीमे बहाव में उतरने से पहले उसने डरे हुए भक्तप्रसाद को मुड़कर देखा और बोला, "ऐ काठमांडू के मेंढक, तुम यह मत भूलना कि यह जंगल है और यहां जंगल का कानून चलता है। तुम्हारे मतलब की जगह नहीं है जंगल। तुम्हारे जैसे गांव के मेंढक के लिए पोखरा ठीक रहेगा, वहीं जाकर देखो।"

फुफनाता और रेंगता घड़ियाल वहां से चला गया। भयभीत भक्तप्रसाद भी चितवन राष्ट्रीय पार्क से तुरंत फुदककर बाहर निकल गया।



ट्रक से उत्तर की सैर

"पोखरा जाओ," मगर ने कहा था। मेंढक ने वहीं जाने का निश्चय किया। शायद वह जगह इतनी खतरनाक न हो। चितवन में तो एक पल नए-नए दोस्त आपस में नाच-गा रहे हैं और दूसरे पल किसी घड़ियाल का शिकार बन गए। पोखरा भी काठमांडू की तरह एक घाटी है। मेंढक यह बात जानता था। केवल उनकी बनावट में अंतर है। यह घाटी काठमांडू से ऊंचाई में कम है। यह चितवन के उत्तर-पश्चिम में स्थित है–'अन्नपूर्णा हिमाल' की बर्फीली चोटियों के ठीक नीचे।

भक्तप्रसाद को अब यात्रा का खूब अभ्यास हो गया था। उसने सोचा कि वह किसी ट्रक में छिपकर पोखरा जाएगा। इसके लिए उसे पहले नारायणघाट जाना होगा। नारायणी नदी के किनारे बसे शोर-गुल और भीड़-भाड़वाले इस शहर में नेपाल के सभी मुख्य राजमार्ग आकर मिलते हैं। इसलिए वहां पोखरा जाने के लिए ट्रकों की कतार लगी होगी। नारायणघाट तक जाने के लिए भक्तप्रसाद यात्रियों से भरी एक जीप की सीट के नीचे घुस गया।

जीप जब नारायणघाट की व्यस्त सड़क के बस डिपो पहुंची तो अंधेरा हो चुका था। भारी-भरकम 'रात्रि बसों' के तेज हॉर्न चीख-पुकार मचा रहे थे। बसें अंदर-बाहर हो रही थीं। सवेरे तक ये बसें अपने यात्रियों को दूर पश्चिम में नेपालगंज या पूर्वी बॉर्डर पर काकरभिट्टा पहुंचा देने वाली थीं। बाजार में फैली बत्तियों की रोशनी और निऑन होर्डिंगों के कारण ऐसा लग रहा था मानो दिन निकला हो। तेज रफ्तार नारायणघाट की इस जगह व काठमांडू स्थित असन के पटरी बाजार में बहुत अंतर था। भक्तप्रसाद ने देखा कि नारायणघाट के इस बाजार में कुछ भी खरीदा जा सकता था। मोटरसाइकिल, पहनने के कपड़े, बिजली

का सामान, फल, सब्जी और भी न जाने क्या-क्या!

'यहां के मुकाबले असन तो एकदम बेजान है। यह बात अपने नाना बुद्धिप्रसाद को बताने का इंतजार कैसे करूं?' मेंढक मन ही मन सोच रहा था। अब उसे पोखरा जाने के लिए कुछ करना था। भक्तप्रसाद एक नाली के रास्ते आगे बढ़ा ताकि ऊपर चलते ट्रैफिक में फंसकर कुचल न जाए। वह एक जगह जाकर रुक गया, जहां ट्रक आकर खड़े होते थे। यह एक ढाबा था और इसके ग्राहक ज्यादातर ट्रक ड्राइवर थे।

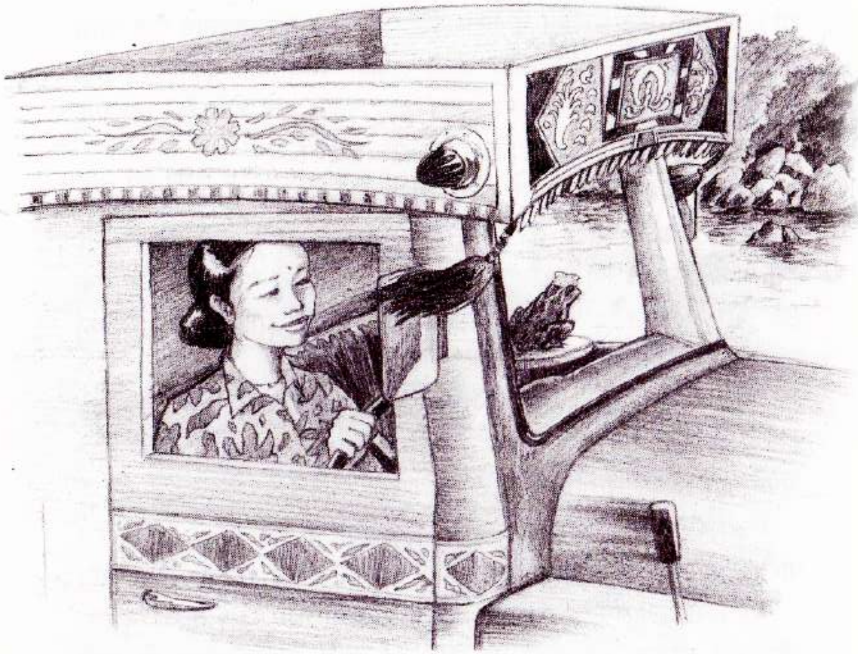
भक्तप्रसाद ढाबे के भीतर गया और एक बेंच के नीचे छिप गया। वह सभी आने वालों की बातें सुन सकता था। वहां आपस में हंसी-मजाक करते और सुस्ताते ड्राइवरों की बातों से पता लगा कि एक ट्रक पोखरा जाने वाला था, जिसकी ड्राइवर एक महिला थी। उसका नाम फुलमाया था।

"फुलमाया नेपाल की पहली महिला ट्रक ड्राइवर है। भारत जैसे बड़े देश में भी कोई महिला ड्राइवर नहीं है, एक भी नहीं।" एक नौजवान वेटर अपने ग्राहक को बता रहा था।

"अरे, बस अब चुप भी करो!" फुलमाया ने कहा। वह अपने इस परिचय से तंग आ चुकी थी। कितनी बार यही सब सुनना पड़ता था।

भक्तप्रसाद फुलमाया की एक झलक पाने के लिए जरा बाहर निकला और इस हरकत की वजह से वेटर की रबर वाली चप्पल के नीचे आते-आते बचा। उसने देखा, ड्राइवर फुलमाया की त्वचा सुनहरे भूरे रंग की थी। बड़ा-सा माथा, गोल मटोल नाक, नाक में नथनी थी, जिसे फुली कहते हैं। उसने अपने लंबे काले बालों का जूड़ा बनाया और चलने को तैयार हो गई।

बालों को ठीक करते हुए उसने स्नेहपूर्वक वेटर से कहा, "ये लो, अब मैं चलती हूं," उसने मेज पर टिप में काफी पैसे छोड़ दिए। वह बाहर आई, वहां पहले से ही तैयार माल से लदा टाटा ट्रक खड़ा था। ट्रक के चारों ओर घूमकर उसने टायरों को किक किया। फिर देखा कि टैंक डीजल से पूरा भरा है या नहीं। बैटरी और इंजन ऑयल की भी जांच करके तसल्ली की। फुलमाया ने उचककर ड्राइवर सीट का दरवाजा खोला।



भक्तप्रसाद तैयार था। वह ऊपर उछला और एक ही छलांग में ड्राइवर सीट पर जा बैठा। फुलमाया डर गई। वह उसकी आंखों में आंखें डालकर बोला, "तुम नेपाल की पहली महिला ट्रक ड्राइवर हो और मैं पहला सैलानी मेंढक हूं। तुम्हें मेरी सहायता करनी होगी। क्या तुम मुझे पोखरा तक अपने ट्रक में बैठाकर ले चलोगी?"

एक मेंढक को इस तरह बातें करते देख फुलमाया हैरान थी। आते-जाते रास्ते में अजीब घटनाएं होती रहती थीं। उसे इन सब की आदत थी। यही तो एक अच्छे ट्रक ड्राइवर की पहचान है।

"कितनी मजे की बात है! बातूनी और चतुर एक मेंढक आज ट्रक में सवार है। मैं तुम्हें पोखरा जरूर ले चलूंगी!" फुलमाया ने गर्मजोशी से उत्तर दिया। "पर नन्हे मियां, एक बात है, रात के समय ट्रक में बहुत सरदी लगती है! अच्छा होगा तुम कुछ पहन लो।"

भक्तप्रसाद ने कहा, "मैंने जिंदगी में कभी कोई सिला हुआ कपड़ा नहीं पहना है!" फुलमाया बोली, "अरे भई, कभी तो पहल करनी पड़ती है। चलो, तुम्हारे लिए कुछ खरीद लेते हैं।" मेंढक और ट्रक ड्राइवर नारायणघाट की कुछ दूकानों पर गए लेकिन काफी देर हो चुकी थी। अधिकतर दूकानें बंद हो चुकी थीं। एक-दो दूकानें ही खुली थीं जहां केवल टोपियां बिकती थीं। "ठीक है, टोपी लेते हैं। तुम्हारे सिर पर एकदम ठीक जंचेगी।" फुलमाया ने कहा। फुलमाया ने हरी और लाल पट्टियों वाली एक टोपी छांट ली, टोपी के दाम चुकाए और उसे भक्तप्रसाद के गोल-मटोल सिर पर पहना दिया। टोपी मेंढक की आंखों तक आ रही थी। फुलमाया उसे परेशान देख हंसने लगी। बेचारा मेंढक, उसने पहली बार कुछ पहना था।

दोनों वापस ट्रक पर गए। ड्राइवर फुलमाया स्टीयरिंग व्हील के पीछे जा बैठी और उसने मजबूत हाथों से भक्तप्रसाद को उठाया और 'कॉकपिट' के उस तरफ रख दिया जहां लोग बैठते थे। उसने नीचे से एक स्टूल निकाला और सीट के ऊपर रख दिया ताकि मेंढक 'विंडस्क्रीन' और साथ वाली खिड़की के बाहर देख सके।



नदियां और पहाड़

मलंगवा शहर के ट्रक ड्राइवरों को आस-पास के इलाकों की पूरी जानकारी है। नारायणघाट से चलने के बाद फुलमाया पूरे रास्ते मेंढक को बताती गई। यह मुख्य मार्ग हमें नारायणी नदी के साथ-साथ ऊपर की ओर वहां तक ले जाता है, जहां काली गंडकी नदी बायीं ओर से आती है। यहां से आगे मुख्य धारा त्रिशूली गंगा कहलाती है। फिर सेती नदी जहां आकर मिलती है, वहां इनका संगम होता है। यहां मर्स्यांगदी नदी भी त्रिशूली से आ मिलती है। सड़क बड़े-से झूला पुल के पार उतर जाती है। "यह मगलिंग है," फुलमाया ने बताया।

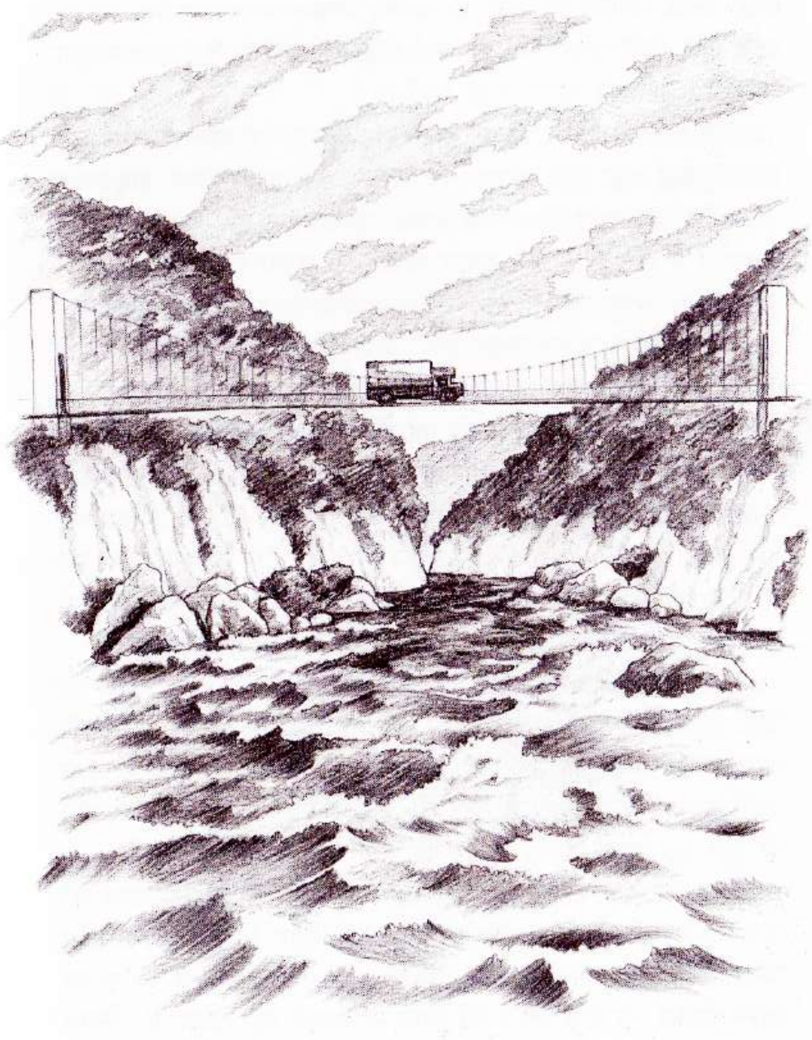
फुलमाया को लगा कि नदियों के इस लंबे-चौड़े वर्णन को समझना भक्तप्रसाद के लिए मुश्किल है तो उसने गाना शुरू कर दिया। वह जोर-जोर से गा रही थी ताकि इंजन की तेज आवाज में सुनाई पड़ सके। सभी गाने उन नदियों के बारे में थे जिन्हें अभी पार किया था। "मर्स्यांगदी नदी गुफा को पार करती है और बंदीपुर की लंबी चढ़ाई पर चढ़ती है।" जब फुलमाया यह गाना गा रही थी तो भक्तप्रसाद को झपकी आ गई। यहां पहाड़ी के ऊपर एक पुरानी मालचौकी थी जो कि अब मुख्य मार्ग बन जाने से अलग पड़ गई है।

पूरब दिशा से जब सूर्य की किरणें बर्फीली चोटियों पर पड़ीं तब मेंढक की आंखें खुलीं। ट्रक पोखरा घाटी में प्रवेश कर चुका था और अब पोखरा शहर की ओर बढ़ रहा था। यहां के प्राकृतिक दृश्य मन को मोहने वाले थे।

भक्तप्रसाद गणेश हिमाल और लांगतांग हिमाल की चोटियों के बारे में जानता था। उसके गांव इचंगु की एक पहाड़ी से हिमाल दिखाई देते थे। लेकिन यहां से देखने पर दृश्य एकदम भिन्न था। बर्फीली पहाड़ियां पोखरा

घाटी को छूती हुई दिखाई देती थीं। उन्हें गौर से देखने के लिए पीछे की ओर घूमना पड़ता था।

फुलमाया को इलाके की अच्छी जानकारी थी। वह एक अच्छी ट्रक



ड्राइवर थी। वह एक अच्छी पर्वतारोही भी थी। वह पर्वतों के विषय में भी वैसे ही जानती थी जैसे नदियों और कार्बोरेटर के बारे में। "जिस पहाड़ी पर अभी-अभी सूरज उगा था वह लमजंग हिमाल है," फुलमाया ने पूरे विश्वास से कहा। "बायीं ओर दूसरी पहाड़ी अन्नपूर्णा द्वितीय है। वह देखो, काला ग्रेनाइट का रुख जो पहाड़ी शिखर तक जाता है। वहां से बायीं ओर फैली पहाड़ी जिसकी कोई विशेष चोटी नहीं है, वह अन्नपूर्णा प्रथम है। यहां की सबसे ऊंची चोटी।"

'क्या इसका काम नामों की सूची तैयार करना है!' भक्तप्रसाद ने मन ही मन सोचा। वह बहुत परेशान था। पहले इतनी सारी नदियां और उनके नाम, और अब पहाड़ और उनके नाम। "भक्ते, देखो, वह 'माछापुछे' है," फुलमाया ने सामने की ओर इशारा किया और बताया। तब मेंढक ने सिर उठाकर देखा। यह नाम नेपाल में स्कूल जाने वाला हर बच्चा जानता था।

भक्तप्रसाद ने उत्सुकतावश दायीं ओर खिड़की के बाहर देखा। उसे एक सीधा नुकीला पिरामिड जैसा कुछ नजर आया जिस पर बरफ कम और पत्थर ज्यादा थे। जब उसने पहाड़ों को देखने के लिए ऊपर, और ऊपर गरदन उठाई तो उसकी टोपी नीचे गिर गई। 'अच्छा, अगर यह माछापुछे है तो इसकी पूंछ कहां है?' बचपन में उसकी भी पूंछ थी इसलिए वह जानता था कि मँछली की पूंछ कैसी दिखती है। भक्ते यह सब मन में सोच रहा था। उसने फुलमाया से पूछा, "दीदी, यह कैसे माछापुछे हो सकती है, जबकि यह मछली की पूंछ जैसी तो दिखती नहीं?"

फुलमाया ने स्टीयरिंग व्हील पर से एक हाथ हटाया और मेंढक की टोपी उसके सिर पर रख दी। फिर वह बोली, "बुद्धू भक्ते, पर्वतों का आकार सब तरफ एक जैसा नहीं होता है। मछली की पूंछ यहां से नजर आती है। जब तुम पोखरा से उत्तर की ओर घांग्द्रुंग गांव की तरफ जाओगे तो तुम्हें पूंछ जरूर दिखाई देगी। यह मेरा वादा है।"

मेंढक को इस कहानी पर विश्वास नहीं हुआ। उसने फुलमाया की बात को परखने के लिए घांग्द्रुंग जाने का निश्चय किया। फुलमाया ने उसके इरादे को जानकर कहा, "भक्ते, तुम घांग्द्रुंग जरूर जाना पर पहले पोखरा तो देख लो। इस शहर में बहुत बड़ी झील है, जिसमें

तुम्हारे जैसे अनेक मेंढक रहते हैं। कुछ समय अपने साथियों के साथ रहोगे तो तुम्हें अच्छा लगेगा।"

ट्रक पोखरा के पास पहुंचा तो भक्तप्रसाद को कुछ-कुछ होने लगा। पता नहीं क्या था, गुदगुदी-सी हो रही थी और उसका मन चाह रहा था ट्रक से कूदकर कहीं चला जाए। पर उसे नहीं पता था कि कहां जाए? उसने जानने के लिए फुलमाया की तरफ देखा। वह जानती थी ऐसा क्यों हो रहा था।

फुलमाया ने मेंढक को बताया, "भक्ते, तुम एक उभयचर हो। तुम्हारी मूल प्रवृत्ति ने तुम्हें तुरंत बता दिया कि आस-पास कोई बड़ा जलाशय है। तुम बहुत दिनों तक पानी से दूर रहे हो तो अब भीगने के लिए तुम्हारा मन मचल रहा है!"

फुलमाया ने मेंढक को अधिक इंतजार नहीं करवाया। वह शीघ्रता से ट्रक को फेवा झील के किनारे ले गई। वह एकाएक उदास हो गई। उसने मेंढक की तरफ वाला दरवाजा खोल दिया। वह बोली, "भक्ते, कुछ मत बोलना। मुझे बिछुड़ना अच्छा नहीं लगता। झटपट जाओ और हां, पहाड़ों पर चढ़ते समय और नदियां पार करते सावधान रहना।"

भक्तप्रसाद ट्रक से बाहर कूदा और पानी की तरफ फुदककर चला गया। उसने मुड़कर भी नहीं देखा। ट्रक धीरे से मुड़ा और धूल व डीजल के धुएं में ओझल हो गया। मेंढक पानी तक पहुंचने के लिए उतावला था।

"आहा, कितना सारा पानी! कितना बड़ा तालाब! नहीं, यह तो झील है! नहीं, सागर है! अरे, नहीं, नहीं, महासागर है! काश, हजूरबा बुद्धिप्रसाद मुझे इस समय देख पाते!" मेंढक खुशी से पागल हो रहा था।



पोखरा पार्टी

वह तट की ओर आगे बढ़ा तो एक दूसरा मेंढक, जो उसका जुड़वां लगता था, पास आया। "अरे, ओ घमंडी! कहां चले जा रहे हो तुम? झील के किनारे मेरी सीमा में, मुझसे बिना पूछे घुस रहे हो!" वह अकड़कर बोला।

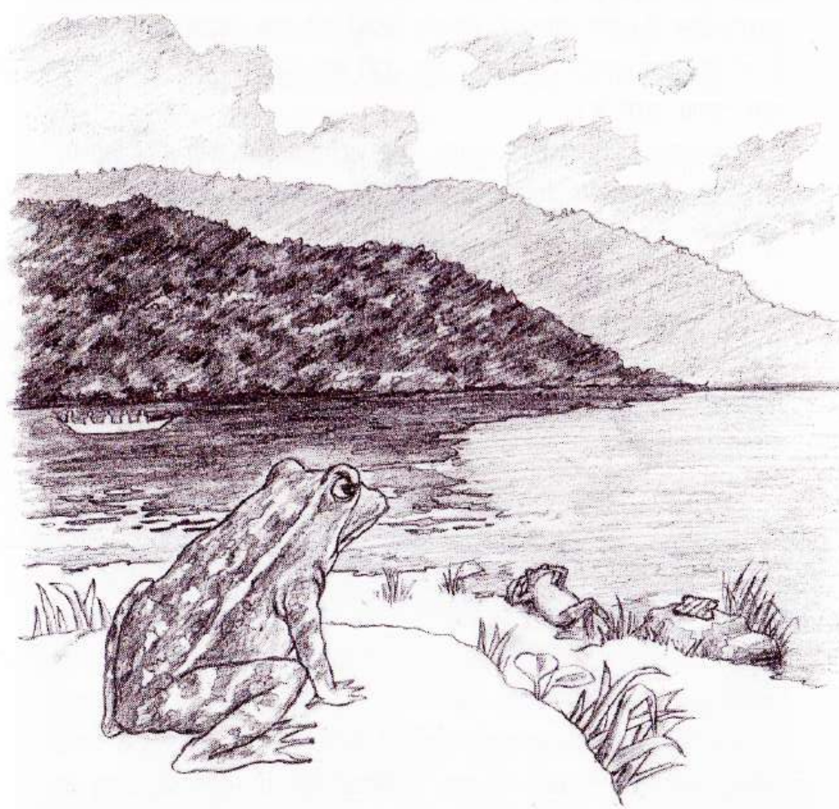
लेकिन भक्तप्रसाद ने उसकी बातों पर कुछ ध्यान नहीं दिया। वह पानी तक गया, लंबी छलांग मारी, गहरी डुबकी लगाई और गोल-गोल तैरने लगा। फिर मुंह ऊपर करके तैरने लगा। सिर को अपने नन्हे हाथों पर टिकाए खुशी से उसका चेहरा चमक रहा था। इतने दिनों तक पानी से दूर रहने के बाद कोई भी मेंढक ऐसा ही करता। भक्तप्रसाद ने पानी की नमी को अपने रोम-रोम में समा जाने दिया।

भक्तप्रसाद धीरे-धीरे वापस किनारे तक आया और कीचड़ वाले एक स्थान में घुस गया। "आहा! मस्ती, मस्ती, लोटपोट मुझे पसंद है!" उसने खुश होकर कहा। काफी देर बाद उसे अहसास हुआ कि एक और मेंढक भी वहां मौजूद था। वह एक टीले के ऊपर झुका था और नीचे बैठे भक्तप्रसाद को क्रोध से घूर रहा था। वह चिल्लाया, "तुम अपने आप को समझते क्या हो? बदमाश! घुसपैठिए! धोखेबाज!"

"अरे मित्र, नाराज क्यों होते हो! मैं इतनी बड़ी झील को देखकर मदहोश हो गया था। मैं आपकी इजाजत लेना भूल गया।" भक्ते ने कहा।

"जनाब, आप इस समय झील के मेरे वाले हिस्से में हैं। अगर आप मेरे जैसे मेंढक नहीं होते तो मैं आपको अब तक झील सुरक्षा समिति (लेकसाइड सिक्युरिटी ट्रिब्यूनल) के पास ले गया होता। मुझे लगता है हम दोनों का आपस में कोई रिश्ता है। आप कौन हैं? मेरे जैसे क्यों दिखते हैं?"

कीचड़ में बैठे-बैठे भक्तप्रसाद ने संक्षेप में अपना वहां आने का कारण बताया। किस तरह यात्रा करते हुए वह 'फेवा' झील तक पहुंचा था।



मेंढक को अपने नाना बुद्धिप्रसाद की सिखाई बातें याद थीं। उसने बताया, "हम दोनों 'राना टिगरिना' जाति के हैं, इसलिए एक समान हैं। यह मेंढकों की एक आम जाति है। यह पश्चिम में गढ़वाल से लेकर पूर्व में सिक्किम तक पाई जाती है।"

वह फुलमाया की तरह समझदारी से बातें कर रहा था। भक्तप्रसाद यह सोचकर खुश था। अब बातें करने का उसका लालच बढ़ता जा रहा

था। इस गंवार मेंढक के सामने अपनी शान बघारने के लिए उसने कहा, "क्या तुम जानते हो कि इस देश में और बड़ी झीलें भी हैं? उसमें से एक 'रारा' झील है। इस झील के किनारे मेंढकों की एक विशेष जाति रहती है जो नेपाल के अलावा दुनिया में और कहीं नहीं मिलती। इसका वैज्ञानिक नाम 'राणा रारा' है।"

भक्तप्रसाद की बातों से दूसरा मेंढक प्रभावित हो गया और बोला, "ठीक है, मैं प्रजापति पोखेली हूं। यह जाति बस पोखरा में होती है। तुम मुझे 'पैपै' कह सकते हो।"

"तुम्हें भी अपना नाम 'बैबै' रखना चाहिए," प्रजापति ने कहा। फिर वह भी भक्तप्रसाद के पास कीचड़ में आ गया। उसे भी मिट्टी में लोटपोट करना पसंद था। 'पैपै' और 'बैबै' दिखने में ही एक जैसे नहीं थे, उनकी पसंद भी मिलती थी। 'पैपै' के माथे पर बना एक निशान उसे 'बैबै' से अलग करता था।

दोनों मेंढक पोखरा और काठमांडू की घाटियों, वहां के जीव-जंतु, लोग और पर्वतों के बारे में बातें करने में व्यस्त हो गए। उन्हें पता ही नहीं लगा कि कब अंधेरा हो गया। जब जुगनू बाहर निकल आए तब 'पैपै' ने किनारे की तरफ देखा और चिल्लाया, "अरे! आज पार्टी है। हमें देर हो जाएगी। आओ, चलते हैं!" दोनों मेंढक कीचड़ से बाहर निकले। बदन छिटकाते हुए वे शहर की ओर फुदक चले।

बरसात का मौसम आने की खुशी में पोखेली मेंढकों का कुनबा आज शाम शानदार पार्टी मना रहा था। ये मेंढक सदियों से 'फेवा' झील के किनारे रह रहे थे। "मनुष्य फसल कटने के समय 'दसैं' का त्योहार मनाते हैं। इसके विपरीत, पोखरा के मेंढक फसल समाप्त होने पर खुशी मनाते हैं। इस समय चावल के गंदले खेतों में कीड़े-मकोड़े बहुतायत में मिलते हैं। सब मेंढक बाहर निकलकर पिकनिक मनाते हैं और भरपेट मच्छर, मक्खी व कीड़े-मकोड़े खाते हैं। बरसात के इस मौसम को मेंढकों का 'दसैं' यानी दशहरा भी कह सकते हैं।" 'पैपै' ने पार्टी स्थल की ओर जाते हुए बताया।

दोनों मेंढक सजे-धजे रोशनी से चमचमाते स्थान की ओर जा रहे थे।

वहां बहुत-से रेस्टोरेंट और लांज थे। 'पैपै' ने बताया, "फेवा झील के आस-पास के खेत हलवाई और होटल वालों ने ले रखे हैं। यहां पोखरा आने वाले सैलानी आकर ठहरते हैं, खाते-पीते हैं। पोखरा में सैलानी हजारों की संख्या में आते हैं। आजकल सैलानियों का मौसम नहीं है तो यह जगह हमने पार्टी के लिए ले ली है।"

"सैलानियों का मौसम नहीं है, पर क्यों?" भक्ते ने पूछा।

"उन्हें बारिश अच्छी नहीं लगती है इसलिए वे बरसात के मौसम में यहां नहीं आते हैं।" प्रजापति ने बताया।

वे दोनों जोर-जोर से हंसने लगे कि दुनिया में ऐसे लोग भी हैं जिन्हें बारिश अच्छी नहीं लगती है। कितनी हैरानी की बात है!

उन दोनों ने हंसते-हंसते रेस्तरां में प्रवेश किया। वहां पार्टी जोरों पर थी। एक देसी बैंड 'द क्रोकर्स'' बज रहा था। वह पश्चिमी बैंड 'फ्रॉगी-रैप'



की नकल करने की कोशिश कर रहा था। स्टेज पर बहुत-से मेंढक संगीत की धुन पर थिरक रहे थे। उनमें झूमते हुए कुछ नन्हे मेंढक भी थे जिनकी दुम अभी भी सिकुड़कर लटक रही थी। मानव बेयरा तरह-तरह की मक्खियां ट्रे में लिये इधर-उधर घूम रहे थे। सभी मक्खियां बिहार से आयात की गई थीं। बिहार भारत का एक राज्य है। अनगिनत चीजें थीं--तली मक्खी, भुनी मक्खी, तेल से सजी मक्खी, हरी मक्खी के सूप में तैरती स्वादिष्ट मक्खी, मक्खी के चावल आदि-आदि।

भक्तप्रसाद काठमांडू के 'कांठ' के एक गांव का रहने वाला था। अपनी ही जाति के पोखरा मेंढकों की ऐसी शानदार और भव्य पार्टी देखकर वह हैरान था। भक्ते कोने में एक मेज पर, हाथ में मक्खी के सूप का गिलास लिये बैठा था। 'फ्रॉगी रैप' ने बैंड की गति और आवाज तेज कर दी। सबका जोश बढ़ गया। उसे इन सब चीजों पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने किसी से कुछ नहीं कहा और हैरानी से सब देखता रहा। जैसे-जैसे पार्टी में उमंग बढ़ रही थी, छोटे-बड़े मेंढक ऊंचे-ऊंचे उछल रहे थे। आधी रात हो जाने पर तो मेंढक इतना ऊंचा कूद रहे थे कि रेस्तरां की छत को छूने वाले थे। इतनी ऊंचाई से जब वे वापस जमीन पर आते तो जोर से 'छप्प' की आवाज सुनाई पड़ती।

इचंगु के शांत वातावरण में रहने वाले मेंढक, पोखरा मेंढकों की मस्ती भरी जिंदगी की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। "एक ही जाति के होने पर भी हम लोगों की दुनिया में कितना अंतर है," असमंजस में बैठा भक्तप्रसाद बुदबुदा रहा था। वह समझ गया था कि सैलानियों के आने के कारण इन मेंढकों का परिचय बाहरी दुनिया से भी है। इन सब ने बहुत पैसा कमा लिया है। इसलिए इन पोखरा मेंढकों का रहन-सहन हम लोगों से बहुत अलग है।

विकास करते-करते मेंढक जाति भी दुनिया में बहुत आगे निकल गई है। विकास होने से अब नई अनजानी दिशाएं सामने हैं। यहां पोखरा में पोखेली मेंढक बिना सोचे-समझे तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। पता नहीं इनके लिए और दूसरी मेंढक जातियों के लिए यह सब ठीक होगा या गलत। भक्तप्रसाद इन सब बातों के जवाब नहीं जानता था। वैसे भी अभी वह न तो अभी उतना बड़ा था और न ही उतना समझदार था।

एक जैसी शक्लों वाले नाचते मेंढकों के बीच भक्तप्रसाद ने अपने मित्र 'पैपै' को उसके माथे पर लगे निशान से पहचान लिया। उसने हाथ हिलाकर बताया कि वह जा रहा है। 'पैपै' उसे रुकने के लिए कहे इसके पहले ही वह तेजी से बाहर निकल गया। वह सीधा फेवा झील के किनारे बने गड्ढे की ओर चल दिया। कुछ देर वहां मस्ती से रहेगा, फिर उसे घांग्द्रुंग जाने के लिए सवेरे जल्दी उठना था। आगे की यात्रा में कठिन चढ़ाई करनी थी।

उस रात नाना बुद्धिप्रसाद को अनुमान हुआ कि उनका नाती पार्टी के बाद दुविधा में पड़ा है, परेशान है। वह उसके सपने में आए और उन्होंने कहा, "भक्ते, आधुनिक होना अच्छी बात है। लेकिन अगर मेंढक एक झटके में अपनी परंपराओं को छोड़ दें तो वे दिशा भटक जाते हैं। वह सही-गलत की पहचान करना भूल जाते हैं। एक सीमा से अधिक कोई भी चीज हानिकारक होती है, परिवर्तन भी! भक्ते, ये सब बातें इतनी आसान नहीं हैं। इस समय अच्छा होगा कि तुम सो जाओ।"



माछापुछे से बाहर

भक्तप्रसाद को याद था, फुलमाया ने कहा था, "अगर तुम्हें मछली की पूंछ देखनी है तो घांग्द्रंग जाओ।" मेंढक फेवा झील से उतराई की ओर चल पड़ा। नीचे चट्टानों से घिरे खुले मैदान पोखरा की विशेषता थे। रास्ते में वह बीच-बीच में सीधे खड़े पीपल के पेड़ों के नीचे आराम करने रुक जाता था। इस तरह के पेड़ पूरी घाटी में फैले थे। लंबी घुमावदार सड़क के साथ-साथ पोखरा बाजार फैला था। उसी के सहारे मेंढक शहर के किनारे तक चलता गया। चलते-चलते वह कई गांवों से गुजरा और एक जगह पहुंचा जहां 'फेडी' लिखा था। यहां से असली चढ़ाई शुरू होती थी। रास्ते के आखिर में 'धाम्पस' चोटी थी जो 'अन्नपूर्णा हिमाल' का नजारा देखने के लिए मशहूर थी।

जैसे-जैसे भक्तप्रसाद ऊपर की ओर चढ़ रहा था, उसकी सांस तेज होती जा रही थी, चाल सुस्त होती जा रही थी। कुछ देर बाद उसके पांव दुखने लगे और सिर घूमने लगा। उसकी चमड़ी खुश्क होती जा रही थी। "ए सुस्त प्राणी, रास्ते से हट जाओ, नहीं तो कुचल जाओगे।" पीछे से एक आवाज आई। यह पसीने से लथपथ एक कुली था। उसकी कमर सामान से भरे टोकरे के कारण झुकी थी।

"चढ़ाई पर चढ़ने में जरा मेरी मदद कर दो," भक्तप्रसाद ने विनती की। मेंढक को याद था, जब वह असन बाजार में जगत बहादुर की टोकरी में चढ़कर बैठा था। कितने आराम से सब कुछ देखा था। "अच्छा, इधर बैठ जाओ," कुली ने कहा। उसने मेंढक को अपनी दो उंगलियों से उठाया और टोकरी में रख दिया। मेंढक की सांस सहज हुई और उसकी जान में जान आई। अभी उसे सैर का मजा लेते कुछ ही देर हुई थी कि घूमता-फिरता एक बादल आया और पानी की बौछार कर गया। हवा आई

और उसने घाटी में ढलान पर लगे पीपल के पत्तों को सरसरा दिया।

"अगर पैदल नहीं चलना पड़े तो पहाड़ों की सैर करने में खूब मजा आता है," कुली ने हांफते-हांफते कहा। 50 किलो के भारी वजन को उठाकर पहाड़ पर चढ़ने में उसे कड़ी मेहनत करनी पड़ रही थी। उस कुली का नाम हीरा बहादुर था। जो सैलानी पैदल घांग्द्रंग गए थे, वह उनका सामान ढो रहा था।

"अरे, फिर तो मैं तुम्हारे साथ पूरे रास्ते जा सकता हूं," मेंढक ने कहा।

"हां बिलकुल, कोई परेशानी नहीं है।" हीरा बहादुर ने कहा। फुलमाया की तरह हीरा को भी आस-पास के इलाकों की बहुत जानकारी थी। कुली एक चबूतरे के पास पानी पीने के लिए रुका तो मेंढक ने मछली की पूंछ वाली चोटी के बारे में पूछा। कुली ने सिर हिलाया और कहा, "हां, घांग्द्रंग की ओर आगे बढ़ने पर पूंछ दिखाई देगी। मैं तुमको बता दूंगा।"

वे धाम्पस टीले पर पहुंचे तो अन्नपूर्णा हिमाल की चोटियां दिखाई देने लगीं। और ये क्या! माछापुछे का शिखर अब नुकीला नहीं लग रहा था। एक दूसरी चोटी उसके पीछे से झांक रही थी। "भक्ते, तुम अपनी नजर इस दूसरी चोटी पर टिकाए रखो। जैसे-जैसे हम आगे जाएंगे यह बड़ी, और बड़ी होती जाएगी," हीरा बहादुर ने कहा।

अब यह रास्ता कुछ दिन तक पश्चिम में लांग्द्रंग गांव की ओर जा रहा था। यहां सीधी ढलान थी। ढलान मोदी खोला की प्रचंड धारा तक जाता था। धारा पर झूला पुल था और घांग्द्रंग तक चढ़ाई थी। भक्तप्रसाद बार-बार दायीं ओर देखता कि चोटी का आकार बदला या नहीं। पैदल यात्रियों ने जब घांग्द्रंग में कदम रखा, माछापुछे की पूंछ साफ दिखाई दे रही थी। भक्तप्रसाद इस समय खुशी से झूम रहा था। "ऐसी ही तसवीर पोस्टकार्ड पर छपी है। यही है, बिलकुल यही है," हीरा बहादुर ने खुशी से झूमते भक्ते को विश्वास दिलाया।

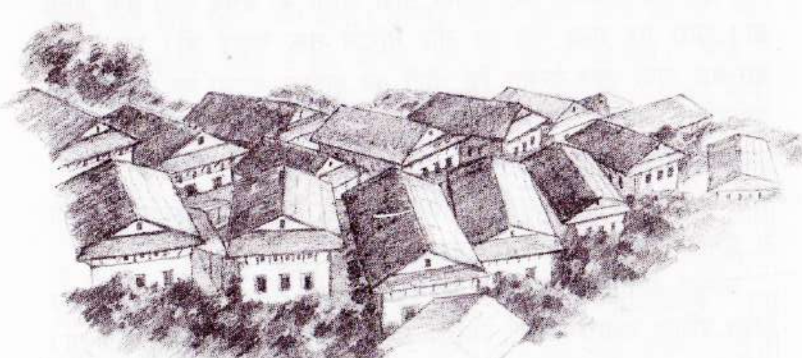
घांग्द्रंग सैलानियों का प्रिय स्थान था। यहां से अन्नपूर्णा हिमाल का विश्व प्रसिद्ध नजारा दिखाई देता था। यहां लोगों में खूब मेल-मिलाप था। उन्हें मालूम था कि समाज के लिए प्रत्येक व्यक्ति का कुछ कर्त्तव्य है। वे हमेशा एक-दूसरे की सहायता के लिए तैयार रहते थे। गांव की सफाई,

जंगल की सुरक्षा, परम्पराएं और रीति-रिवाज, जो नेपाल के दूसरे गांवों में समाप्त हो गए थे, ऐसी चीजों का यहां के लोग अभी भी ध्यान रखते थे।

भक्तप्रसाद घांग्द्रुंग के एक सुंदर निवास स्थान में पहुंचा। वहां लिखा था, 'द घांग्द्रुंग माउंटेन व्यू एंड चॉकलेट पुडिंग लॉज विद हॉट वॉटर शॉवर।'

गर्म पानी के फव्वारे के नाम से भक्तप्रसाद के रोंगटे खड़े हो गए। "यह मेरे किसी काम का नहीं है। मैं तो नहाऊंगा ही नहीं," मेंढक ने फैसला किया। वह लॉज के सामने वाले मैदान में एक लाउंज चेयर पर बैठ गया। माछापुछे की बलखाती चोटी को लगातार देखता रहा। गांव की धरती से हजारों फुट ऊपर, पहरेदार की भांति खड़ी, बर्फ और पत्थर की चट्टानों वाली यह चोटी जीती-जागती लग रही थी। लगता था किसी भी पल अपनी पूंछ हिलाएगी और आस-पास घिर आए रुई जैसे बादलों में से सरसराती हुई निकल जाएगी।

भक्तप्रसाद ने पूरा दिन इसी तरह के नजारों को देखने में बिताया। अब सूरज पश्चिम दिशा में सरकने लगा था। पूरी घाटी में अंधेरा छा रहा था। इस समय प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनमोहक था। पहाड़ियों पर बर्फ का रंग बदलता जा रहा था। चमकीला सफेद, नारंगी, लाल, सुनहरा और अंत





में हल्के हाथी दांत जैसे हो गया। धीरे-धीरे सूरज ने दिन के समाप्त होने की घोषणा की। चारों ओर अंधेरा था और दक्षिणी अन्नपूर्णा की गोलाकार चोटी के पीछे से पूरा चांद चमक रहा था। चांद की रोशनी में पहाड़ियां एकदम शांत खड़ी थीं। साहसी मेंढक यह सब दृश्य देखकर मुग्ध था। इन अलौकिक दृश्यों को देखकर वह पुकार उठा, "सब सुनो, मैं हीरो हूं।"

लॉज के पास वाले रास्ते से लगातार 'डिंग डॉंग, डिंग डॉंग' की आवाज आ रही थी। मेंढक ने उस ओर ध्यान दिया। अंधेरे में उसने देखा कि एक टट्टू चला आ रहा था। उस पर सामान की बोरियां लदी थीं। वह रंगीन झालरों और गहनों से सजा था। उसके गले में एक बड़ी-सी घंटी लटक रही थी, उसी से यह डिंग-डॉंग की आवाज निकल रही थी।

टट्टू लॉज के चारों ओर बनी बाड़ के पास रुका और उसने उचककर देखा, "यहां कौन हीरो आ गया है, जरा देखूं? अरे, ये क्या! मेंढक बोल रहा था? कोई मेंढक कैसे बातें कर सकता है?"

भक्तप्रसाद हमेशा बातें करने को तैयार रहता था। अब तो इतने दिनों घूमने पर उसकी हिम्मत बहुत बढ़ गई थी। वह ऊपर उछला और बोला,

"मैं भक्तप्रसाद हूं। काठमांडू से आया हूं। तुम बताओ, क्या टट्टू भी बातें करते हैं?"

टट्टू ने उसकी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। उसने बताया, "मेरा नाम शालिग्राम शमशेर है। मैं उन हजारों टट्टुओं में से एक हूं जो काली गंडकी घाटी से व्यापारियों का माल लाते-ले जाते हैं। मैं खाने का सामान लेकर घांग्द्रुंग आया हूं। मुझे अभी और आगे जोमसोम जाना है। यह स्थान अन्नपूर्णा पहाड़ियों के पीछे यहां से उत्तर की ओर है। मेरे साथ चलोगे?"

पूछने की देर थी, भक्तप्रसाद तुरंत तैयार हो गया। वह तराई घूम आया था। नेपाल के बीच की पहाड़ियां देख आया था। अब उसे मौका मिल रहा था हिमालय शृंखला को उत्तर की ओर से समझने-बूझने का। लिहाजा वह झट से बोल उठा, "जी, जी, टट्टू जी, शालिग्राम जी, कृपया मुझे अपने साथ जरूर ले चलिए!"

शालिग्राम ने अपनी पूंछ फटकारी, सिर हिलाया और घंटियों को टन-टनाकर मेंढक को बताया कि वह उसकी पीठ पर लदे चावल के बोरों के ऊपर बैठ जाए। उसने समझाया, "तुम्हारे वजन से कोई खास फर्क नहीं पड़ेगा। रस्सियों को पकड़कर रखना, रास्ता ऊबड़-खाबड़ है। मैं नहीं चाहता कि तुम नदी में गिर जाओ।"

चांदनी रात में भक्तप्रसाद ने माछापुछ्रे पहाड़ी पर अंतिम नजर डाली और अलविदा कहा। उसे पक्का विश्वास था कि पहाड़ी ने हौले से हिलकर उसे विदा कहा। लेकिन फिर वह सोच में पड़ गया कि धुंधली रोशनी में यह उसकी आंखों का धोखा तो नहीं था?

भक्तप्रसाद ने शालिग्राम की पीठ पर लदे बोरे की रस्सी को कसकर पकड़ लिया। टट्टू हिमालय के पार उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा। उसकी धीमी-धीमी चाल से भक्ते को नींद आ गई।



सेब और जीवाश्म

आने वाले दिन खुशियों से भरे थे। टट्टू ने बताया, "जहां से तुम अब जा रहे हो यह दुनिया का सबसे खूबसूरत नजारा है। ऊपर बैठे-बैठे तुम इसका पूरा आनंद ले सकते हो। कठिन रास्ते पर ध्यान देने की तुम्हें कोई जरूरत नहीं। यह मेरा काम है।"

पूर्व में अन्नपूर्णा शृंखला और पश्चिम में धौलागिरी हिमाल के बीच काली गंडकी घाटी एक गहरा दर्रा बनाती है। "क्या तुम जानते हो यह धरती पर सबसे गहरा दर्रा है?" टट्टू ने भक्तप्रसाद से पूछा। "हां, अब जान गया हूं," भक्ते ने कहा। उसके जानकारी के खजाने में अपने देश की एक नई सूचना जुड़ गई।

कभी रास्ता इतना चौड़ा हो जाता कि सैलानी, कुली और तीर्थयात्री एक साथ निकल जाते थे। कभी इतना तंग हो जाता कि एक-एक कर मुश्किल से निकल पाते थे। कभी रास्ता काली गंडकी की सीधी चट्टानों को छूने लगता। उस समय शालिग्राम का एक गलत कदम उन्हें मौत के मुंह में ले जा सकता था। वे हरे जंगलों से निकले, झरनों के बीच से गुजरे और उन्होंने यात्रियों की चाल के साथ-साथ आकार बदलती चट्टानों को देखा। हिमालय की तीव्रगामी नदी काली गंडकी उफनती, मचलती हमेशा उनके साथ थी।

शालिग्राम ने बताया, "यह नदी लाखों वर्ष पहले से, पहाड़ियों के उठने के पहले से यहां है। जैसे-जैसे नई पहाड़ियां उठती गईं नदी अपना रास्ता बदलती गई। इसलिए पहाड़ियां जितनी ऊंची होती गईं घाटी उतनी गहरी हो गई।

घांग्द्रुंग से चले एक सप्ताह बीत गया। प्राकृतिक दृश्य बदलने लगे थे। अब दक्षिण के हरे-भरे वनों के स्थान पर सपाट मैदान था जो मरुस्थल



लगता था। सदाबहार और बलूत के साथ कहीं-कहीं चीड़ और देवदार भी थे। हिमालय पार की छोटे पौधों की विभिन्न जातियां थीं, बौना हौबेड़ा और कंटीली झाड़ियां। पोखरा और घांग्द्रुंग के जंगलों में पेड़ों के नीचे

बहुतायत में वनस्पति उगी थी, यहां एकदम कुछ नहीं था। इस जगह केवल रेत और चट्टानें थीं। यहां के खेतों में चावल या मकई नहीं उगा था, बल्कि जौ की फसल थी।

काली गंडकी के इस ऊपरी भाग में सेब के बाग थे। रास्ते में पेड़ की लटकती डालियों से फल तोड़कर खाने में भक्तप्रसाद को बड़ा मजा आया। जब वे मारफा गांव पहुंचे शालिग्राम ने दूसरी दिशा में जाते रंग-बिरंगे टट्टुओं का 'घुरघुरा' कर अभिवादन किया। यहां से पोखरा लौटते समय टट्टुओं की पीठ पर सामान नहीं लदा होता, इसलिए वे तेज चल पाते थे और उनके गले में बंधी घंटियां अधिक आवाज करती थीं।

मारफा एक छोटा-सा सुंदर गांव था। मुख्य मार्ग पर सराय और कैफे थे। गांव के सभी घर लिपे-पुते थे। सबकी छतें सपाट थीं और कीचड़-मिट्टी की बनी थीं। भक्ते को हैरानी हो रही थी कि यहां घरों की चोटी नहीं निकली थी। उसे हैरान देख शालिग्राम ने टोका, "यहां ढलवां छतों की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि यहां ज्यादा बारिश नहीं होती है।"

"पर क्यों नहीं होती? पूरा देश एक ही तो है, है न?" मेंढक ने पूछा।

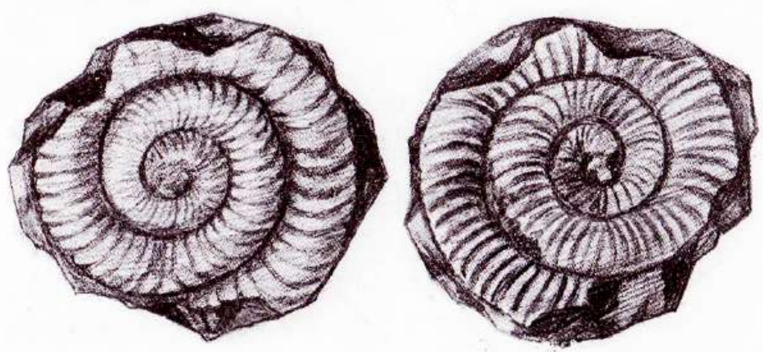
"बिलकुल बुद्धू हो! एक देश में भी अलग-अलग जलवायु होती है। हम अभी भी नेपाल में हैं पर हिमालय शृंखला के उत्तर में हैं। बादल यहां की ऊंची पहाड़ियों को पार नहीं कर पाते हैं इसी से यहां ज्यादा बारिश नहीं होती है। समझे तुम!" शालिग्राम ने कहा।

मारफा गांव के बीच से निकलने वाला चट्टानी रास्ता साफ-सुथरा था। हर कोई अपना आंगन साफ रखता और कचरा गटर में डालता था। गटर रास्ते के नीचे से बहता था। मेंढक सोच रहा था, "मारफा और घांग्द्रुंग गांव काठमांडू और पोखरा शहर से ज्यादा साफ हैं, पर कैसे?" शालिग्राम को भी काली गंडकी इलाके के बारे में तो पूरी जानकारी थी पर बाकी नेपाल के बारे में वह कुछ ज्यादा नहीं जानता था।

शालिग्राम एक फेरीवाले के पास से निकला। वह जमीन पर कपड़ा बिछाए कुछ काले रंग के पत्थर बेच रहा था। "इन पत्थरों को ध्यान से देखो," टट्टू ने कहा। भक्तप्रसाद ने देखा कि पत्थरों पर कुछ [illegible]-से निशान थे।

शालिग्राम ने बताया, "इन पत्थरों को अमोनाइट्स कहते हैं। इन पर बने निशान उन जीवों के अस्थिपंजर के अवशेष हैं जो लाखों-करोड़ों वर्ष पहले महासागर में रहते थे। आज काली गंडकी के रास्ता बदलने से ये जीवाश्म हमें देखने को मिल रहे हैं।"

वास्तव में भक्तप्रसाद को पहले से पता था कि नेपाल का काली गंडकी क्षेत्र अमोनाइट्स पत्थरों के लिए मशहूर था। ये पत्थर पवित्र माने जाते थे। "अच्छा, जरा बताओ इन पत्थरों को नेपाली में क्या कहते हैं?" टट्टू ने मेंढक को ललकारा। भक्तप्रसाद ने कुछ पल सोचा और पुकार उठा, "शालिग्राम! इन्हें शालिग्राम कहते हैं!"





काली गंडकी और प्रचंड हवाएं

टट्टू ने मारफा के गटर से अपनी प्यास बुझाई और मकई से पेट भरा। फिर दोनों यात्री जोमसोम की ओर उत्तर दिशा में कुछ किलोमीटर आगे चले। यहां व्यापार चौकी थी और शालिग्राम को यहां से दूसरी ओर जाना था। दोपहर का समय था। हवा एकाएक तेज हो गई थी। कुछ ही देर में भारी तूफान आ गया पर बादल या बारिश बिलकुल नहीं थे। जमीन से छोटे-छोटे कंकड़ लिये हवा पीछे की ओर से आ रही थी। ये कंकड़ मेंढक को चोट पहुंचा रहे थे।

हवा का एक झोंका आया और भक्तप्रसाद की टोपी उड़ा ले गया। वह टोपी पकड़ पाए इसके पहले टोपी दूर उड़ गई। शालिग्राम ने देखा, वह भी दौड़ा पर टोपी पेड़ की चोटी से भी ऊपर उड़ गई। फिर जमीन पर गिरी और लुढ़कने लगी। "चलो, चलो!" भक्तप्रसाद जॉकी की तरह लग रहा था जबकि शालिग्राम दौड़ने वाले घोड़े की तरह। बोझ से लदा टट्टू काली गंडकी की प्रचंड हवाओं का क्या मुकाबला करता! उसने टोपी का पीछा करना छोड़ दिया और निराश हो फू-फू करने लगा।

टोपी की उड़ान नदी के बीच जाकर रुकी। मेंढक ने लाल-हरा कुछ देखा, टोपी सतह पर आई और फिर गायब हो गई। "शायद कुछ दिन बाद टोपी नारायणघाट पहुंच जाए, जहां से हमने इसे खरीदा था," भक्तप्रसाद ने कहा। उसे मालूम था कि मीलों-मील पहाड़ों से उतरती हुई काली गंडकी त्रिशूली गंगा से जा मिलेगी और नारायणी नदी कहलाएगी जो नारायणघाट के पास बहती है।

शालिग्राम अभी भी हांफ रहा था। उसके नथुने फूल रहे थे और मुंह से सांय-सांय की आवाज आ रही थी। उसने कहा, "मुझे दुख है कि तुम्हें पहले सावधान नहीं किया।"

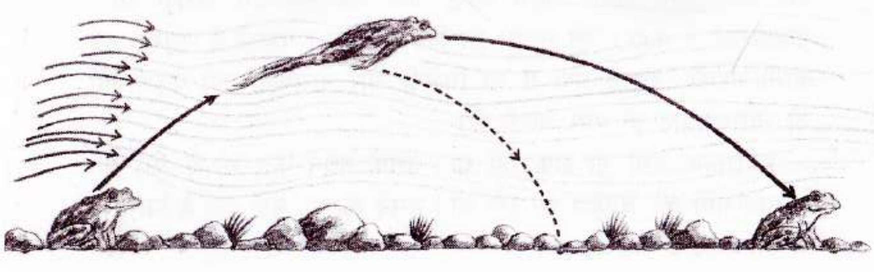
"हवा को एकाएक क्या हो गया है?" मेंढक ने पूछा।

टट्टू ने बताया, "काली गंडकी के ऊपरी भाग में यह रोज की बात है। जब नेपाल और भारत में, नीचे मैदानों में सूरज तपता है तब हिमालय के दक्षिणी भाग में हवा का भारी दबाव बनता है। यह हवा कम दबाव वाले तिब्बत के पठार पर जाना चाहती है। लेकिन पहाड़ियां बहुत ऊंची हैं। हवा को उत्तर की ओर जाने के लिए कोई रास्ता चाहिए। काली गंडकी की गहरी घाटी एक प्राकृतिक कुप्पी का काम करती है। इसलिए हवा तिब्बत तक जाने के लिए यह रास्ता चुनती है।"

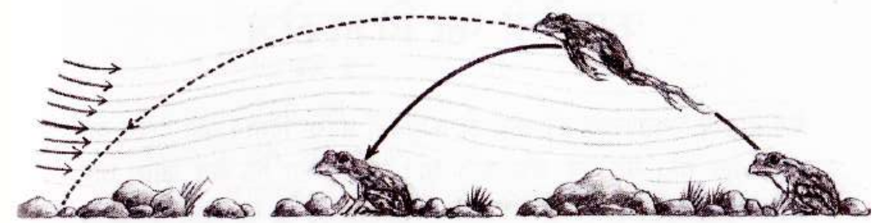
भक्तप्रसाद शालिग्राम की बातों में छिपे विज्ञान को समझने की कोशिश कर रहा था। टट्टू आगे बताता रहा, "हवा इस रास्ते पर जाने वालों की मदद भी करती है और रुकावट भी डालती है। अगर हम नदी के साथ नीचे की ओर जाते हैं तो हम हवा की विपरीत दिशा में चलते हैं जिससे यात्रा कठिन और लंबी हो जाती है। लेकिन अगर हम नदी के साथ ऊपर की ओर जाते हैं, जैसे कि हम अब जा रहे हैं तो हवा हमें वैसे धकेलती है मानो हम पतंग हों।"

जितनी देर में टट्टू ने हवा के साथ और विपरीत चलने की तकनीकी जानकारी दी उतनी देर में जोमसोम आ गया। यहां व्यापार चौकी और टूरिस्ट स्टॉप के अलावा एक हवाई मैदान था। उसके ऊपर एक ऊंची विशाल पहाड़ी थी, नीलगिरी पहाड़ी। ताजा बर्फ से ढंके खंभे इतने पास

हवा की दिशा में उछलता मेंढक



हवा के विपरीत दिशा में उछलता मेंढक



लगते थे कि अभी जाकर छू लें, पर भक्तप्रसाद जानता था कि पहाड़ों पर यह एक भ्रम है। जो बहुत पास लगता था वहां तक पहुंचने के लिए कई दिनों तक उछलना पड़ता।

जोमसोम पहुंच जाने पर शालिग्राम का सामान एक सेठ ने उतार लिया और टट्टू को उसके अच्छे कार्य करने के पुरस्कारस्वरूप खुले खेतों में चरने के लिए छोड़ दिया जहां खूब हरी घास थी। अब टट्टू और मेंढक की विदाई का समय था। भक्तप्रसाद ने शालिग्राम से सलाह की और बिना देर किए उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा ताकि हवा के रुख का फायदा उठा सके।

हवा के तेज झोकों के साथ भक्तप्रसाद शीघ्रता से आगे बढ़ गया। हर बार जब भक्तप्रसाद उछलता हवा उसे बहुत दूर ले जाती। हवा के बिना यह संभव नहीं था। एक सामान्य उछाल में अगर वह दो फुट आगे बढ़ता तो अब हवा के कारण चार फुट जा सकता था। उसकी गति दोगुनी हो गई।

रास्ते पर दूसरी ओर जाते मेंढकों की चाल देख वह हैरान था। हवा के विपरीत जाने से उन्हें बहुत कठिनाई हो रही थी। हवा के न होने पर एक उछाल में जहां वे चार फुट तक जा सकते थे, अब केवल एक फुट आगे बढ़ रहे थे। ऐसे में तो ये मेंढक रात होने के पहले जोमसोम नहीं पहुंच सकेंगे, भक्तप्रसाद यह सोचते हुए आगे निकल गया। वह इस इलाके के इन मेंढकों से बात करना चाहता था पर तेज हवा के कारण रुक पाना असंभव था।



कागबेनी का विश्वकोश

तेज दौड़ ने भक्तप्रसाद को शीघ्र ही कागबेनी पहुंचा दिया। यहां देखने को बहुत कुछ था। यह एक बड़ा गांव था। उसने देखा कि सब जगह तारें और बिजली की लाइनें पड़ी हैं। लेकिन जब रात हुई तो कागबेनी में रोशनी नहीं थी। नेपाल के दूसरे गांवों की तरह इस गांव में भी अंधेरा था।

"पर ऐसा क्यों है?" मेंढक उलझन में था। इस प्रश्न का उत्तर उसके पास नहीं था। भाग्य से उसकी मुलाकात 'जो जोपा' से हो गई। यह मंगोलिया जाति की यहां पर सबसे बातूनी याक थी। जो पहाड़ी याक और मैदानी गाय की संकर (दोगली) औलाद थी। वह रास्ते के किनारे बने एक बाड़े में रहती थी। उसका काम था आते-जाते लोगों को बाड़े में बुलाकर फंसाना और बातें करना। उसने भक्तप्रसाद को गांव में आते देख लिया था। उसने भक्तप्रसाद से पूछा, "तो तुम हैरान थे कि कागबेनी में बिजली की तार और लाइन हैं पर रोशनी क्यों नहीं है? आओ, आओ भीतर, आ जाओ!"

भक्तप्रसाद सोच रहा था कि भीतर जाना ठीक होगा या नहीं, पर वह बाड़े में चला गया। "बैठो, बैठो, मैं सब बताती हूं," जो ने तुरंत बोलना शुरू किया, "एक बार यहां कुछ आदमी आए थे। वे इंजीनियर थे। इंजीनियर समझते हो न, वे काठमांडू से आए थे। उन्होंने वादा किया कि वे इस गांव में बिजली लाएंगे। इस घाटी में चलने वाली तेज हवाओं का इस्तेमाल पवन चक्की चलाने के लिए करेंगे। उनसे जेनरेटर के जरिए कागबेनी गांव के लिए काफी मात्रा में बिजली पैदा होगी। उन इंजीनियरों को यहां की हवाओं की शक्ति का अनुमान नहीं था। हवा खींचने के लिए पंखे जिस दिन लगाए गए उसी दिन हवाओं ने उड़ा दिए।"

"और इसीलिए तुम्हारे यहां सब जगह लाइनें तो हैं पर उनमें बिजली

की शक्ति नहीं है!" भक्तप्रसाद ने बीच में टोका। "ये आदमी लोग भी कितने बेवकूफ हैं!" मेंढक ने कहा।

"हां, हां हमें पता है," जो ने कहा, "पर अभी तक हमारा आपस में परिचय नहीं हुआ।"

"मैं एक मेंढक हूं..."

"यह तो मैं देख रहा हूं," जो ने बीच में कहा।

"मैं राना टिगरिना वंश का..."

"अच्छा, तो तुम वहां के हो!"

"मेरा घर काठमांडू में है। आगे का ठिकाना पता नहीं।"

"ठीक है, मैं जो जोपा, मिलीजुली, संकर नस्ल की, आधी याक, आधी मैदानी गाय हूं। आदमी लोग ऐसा जानबूझकर करते हैं। वे हमारे अंदर पहाड़ी इलाकों की ताकत और मैदानी इलाकों की प्रजनन शक्ति चाहते हैं।"

"मुझे याक के बारे में और कुछ बताओ," भक्तप्रसाद ने कहा। उसे इस बातूनी संकर की बातों में मजा आ रहा था।

"याकों को हिमालय का ऊंट कहा जाता है। पर मुझसे पूछो तो ऊंटों को रेगिस्तान का याक कहना चाहिए।" याक ने बताया।

"बताते जाओ, बताते जाओ," मेंढक ने जो को आगे बोलने के लिए उकसाया।

"सुनो, याक के शरीर पर घने बाल होते हैं। यह बर्फीली पहाड़ियों पर ऊंचाई पर रहता है। सर्दियों में जब मैदान ठंडे होते हैं गड़ेरिए इन्हें नीचे ले आते हैं। टट्टू की तरह याक भी बोझा ढोने वाला जानवर है। वे जीवित व मुर्दा दोनों तरह से लाभदायक हैं। इनके बालों से कपड़ा बुना जाता है। इनकी चमड़ी से बहुत तरह का सामान बनता है। इनके दूध से चट्टान की तरह सख्त छुर्पी चीज (पनीर) बनता है जिसे बहुत देर तक चबाना पड़ता है। इनका मांस खाने के काम आता है, "जो जोपा ने मुंह बनाते हुए कहा।

"तुम क्या करती हो, जो?"

"मैं, थोड़ा-बहुत जो भी मुझसे हो पाता है," जो ने अपनी हंसी को

छिपाते हुए कहा। "यात्री निवास की मेरी मालकिन को दूध चाहिए हो तो मैं कम से कम देती हूं। मैं आराम करती हूं। मैदान से आने वाले टट्टुओं से और पहाड़ों से आने वाले याकों से दोस्ती करती हूं लेकिन मैं घर पर ही रहती हूं।" कुछ सोचकर वह फिर बोली, "मैं बातों से सबका दिल बहलाती हूं और यात्रियों का मार्गदर्शन करती हूं। इस तरह मैं भी कुछ तो करती हूं।"

जिन दिनों जो का चलने-फिरने का मन नहीं होता वह कागबेनी के ऊपर बने चरागाहों में भी टहलने नहीं जाती। वह अपने बाड़े की खिड़की से झांकती रहती और गांव वाले खेतों से जो घास-फूस के गट्ठर ले जाते उन्हीं से अपना काम चलाती। जो हर समय कुछ चबाती रहती। भक्तप्रसाद ने सोचा कि यह याक की आदत नहीं हो सकती। जरूर कोई और बात थी।

उसने जो से पूछा, "ये तुम इतनी देर से क्या चबा रही हो?"

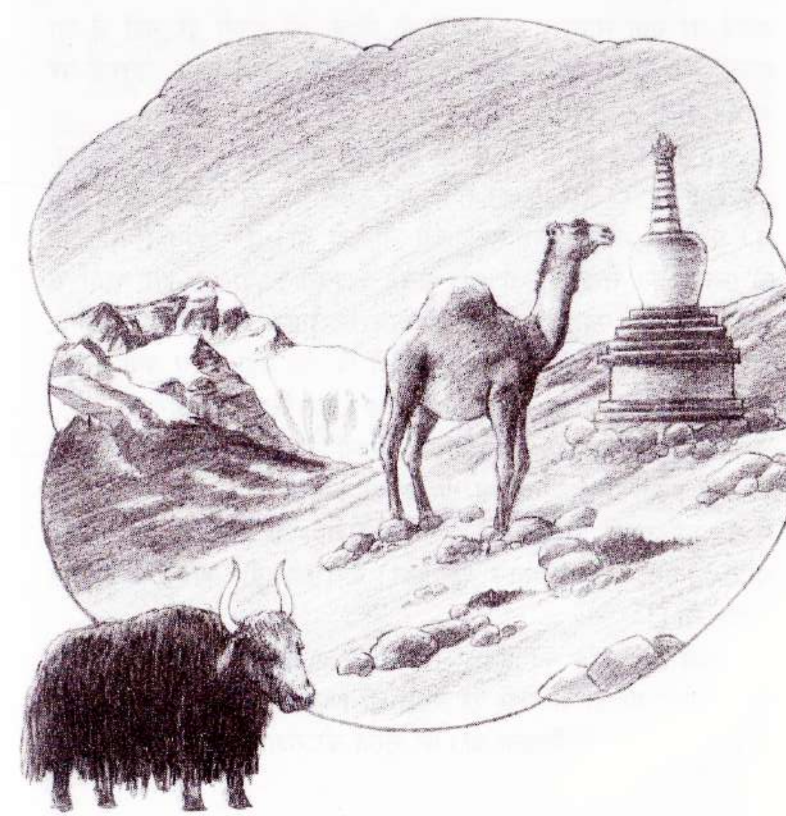
जो ने आंखें मटकाते हुए उत्तर दिया, "छुर्पी!" उसके इस मस्तमौला अंदाज से भक्तप्रसाद को लगा कि जो यात्रा के दौरान मिले बाकी लोगों से अलग थी। फुलमाया बहुत बुद्धिमान और गंभीर थी। प्रजापति चतुर था पर थोड़ा दबंग था। शालिग्राम को बस काम से मतलब था, जिंदगी की मौज-मस्ती से उसे कुछ लेना-देना नहीं था। जो जोपा सब कुछ जानती है पर किसी बात पर ज्यादा ध्यान नहीं देती है।

जमाने भर की खबरों और गप्पों के लिए जो अपने कान खुले रखती थी कि—कब जोमसोम में खराब मौसम के कारण उड़ान रद्द कर दी गई, कहां भूस्खलन की वजह से पैदल पुल बह गया और इसके अलावा भी कि काठमांडू में राजा ने पार्लियामेंट की वार्षिक सभा में क्या कहा।

भक्तप्रसाद ने जो की सलाह मान ली और कागबेनी में एक और दिन के लिए ठहर गया। जो ने एक चेतावनी दी, "अब आगे तुम्हें एकदम खड़ी चढ़ाई पर जाना है। मैदान के मेंढकों का ऊंचाई पर जी मिचलाने लगता है। चिकित्सा विज्ञान में इसे ए.एम.एस. (एक्यूट माउंटेन सिकनेस) कहते हैं। इसके लक्षण होते हैं—श्वास फूलना, मस्तिष्क में सूजन आना।" अंखह...जो ने गला खंखारा और शरारत से बोली, "पिछले साल कागबेनी

में एक कार्यशाला हुई थी। उसमें हिमालय रेसक्यू एसोसिएशन के निदेशक ने तो कम से कम यही बताया था।"

भक्तप्रसाद को संदेह हुआ कि पहाड़ी बीमारी के बहाने जो उसे कुछ दिन और कागबेनी में रोकना चाहती थी। वह कुछ और बातें करना चाहती थी। शाम को जो ने मेंढक को आगे की यात्रा के बारे में सलाह दी, "हम इस समय निचले मुस्तांग में हैं। नक्शे में नेपाल के बीच उभरी हुई एक जगह देख रहे हो? वह ऊपरी मुस्तांग है। इसे 'लो-लैण्ड' भी कहते हैं। बहुत कम लोग इसे देख पाए हैं। मेरी बात मानो, पहले तुम मुक्तिनाथ का मंदिर देखो, आशीर्वाद लो और फिर उत्तर दिशा की यात्रा करो।"





तीर्थयात्री मेंढक मुक्तिनाथ में

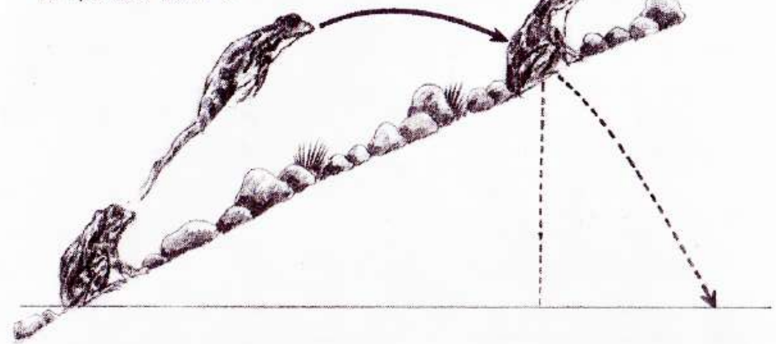
कठिन व सीधी चढ़ाई पर उछलते हुए भक्तप्रसाद को मुक्तिनाथ के पवित्र अहाते तक पहुंचने में पूरा एक दिन लग गया। मंद चाल से उछलते हुए भक्तप्रसाद को गति-विज्ञान का अध्ययन करने का पुनः मौका मिला। काली गंडकी नदी के साथ चलते हुए उसने जाना था कि कैसे हवा तेजी से आगे बढ़ने में मदद करती है या रुकावट डालती है। इस तरह की सीधी चढ़ाई पर एक साधारण उछाल किसी मेंढक को इतनी दूर नहीं ले जा सकती थी जितनी मैदान में ले जा सकती थी। दूसरी तरफ, उतराई पर अधिक तेजी से उतरना मुमकिन था।

भक्तप्रसाद ने महसूस किया कि ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ता जा रहा था, वह वैज्ञानिक की तरह सोचने लगा था। उसने बहुत-से चमत्कार देख लिये थे। धीरे-धीरे उसकी जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी। वह अपने सभी प्रश्नों के उत्तर जान लेना चाहता था। उसने निश्चय किया कि इस यात्रा से लौटने पर वह एक ज्ञानवर्धक शोधपत्र लिखेगा। उसका शीर्षक होगा, ''उभयचर यात्रा''। जो रिश्तेदार पूछते थे कि वह बड़ा होकर क्या बनेगा, अब वह सबको जाकर बताएगा कि वह एक 'वैज्ञानिक' बनेगा।

भक्तप्रसाद का दिमाग वैज्ञानिक मामलों में उलझा था। उसे अंदाजा ही नहीं हुआ कि वह कितना आगे निकल गया था। और कुछ ही देर में वह मुक्तिनाथ में था। अंधेरा हो चुका था। वह रास्ते के एक एकांत यात्री निवास में रात बिताने चल पड़ा। कल खोजबीन करने का पर्याप्त समय था।

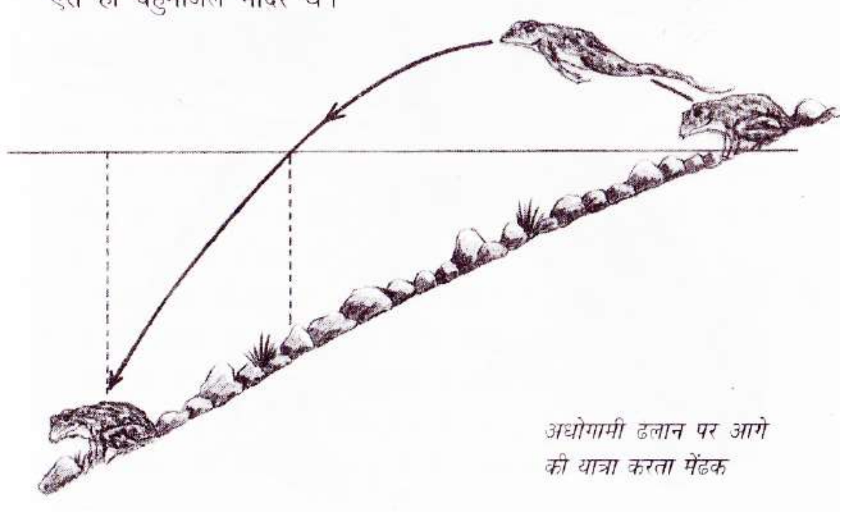
अगले दिन सुबह भक्तप्रसाद ने देखा कि मुक्तिनाथ पूर्व दिशा की ओर एक विशाल पहाड़ी की पेंदी पर स्थित था जिसकी वजह से निचली बस्ती में सूरज सुबह देर से दिखता था। पर सूरज की रोशनी पहाड़ी के पार घाटी

ऊपर की ढलान पर,
यह एक छोटी छलांग है



के दूर-दराज स्थानों में पहुंच पाती थी।

मेंढक ने देखा, आस-पास का नजारा सूखा था, पर जहां मुक्तिनाथ स्थित था उस पहाड़ी के पास पानी का एक सोता निकल रहा था। वह स्थान हरा-भरा था। पानी की कलकल और छायादार चिनार के पेड़ अपने पास बुला रहे थे। मंदिर का आकार तीनमंजिले पैगोडा की तरह था। इस मंदिर को देखकर भक्तप्रसाद को अपने घर जैसा लगा। काठमांडू में भी ऐसे ही बहुमंजिले मंदिर थे।



अधोगामी ढलान पर आगे
की यात्रा करता मेंढक



मुक्तिनाथ एक तीर्थस्थान था। इस पवित्र स्थान के दर्शनों के लिए छोटे-बड़े सभी जीव दुनिया के हर कोने से आते थे। यहां आकर सब ध्यान लगाते और सांसारिक कार्यकलापों से मुक्ति पाते। मंदिर के एक ओर पानी के 108 फव्वारे लगे थे। फव्वारों की टोंटियां पशु के सिर के आकार की थीं। भक्तप्रसाद को जो की याद आ गई। मानो 108 जो खड़ी हों।

पानी जहां जाकर गिरता था उस तालाब में भक्तप्रसाद को पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सभी दिशाओं के तीर्थयात्री जीव मिले। उनमें पश्चिम के जुम्ला जिले का एक जोड़ा था। नटखट तीतर, एक..नर और एक मादा। गीदड़ों का एक बड़ा परिवार परासी से आया था। परासी तराई का एक जिला है जो चितवन के पास है। एक कछुआ, जिसकी बोली किसी की समझ में नहीं आती थी। उसने इशारों से समझाया कि वह दक्षिण भारत से चलकर आया था। उसे यहां तक पहुंचने के लिए तीन साल घिसटना पड़ा।

जुम्ला से आए तीतर जोड़े को भक्तप्रसाद पसंद आया। उन्होंने भगवान शिव का मंदिर घूमने में उसकी मदद की। वे लोग पास के एक मकान के भीतर गए। वहां घुप्प अंधेरा था। भक्तप्रसाद ने एक लौ को देखा जो चट्टान की एक दरार से निकल रही थी। वह लौ धरती से निकलने वाली प्राकृतिक गैस से जल रही थी और उसका रंग नीला था। बहते पानी की आवाज से अंदाजा लगता था कि जमीन के नीचे कहीं सोता था।

एक साधु, जो लौ की रक्षा करता था, भक्तप्रसाद को देखकर धीरे-से कहा, "जानते हो, मुक्तिनाथ एक महत्वपूर्ण स्थान है। यहां आग पानी से मिलती है। मुक्तिनाथ सभी श्रद्धालुओं का स्वागत करता है। चाहे वे उत्तर के बौद्ध हों, या दक्षिण के हिंदू या फिर प्रकृति के पुजारी हों। जो धर्म में श्रद्धा न रखते हों उनका भी। यह एक शक्तिपुंज है। यहां ऊर्जा धरती की गहराइयों से निकलकर हमसे मिलने आती है और हमें याद दिलाती है कि हमें अपने ग्रह का सम्मान करना चाहिए।"

मंदिर के भीतरी परकोटे के अंधकार में नीली लौ भक्तप्रसाद की आंखों के आगे घूम रही थी। उसने अपने दिल में गहराई से धरती के सम्मान की जरूरत महसूस की। जब वह यात्रा के लिए निकला था तो उसका उद्देश्य

केवल सैर-सपाटा था, लेकिन अब इस कक्ष में लौ के सामने उसकी समझ में आया कि सब ठीक ही हुआ।

तीतर पति-पत्नी ने प्रार्थना की, फिर भक्तप्रसाद उनके साथ बाहर रोशनी में निकल आया। मेंढक और आगे जाना चाहता था इसलिए उसने विनम्रतापूर्वक तीतर जोड़े का जुम्ला चलने का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया। मंदिर के पास ही भक्तप्रसाद ने एक जगह लिखा देखा, 'पर्यटक सूचना'। वह भीतर गया। वहां एक महिला ने काउंटर के पीछे से पूछा, "आपको क्या चाहिए?" मेंढक ने रास्ते के बारे में सूचना मांगी।

महिला ने बताया, "आप वापस कागबेनी जा सकते हैं या उत्तर की ओर लो-मान्तांग जा सकते हैं। यह ऊपरी मुस्तांग की राजधानी है। या फिर आप पूर्व का रास्ता पकड़कर थोरंग ला पास की चढ़ाई कर सकते हैं। यह दर्रा इस तरफ मुस्तांग जिले से दूसरी तरफ मानंग जिले तक जाता है।" चढ़ाई एकदम सीधी, ऊंची और बहुत लंबी थी। बीच में कहीं कोई पड़ाव नहीं था। आज से पहले कोई भी मेंढक ए.एम.एस. के खतरे के कारण थोरंग ला नहीं आया था।

"जब हम बहुत ऊंचाई तक शीघ्रता से पहुंचते हैं तो शरीर को सांस लेने के लिए पूरी ऑक्सीजन नहीं मिलती है। इसलिए मैदानी भागों के दूसरे जीवों की तरह मेंढक भी बीमार पड़ जाते हैं या मर जाते हैं।" सूचना देने वाली महिला ने बताया। भक्तप्रसाद इतनी छोटी उम्र में मरना नहीं चाहता था। वह तो कभी भी मरना नहीं चाहता था। उसने जो जोपा का लो मान्तांग जाने वाला सुझाव मान लिया।





उच्च और शुष्क रेगिस्तान

दूसरे मेंढक शायद मुक्तिनाथ की यात्रा के बाद घर लौट गए होते। लेकिन सबके सामने अपनी यात्रा के बारे में शेखी बघारने की भक्तप्रसाद की भ्रमण की चाह अभी पूरी नहीं हुई थी।

ऊपरी मुस्तांग जाने की एक दूसरी वजह भी थी। मेंढक ने जो जोपा की बातों से अनुमान लगाया था कि वहां का समाज बाकी नेपाली स्थानों से अलग था। वहां आधुनिक विकास नहीं हो पाया था। ऊपरी मुस्तांग में अभी तक प्राचीन सभ्यता थी। वहां के तौर-तरीके बिलकुल नहीं बदले थे। उदाहरण के लिए वहां का अभी भी अपना राजा था, प्रजा उसका सम्मान करती थी। वह लो-मान्तांग नामक राजधानी में रहता था। शहर के चारों ओर दीवार बनी थी। लो राज्य के निवासी 'लोबा' कहलाते थे।

मेंढक ने मुक्तिनाथ में याक के सिर जैसे मुखवाले नलों से बहते पानी में आखिरी डुबकी लगाई और उत्तर दिशा में लो-मान्तांग की ओर चल पड़ा। जल्दी ही उसने बस्ती को पीछे छोड़ दिया और वस्तुतः रेगिस्तान जैसे क्षेत्र में प्रवेश किया। वह सूखे नदी तट और बंजर पहाड़ी ढलानों पर उछलता जा रहा था। पांवों के नीचे महीन मिट्टी थी और पीठ पर हिमालय का तपता सूरज था।

सभी तरह के उभयचर धरती और पानी दोनों जगह रह सकते हैं। जैसा कि नाम से पता लगता है मेंढक भी उन में से एक है। लेकिन यहां ऊंचाई पर दूर-दूर तक सूखा था। मेंढक जानता था कि आगे तिब्बत के पठार पर झीलें भी समुद्र की तरह नमकीन हैं। भक्तप्रसाद को अनुमान हुआ कि जिस ऊंचे और शुष्क स्थान पर वह आ गया था वह किसी मेंढक के लिए सुरक्षित जगह नहीं था।

सूरज अधिक तपने लगा था और धूल ज्यादा भुरभुरी हो गई थी।



भक्तप्रसाद का हलक सूखने लगा और खुले में रहने से त्वचा काली पड़ गई। पीठ पर दरारें पड़ने लगीं क्योंकि सूरज ने सारी नमी सोख ली थी। भक्तप्रसाद सोच रहा था कि अगर कोई मेंढक रेगिस्तान में खो जाए तो उसकी ऐसी ही हालत होगी। एकाएक उसे आभास हुआ, "अरे, मैं वैसा ही एक मेंढक हूं, रेगिस्तान में खोया हुआ!"

भक्तप्रसाद की परेशानी चरम सीमा पर थी कि उसकी नजर एक ओर हरियाली पर पड़ी। "लगता है कि वह कोई नखलिस्तान है," भक्तप्रसाद ने कहा। मरुस्थल में मृगतृष्णा यात्रियों को कैसे छलती थी, यह बात मेंढक जानता था। इसलिए वह हर जगह की जांच बारीकी से करता था। बार-बार आंखें झपकाता और गौर से देखता। उसने अपनी एक आंख बंद की और अपने सिर को अगल-बगल घुमाया। "यह छलावा नहीं है, सचमुच कोई नखलिस्तान है," भक्तप्रसाद ने कहा।

मुस्तांग में प्रायः ऐसा ही होता है। जब यात्री धूल और गरमी से निढाल होने लगते हैं, हरे मैदान उन्हें बुलाने लगते हैं। पर्वतों की तलहटी में अक्सर नाले बहते हैं, जिनका स्रोत ऊपर से पिघलने वाली बर्फ होती है। जल साफ और शीतल होता है। नहरें पानी को खेतों तक ले जाती हैं, जहां कड़ी मेहनत से तैयार जमीन में गेहूं, धान और आलू की खेती होती है। खेतों की बगल में छोटी-छोटी सपाट छतों के घर थे। चिनार और सरपत (एक नरम पौधा) के पेड़ झूमते थे। हरी-हरी घास थी और गीली मिट्टी थी।

यह जगह कुछ खास बुरी नहीं है, भक्तप्रसाद ने फैसला किया और लौट जाने का विचार छोड़ दिया। हरी-भरी घाटी से चलते हुए वह ऊंचे दर्रे तक गया। फिर दूसरी हरियाली घाटी से वह शीघ्रतापूर्वक उत्तर की ओर लो-मान्तांग की तरफ बढ़ने लगा। रास्ते में छेली, घेमी और चारंग नाम के सुंदर गांवों से होते हुए आगे बढ़ा। एक से दूसरे गांव के बीच पड़ने वाले ऊंचे स्थान पर भक्तप्रसाद ने एक ला-तोह देखा। ये कंकड़-पत्थर के पिरामिड जैसे टीले थे। यात्रा के सुरक्षित व कुशलता से पूरी होने के लिए यात्री मनौती के रूप में ये कंकड़-पत्थर चढ़ाते थे। कुछ ला-तोह इतने ऊंचे थे कि मानो शताब्दियों से यहां पत्थर जमा हो रहे हों।

भक्तप्रसाद एक ला-तोह पर सांस लेने के लिए रुका। उसने अपने माथे का पसीना पोंछा, फिर उन रास्तों को मुड़कर देखा जहां से वह आया था। निचले मुस्तांग से अब तक उसने काफी रास्ता तय कर लिया था। नीलगिरी हिमाल के सफेद हिस्से, जिन्हें उसने जोमसोम से नजदीक से देखे थे, अब बहुत दूर नीचे दिख रहे थे।

हिमालय का यह उत्तरी भाग नेपाल में है, यह सोचकर भक्तप्रसाद बहुत खुश था। वह जानता था कि देश के ज्यादातर भाग में बर्फीली शृंखला तिब्बत के साथ उत्तरी सीमा बनाती है। काठमांडू, पोखरा, नारायणघाट और नेपाल में लगभग हर जगह से हिमालय की चोटियों को देखने के लिए उत्तर की ओर घूमना पड़ता है। लेकिन यहां वह दक्षिण की ओर देख रहा था!

इस बात को समझने में उसे कुछ समय लगा। भक्तप्रसाद नेपाल के भूगोल की विविधता पर चकित था। उसे याद आया कि शालिग्राम ने बताया था, "मुस्तांग बहुत सूखा स्थान है। जो बादल बंगाल की खाड़ी से उठते हैं वे हिमालय की रुकावट को पार नहीं कर पाते हैं और हवा के रुख के साथ दक्षिणी ढलानों पर बरस जाते हैं।" पहाड़ी शृंखला के उत्तरी भाग में होने के कारण मुस्तांग 'वर्षा की छाया' में था। इसलिए नीचे पोखरा में इस समय बरसात का मौसम था और यहां ऊपर आसमान एकदम साफ था और नजारा दूर-दूर तक दिख रहा था।





अंतिम ला-तोह

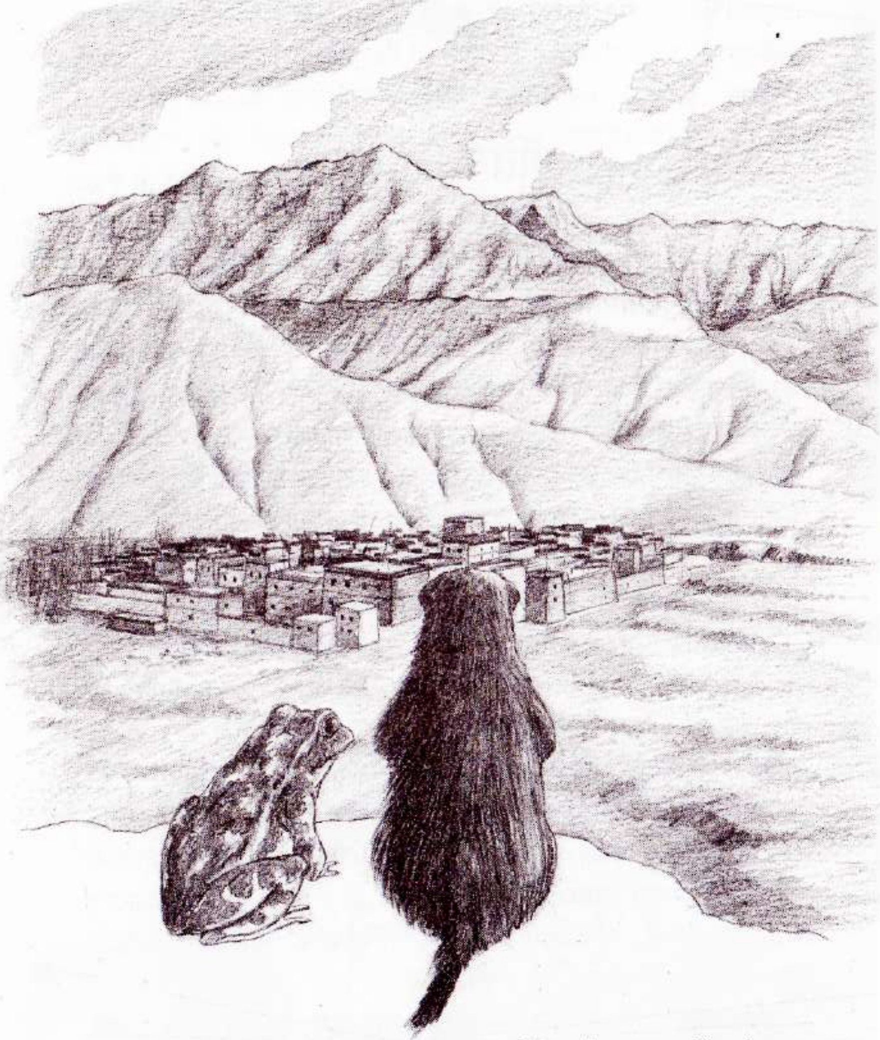
घाटी तल से ऊपर ला-तोह तक जाना और नीचे आना, फिर ऊपर जाना एक अंतहीन सिलसिला था। भक्तप्रसाद एक बार फिर निराश होने लगा था। पर उसने हिम्मत जुटाई और प्रार्थना की कि बस यह अंतिम ला-तोह हो। वह एकाएक सामने चट्टान से जा टकराया जहां एक तिब्बती बौद्ध प्रार्थना सुंदर शब्दों में अंकित था, "ओम मणि पद्मे हुम"।

"ओम मणि पद्मे हुम!" चार पांव वाले, एक रोएंदार प्राणी ने उच्चारित किया। वह पीछे से आया और चट्टान के पास आकर रुक गया। उसने लंबी सांस ली, लंबी सीटी बजाई और घाटी में नीचे झांककर देखा, "अरे, लो-मान्तांग आ गया!" उसने कहा।

भक्तप्रसाद खुश हो गया। इस यात्री ने ठीक जगह को पहचान लिया था। उस प्राणी का थूथन कड़ा था, लंबी मूंछें थीं, शरीर लहरिएदार था और बाल ऐसे झिलमिल चमक रहे थे जैसे उनमें तेल लगा हो। उसकी आंखों में शरारत थी और चेहरे पर मक्कारी थी। उसने भक्तप्रसाद को पास से निकलते देख अचानक सिर हिलाकर पूछा, "ऐ, तुम मेंढक हो न? बताओ, मुझे कैसे पता? मैंने तुम्हारे जैसे जीव नीचे पोखरा और भारत में देखे हैं। तुम यहां इतनी दूर क्या कर रहे हो? रास्ता भूल गए क्या? हा-हा...!" उसने अपने आगे वाले पांव से मेंढक की पीठ पर थपकी दी और अपने फूहड़ मजाक पर हंसने लगा।

भक्तप्रसाद ने बदला लेने की बजाय ईमानदारी से उत्तर दिया, "नहीं जनाब, मैं रास्ता नहीं भूला हूं। मैं काठमांडू से आया हूं और लो-मान्तांग जा रहा हूं। मेरा नाम भक्तप्रसाद है।"

"वह रहा, देखो नीचे," उस प्राणी ने कहा और फिर अपना परिचय दिया, "मेरा नाम पेंबा मूसा है। लेकिन मैं चूहा नहीं हूं जैसा कि मेरे नाम



से लगता है। मैं गिलहरी हूं और मेरे जैसे और बहुत हैं। वे सब लो-मान्तांग के बाहर ऊंचाई पर हैं। एक स्कूल मास्टर मैदानों से पढ़ाने ऊपरी मुस्तांग आया था। मास्टर ने पहले कभी ऐसी गिलहरी नहीं देखी थी। मैं चूहे जैसा दिखता था इसलिए उसने मेरा नाम 'मूसा' रख दिया।

लेकिन मुझे इस नाम से कोई आपत्ति नहीं है क्योंकि जब मैं व्यापार के लिए नीचे दक्षिण की ओर जाता हूं तो यह नाम मेरे बड़े काम आता है। मैं एक व्यापारी हूं। जब यहां सरदी होती है और जमा देनी वाली ठंड पड़ती है तब मैं पूरे नेपाल और भारत की यात्रा करता हूं।''

बात बदलते हुए पैंबा ने अपने थूथन से ठोस जमीन की ओर इशारा किया। वहां सपाट छत वाले घर थे और चारदीवारी बनी थी। उसने बताया, ''लो-मान्तांग में लोबा लोग रहते हैं। गांव के चारों ओर दीवार है। ये लोग अपना एकमात्र बड़ा दरवाजा शाम होते ही बंद कर लेते हैं।'' भक्तप्रसाद को ज्ञात हुआ कि चारदीवारी बनाने और दरवाजा बंद करने की परंपरा क्यों शुरू हुई। यह प्राचीन हिंसा के कारण शुरू हुई। तब उत्तर से आए डाकू लो-मान्तांग और दूसरे एकांत स्थानों पर हमला करते थे। हालांकि अब डाकू नहीं बचे थे फिर भी परंपरा चल रही थी।

पैंबा ने देखा, सूरज डूबने ही वाला था और गेट बंद होने का भी समय हो चला था। वह चिल्लाया, ''अरे, जल्दी चलो, नहीं तो हम यहीं बंद हो जाएंगे!''

जो रास्ता लो-मान्तांग जाता था, सीधा ढलान था। पैंबा पलक झपकते गायब हो गया। मेंढक बहुत थक गया था। उसने फुदकना छोड़ दिया और गिलहरी के पीछे फिसलता चला गया। जैसे ही वे दोनों फिसले, दरवाजा बंद होने की चूं-चूं सुनाई पड़ी।

''अरे, गेट तो बंद हो गया! इतनी लंबी यात्रा के बाद मुझे खुले में नहीं सोना था,'' पैंबा ने कहा और फिर अपनी सांस को काबू में लाते हुए बोला, ''चलो, मेरे साथ चलो भक्तप्रसाद, मुझे मालूम है अब कहां जाना है।''

पैंबा मेंढक को अपने साथ पत्थर की बनी तंग गलियों में से एक यात्री निवास में ले गया। इसे एक औरत चलाती थी। पैंबा ने बताया, उसका नाम हेमा मालिनी था। भक्तप्रसाद चौंका, क्योंकि यह नाम तो हिंदी फिल्मों की एक पुरानी अभिनेत्री का था। पैंबा मेंढक की हैरानी समझ गया और बोला, ''एक समय 'डोल्मा' ऊपरी मुस्तांग की मशहूर सुंदरी थी। तब से यहां सब लोग कहते हैं 'डोल्मा हेमा मालिनी की तरह सुंदर है।' बस,

इस तरह यहां हेमा मालिनी नाम चल पड़ा।''

बातें कहते हुए वे एक कमरे में गए। वहां काफी लोग थे, खूब शोर था, ठहाके लग रहे थे और लकड़ी का धुआं फैला था। एक कोने में कुछ लोग ताश खेल रहे थे। दूसरी तरफ बच्चे गंदी दरी पर लोट लगा रहे थे।

''अरे पैंबा आओ, आओ! नटखट, तुम मैदान से फिर आ गए? ये तुम्हारे साथ कौन अजनबी है?'' भक्तप्रसाद को देखकर उस औरत ने पूछा। उसने लुंगी जैसा कुछ पहन रखा था। उसके नाक-नक्श कोमल और चेहरा गोल था। आवाज ऊंची पर लुभावनी थी। जब वह हंसी तो लालटेन की धीमी रोशनी में उसका सोने का दांत चमक उठा।

''नमस्ते अजीला! यह भक्तप्रसाद है, मेंढक। हमलोग ऊपर रास्ते में मिले थे। मैं इसको आस-पास घुमा रहा हूं।'' पैंबा ने शालीनता से उत्तर दिया। फिर भक्तप्रसाद की ओर घूमा और उसे बताया, ''यह डोल्मा है। हिमालय के उत्तरी भाग में यह सबसे सुंदर चेहरेवाली स्त्री है।''

''आओ, इधर बैठ जाओ,'' डोल्मा ने खिड़की के पास रखी एक नीची मेज की ओर इशारा करते हुए कहा। डोल्मा ने दो कटोरियों में 'छम्पा' और दो सुंदर कपों में चाय लाकर मेंढक और गिलहरी के सामने रखी। फिर वह और ग्राहकों की तरफ चली गई। पैंबा ने भक्तप्रसाद को सूखे छम्पा आटे को चाय के साथ मिलाकर खाने का तरीका बताया। वह नमकीन था और उसका स्वाद याक के मक्खन जैसा था। मेंढक को यह चाय पसंद आई। ''इसमें पॉपकॉर्न डालकर पिओ तो सबसे अच्छी लगती है।'' पैंबा ने फुसफुसाकर कहा, मानो कोई गहरा रहस्य हो।

फिर पैंबा भक्तप्रसाद को लो-मान्तांग की सैर कराने बाहर ले गया। सपाट छतों वाले घरों के बीच गलियां घुमावदार और तंग थीं। याक और टट्टू नीचे रहते थे और आदमी ऊपर की मंजिल में रहते थे। उन्होंने काले और बड़े गुंबद देखे जहां ध्यानमग्न भगवानों की मूर्तियां थीं। ये दो-तीन मंजिल ऊंचे थे। शाम हो गई थी। साधु एक स्वर में प्रार्थना कर रहे थे। घंटे-घड़ियाल बज रहे थे। धूप-बत्तियों की सुगंध हवा में फैल गई थी और लो-मान्तांग के लोग अपने छोटे-से नगर की सरक्षा और समृद्धि के लिए प्रार्थना कर रहे थे।

वे दोनों एक लंबी सफेद इमारत के सामने से गुजरे। वहां छज्जे पर एक कुत्ता भूंक रहा था। वह गेट के भीतर बने भवन की रखवाली कर रहा था। ''यह राजा का महल है,'' पैंबा ने ऊपर देखते हुए कहा और बताया, ''हालांकि मुस्तांग नेपाल राज्य का ही एक भाग था पर बहुत समय पहले काठमांडू के राजा ने मुस्तांग में अलग राजा के लिए अनुमति दे दी थी।



वहां के राजा के हाथ में बहुत ताकत नहीं थी पर सब लोग उसका बहुत सम्मान करते थे।''

भक्तप्रसाद ने पैंबा से कहा, ''मैं ऊपरी मुस्तांग के रेगिस्तानी उजाड़ में इतना सुंदर शहर देखकर हैरान हूं। इतने सुंदर गुम्बा, इतने लोग, राजा और राजमहल भी है!'' पैंबा ने सिर हिलाया और उत्तर दिया, ''यह उजाड़ हमारा अपना घर है। अब वापस चलते हैं, कल फिर चलना है। मुझे अपने परिवार से मिलने ऊपरी मैदान में जाना है।''

वे दोनों रात बिताने यात्री निवास की ओर चल पड़े।



छंगतांग की सीमांत गिलहरियां

प्रातः काल डोल्मा यानी हेमा मालिनी के यात्री निवास में अपना बिल चुकाकर पैंबा गिलहरी और भक्ते मेंढक लो-मान्तांग के मुख्यद्वार से बाहर निकल गए। वे चलते-चलते एक नदी पर पहुंचे, उसे पार किया और उत्तर की ओर बढ़ गए। कुछ घंटों के बाद वे ला-तोह पहुंच गए। भक्तप्रसाद के लिए यहां एक और आश्चर्य था। चट्टानों की शृंखला के पार कोई ढलान-सी घाटी नहीं थी। धरती एकदम समतल थी और लगता था कि हमेशा ऐसी ही रहेगी।

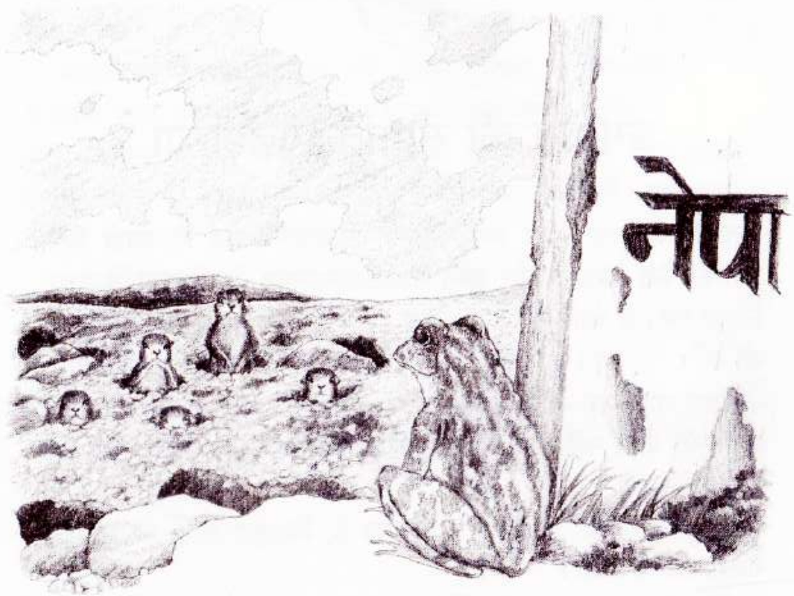
''ऐ पैंबा, देखो, यह जगह तो सपाट है, बिलकुल तराई की तरह!'' भक्तप्रसाद ने कहा।

पैंबा ने समझाया, ''सुनो भक्ते, तराई समुद्र से केवल 1,000 फुट की ऊंचाई पर है और हम यहां 13,000 फुट ऊंचाई पर हैं। छंगतांग एक पठार है। यह नेपाल के इस भाग से लेकर तिब्बत में दूर तक फैला है। अब तुम्हें पता लगा कि तिब्बत को ऊंचा पठार क्यों कहते हैं!''

मेंढक बिना पेड़ों वाले समतल मैदान में उछलने लगा और पैंबा खिसकने लगा। वे सीमेंट से बने एक खंभे के पास पहुंचे। जमीन पर बने इस तीन फुट ऊंचे खंभे के अलावा मीलों तक आस-पास कुछ नहीं था।

''बीचों-बीच खड़ा यह खंभा यहां क्या कर रहा है, पैंबा,'' मेंढक ने हैरानी से पूछा।

''इस समय हम नेपाल के किनारे पर हैं और यह खंभा नेपाल व तिब्बत के बीच की सीमारेखा बनाता है जो कि इस निशान से आगे है। बहुत समय पहले नेपाल और चीन के अफसरों की एक टीम इस जगह आई थी। उन्होंने बड़े-बड़े नक्शों पर कुछ नापा और फिर यह खंभा लगाया।''



इस सीमेंट के खंभे पर निश्चित रूप से नेपाली भाषा में लिखा था "नेपाल न. 22"। उसके नीचे नेपाली कैलेंडर वर्ष लिखा था "2019"। दूसरी ओर कुछ चीनी लिखावट थी। "सीमा पर ऐसे सैकड़ों खंभे लगे हैं," पैंबा ने बताया। फिर भक्तप्रसाद की ओर शरारत से देखते हुए उसने कहा, "अब जरा बताओ तो हम कहां आ गए हैं? आओ भक्ते, हमारे घर पर तुम्हारा स्वागत है!"

मेंढक हैरान था, क्योंकि वहां आस-पास कोई घर नहीं था। छंगतांग के इस मैदान में तो कोई कुटिया वगैरह भी नहीं दिख रही थी। जमीन सब जगह गड्ढों से भरी थी, बिलकुल चेचक के निशानों की तरह। भक्तप्रसाद ने गड्ढों को जरा गौर से देखा, हरेक गड्ढे में से एक गिलहरी का चेहरा झांक रहा था। वे सब पैंबा के चचेरे भाई-बहन और रिश्तेदार थे। वे सब एकटक भक्तप्रसाद को ही देख रहे थे। 'यह अजनबी, मस्सों से भरा जीव निश्चय ही छंगतांग का रहने वाला नहीं है,' वे गिलहरियां सोच रही थीं।

"ऐ, तुम सब बाहर आओ," पैंबा चिल्लाया। "यह मेरा मित्र भक्तप्रसाद है। यह काठमांडू से आया मेंढक है।" एकाएक वातावरण में शोर गूंजने लगा, धूल उड़ने लगी। अनेक गिलहरियां आपस में टें टें करतीं, अपनी खोखलों से बाहर, इस मेहमान को देखने लपकीं। शोर में सुनाई दे सके इसलिए पैंबा ने चीखते हुए भक्तप्रसाद का परिचय करवाया, "यह भक्तप्रसाद है। काठमांडू का एक साहसी मेंढक। खोजी प्रवृत्ति का है। इसने पूरे नेपाल की यात्रा की है और अब खंभा नं.22 तक आ पहुंचा है।"

गिलहरी स्वभाव से एक जिज्ञासु जीव है। ये हर समय क्या और क्यों की खोजबीन में लगी रहती हैं। ये सब अपने देश के बारे में बहुत-सी बातें जानना चाहती थीं। उन्होंने भक्तप्रसाद से काठमांडू घाटी के विषय में बताने को कहा। भक्तप्रसाद ने जब उन्हें रत्ना-पार्क के व्यस्त बस स्टॉप, असन बाजार, मंदिरों, दूकानों और लोगों के धक्कम-धक्का के बारे में बताया तो सबने पूरे ध्यान से सुना। उन लोगों ने दूसरी जगहों के बारे में बताने को कहा जहां-जहां वह गया था। फिर तो चितवन, पोखरा झील, घांद्रुंग पर्वत के दृश्य और मुक्तिनाथ की नीली लौ के बारे में बताते हुए गोधूलि घिर आई।

किसी ने कंटीली जंगली झाड़ियों को इकट्ठा किया और आग जला दी। भक्तप्रसाद ने ऊपर रात के आसमानी आकाश में सितारों को चमकते हुए देखा। कोई इक्तारा उठाकर बजा रहा था, कोई ड्रम पीट रहा था। यह तारों की छांव में मौज-मस्ती का समय था। तभी एक गिलहरी की तीखी आवाज ने सबका ध्यान आकर्षित किया। वह बता रही थी, "देवियो और सज्जनो, इस क्षेत्र की सभी गिलहरियां पैंबा की वापसी और अपने मेहमान मेंढक के स्वागत में उत्सव मनाना चाहती हैं। तो उत्सव शुरू होता है!"

छोटी-बड़ी सभी गिलहरियां अपने गड्ढों से बाहर निकलकर गाने और नाचने लगीं। दो पांवों पर खड़े होकर आगे-पीछे कूल्हों को मटकाते हुए ये छंगतांग का घसीटा नाच कर रही थीं। भक्तप्रसाद का शरीर लचीला नहीं था। वह छंगतांग का घसीटा नृत्य नहीं कर पाया। इसलिए उसने इचंगु का नाच दिखाया जो मेंढक खेतों में करते थे। इसमें हाथों को आगे की ओर ढीला छोड़ देते हैं, हथेली नीचे की ओर रहती हैं और घुटनों के

घुमाव से संगीत की धुन के साथ कूदते हैं। जब गिलहरियों ने इचंगु कूद डांस करने की कोशिश की तो सब तरफ उल्लास छा गया, पर वे मेंढकों की तरह नहीं कूद सकती थीं।

तारों की छांव में हो रही इस मस्त पार्टी का शोर बिना पेड़ वाले क्षेत्र में दूर-दूर तक पहुंच रहा था। कई मील दूर तिब्बत में बंजारे याक के बालों से बने तंबुओं में सोने की तैयारी कर रहे थे, लेकिन सीमा पर हो रही गिलहरियों की टें टें और चीख-पुकार ने उन्हें जगाए रखा। ध्यान से सुनने पर ड्रम पीटने और दूसरी मिली-जुली आवाजों के शोर में एक ऊंची टर्र-टर्र की आवाज बार-बार सुनाई दे रही थी, "हे...मैं हीरो हूं, हे...मैं हीरो हूं!"

नीचे लो-मान्तांग में यात्री निवास की मालकिन डोल्मा उर्फ हेमा मालिनी खिड़की पर गई, उसने गौर से सुना और बोली, "मैं इस आवाज को पहचानती हूं। यह काठमांडू का मेंढक भक्ते है!" उसने अपने मेहमानों को बताया।

कैली के साथ सफर

मस्ती भरी पार्टी के बाद सब देर तक सोते हैं और जब जागते हैं तो अलसाए और चिड़चिड़े होते हैं। अगले दिन सवेरे जब भक्तप्रसाद जागा तो सीमा खंभा नं.22, पैंबा मूसा के भूमिगत घर के पास सब शांत थे। उसने देखा, रात की उछल-कूद का कोई निशान वहां नहीं था। बस, जमीन रौंदी हुई थी और एक ड्रम था जो कोई ले जाना भूल गया था।

पैंबा अभी खर्राटे भर रहा था। भक्तप्रसाद बाहर निकला और धूल पर अपने पैरों के अनगिनत निशान बना दिए। यह यात्रा का अंत प्रतीत हो रहा था। वह नेपाल की सीमा छू चुका था। वह तिब्बत जाना चाहता था, मगर नहीं गया, क्योंकि मेंढक के पास न तो पासपोर्ट था, न ही वीसा। वह नहीं जा सकता था। एक देश से दूसरे देश में जाने के लिए वीसा जरूरी था। अब वह क्या करेगा?

मेंढक सोच-विचार में डूबा था। उसी समय जम्हाइयां लेतीं, अपने शरीर को तानतीं एवं आंखें मलती हुईं एक-एक करके गिलहरियां अपने गड्ढों से बाहर निकल आईं। पैंबा भी बाहर निकल आया और उसने मेंढक से पूछा, "अरे यार, तुम इतने गहरे सोच में क्यों डूबे हुए हो?" भक्तप्रसाद ने बताया कि वह सोच रहा था कि अब क्या करे?

सबकी मदद के लिए तैयार रहने वाली गिलहरियों ने तुरंत सभा बुलाई। एक बुजुर्ग ने सलाह दी कि मेंढक नेपाल के सुदूर पश्चिम में बझांग और बाजुरा जिलों की यात्रा करे। किसी ने कहा कि मेंढक नेपाल के सुदूर-पूर्व के स्थान देखे, क्योंकि पश्चिमी भाग उसने काफी देख लिया है। एक युवा गिलहरी ने सुझाव दिया कि मेंढक यहीं एक गड्ढा चुन ले और छंगतांग में ही बस जाए। लेकिन पैंबा ने इन सबसे इनकार कर दिया। बझांग और बाजुरा नेपाल के पूर्वी भाग में हैं पर यहां से बहुत दूर

हैं। यहां हम लोगों के साथ गड्ढों में रहने का प्रश्न ही नहीं उठता है क्योंकि मेंढक सर्दियों में इतनी ऊंचाई पर जीवित नहीं रह सकते हैं।

पैंबा ने स्वयं एक घोषणा की, "भक्ते को डोल्पो जाना चाहिए और वहां मठों को देखना चाहिए। लो-मान्तांग से एक काफिला शीघ्र ही उत्तरी डोल्पो शेय गुम्बा जाने वाला है। मेंढक उनके साथ जा सकता है।" इस बात पर सब सहमत हो गए। भक्तप्रसाद को भी ठीक लगा तो यही तय हुआ।

छंगतांग बस्ती का पूरा गिलहरी समुदाय भक्तप्रसाद के साथ ला-तोह तक गया। अपनी सीमा समाप्त होने पर सबने हाथ हिलाकर मेंढक को विदा किया। पहाड़ी ढलान पर उछलते हुए वह वापस लो-मान्तांग चल पड़ा। जब वह चारदीवारी से घिरे मैदान में पहुंचा तो काफिला डोल्पो जाने के लिए तैयार था। मेंढक को कैली नामक याक के हवाले कर दिया गया। एक हलके रंग के बालों वाली यह याक मुस्तांग के राजा की ओर से उपहार में छम्पा के बोरे को शेय गुम्बा ले जा रही थी। मेंढक एक बोरे पर जाकर बैठ गया। याकों की कतार ने अपने कोचवानों के साथ डोल्पो की यात्रा शुरू की। वे सब लगातार बहुत दिनों तक पश्चिम की ओर चलते रहे।

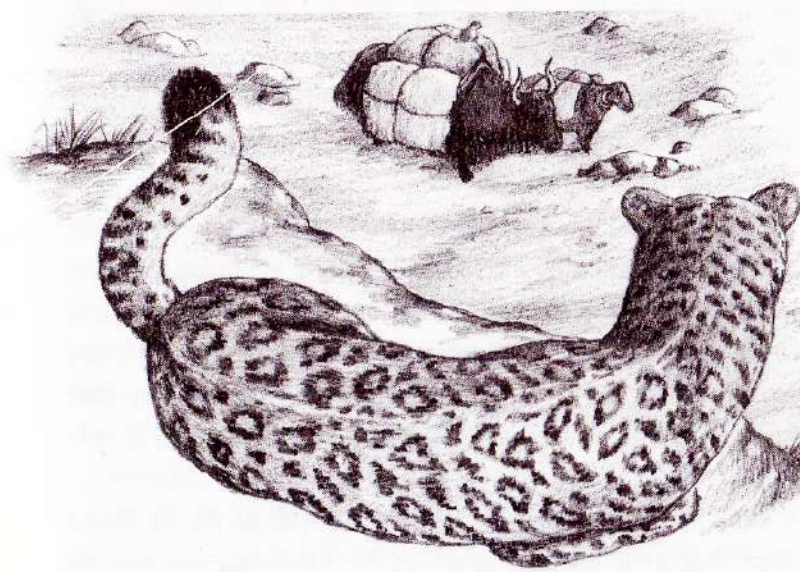
भक्तप्रसाद को अपनी यात्रा में जितने साथी मिले थे उनमें कैली सबसे कम बोलने वाली प्राणी थी। जब तक कोई खास जरूरत नहीं हो वह नहीं बोलती थी। एक शब्द भी फालतू नहीं बोलती थी। अधिकतर घर्र-घर्र की आवाज से काम चला लेती थी। यह याक रंभाती नहीं थी, जुगाली भी नहीं करती थी। जब वह एक झरने पर रुकी तो मेंढक का ध्यान खींचने के लिए उसने अपनी पीठ हिलाई और बोली "पानी"। इसी तरह, यात्रा के दौरान भक्तप्रसाद इशारों को समझना सीख गया था। जैसे 'कैंप', 'खाना', 'शू फ्लाई'। 'शू फ्लाई' का मतलब था परेशान करने वाले मक्खी-मच्छरों को हटाना, जहां उसकी पूंछ नहीं जाती थी।

रास्ता बहुत ऊबड़-खाबड़ था। डोल्पो पहुंचने तक भक्तप्रसाद को चुप रहना पड़ा। बातचीत के अभाव में मेंढक के पास इधर-उधर देखने-समझने का काफी समय था : दिन की बदलती रोशनी, बादलों का बदलता

आकार और घंटियों की टनटनाहट के साथ जाते हुए कारवां पर अपनी प्रश्नाकुल निगाहों से चट्टानों से झांकती नीली भेड़ें।

भक्तप्रसाद को एकाएक लगा कि कैली का शरीर अकड़ रहा है। वह चलते-चलते रुक गई। उसने ऊपर एक चट्टान की ओर जुनीपर झाड़ी की तरफ इशारे से बताया, 'हिमचीता'। सचमुच, एक समतल चट्टान पर हिमचीता शाही अंदाज में लेटा था। यह हिमालय का सबसे दुर्लभ और मायावी प्राणी था। यह बड़ा बिल्ला अपनी लंबी और रोएंदार पूंछ को इधर से उधर फटकार रहा था। मानो याक, बोरे और मेंढक के अनोखे मिलन पर हंस रहा हो।

हिमचीते और भक्तप्रसाद की नजरें मिलीं और वह अलसाता हुआ धीरे-धीरे उठा। फिर उसने अपनी मांसपेशियों को झटका और पलक झपकते ऊपर की ओर एक चट्टान से दूसरी पर छलांग लगाते हुए गायब हो गया। कैली ने अपना सिर घुमाया और पीठ पर बैठे मेंढक पर एक नजर डाली, जैसे कह रही हो, "कैसा रहा यह नजारा?"





म्या चला उलटी चाल

कैली की पीठ पर बैठे हुए भक्तप्रसाद ने प्रकृति को करीब से देखा। पथरीले क्षेत्र में भोर को दोपहर में और दोपहर को सांझ में बदलते देखना बड़ा मोहक था। लेकिन भक्ते यह कब तक देखता! उसे थकान होने लगी क्योंकि उसका साथी एक चुप्पा याक थी। भक्ते ने गुनगुनाने की कोशिश की, पर लय और संगीत किसी मेंढक के बस की बात नहीं थी। उसने काफिले के दूसरे जानवरों से बात करने की कोशिश की, लेकिन दूरी होने से कर नहीं पाया।

भक्तप्रसाद को चिंता सताने लगी कि अगर बात करने को कोई नहीं मिला तो वह बोलना ही भूल जाएगा। मेंढक अगर टर्र-टर्र न करे तो वह तो आधा मेंढक रह जाएगा। अब वह क्या करे? मेंढक ने आसमान की ओर देखा और जोर से टर्राने लगा।

उसकी प्रार्थना फल लाई। किस्मत से भक्तप्रसाद की पुकार पास से निकलते म्या ने सुन ली। म्या झबरे बालों वाला पहाड़ी बकरा था। उसे गप्पें हांकने में मजा आता था।

म्या की जिंदगी में जितने दुख थे वह उतना ही मस्त रहता था। वह एक कुम्हार का बकरा था। इस काफिले के साथ वह तिब्बत का नमक डोल्पो से नीचे नेपाल की घाटियों में ले जाता था और जो अनाज डोल्पो में नहीं मिलता था उसे ऊपर लाता था। उसकी पीठ पर दो पुराने ऊन के बोरे लटके थे। एक से दूसरे का संतुलन बना हुआ था। म्या उनमें नमक ले जाता था। सामान ढोने का यह तरीका बस यहां डोल्पो में जारी था, बाकी सब जगह समाप्त हो चुका था।

दोनों बातें करने लगे। मेंढक बकरे के लिए दुखी था कि उसे कितना बोझा ढोना पड़ता है। "मेरा खयाल था कि भेड़-बकरियां लाड़-प्यार की

जिंदगी बिताती हैं। उन्हें खाने को बढ़िया घास और मनचाहे चरागाह मिलते हैं," मेंढक ने कहा।

"ओह मूर्ख मेंढक!" म्या ने दोस्ती के अंदाज में कहा। वह निस्संकोच ऐसी ही बात करता था। "देख नहीं रहे हो इन भरपेट भोजन करने वाली भेड़-बकरियों का हाल, जिन पर तुम्हें तरस आ रहा है! मनुष्य हमें खिला-खिलाकर हलाल करने के लिए मोटा-ताजा करते हैं। दशहरा आया नहीं कि सबके सिर धड़ से अलग और कड़ाही में! मैं तिब्बत के नमक के बोरे ढोना ज्यादा पसंद करता हूं, बजाय इसके कि जिसको मैं जानता नहीं उसके खाने के लिए पकाया जाऊं, समझे!"

भक्तप्रसाद को अच्छा लगा कि म्या हंसना जानता था। कठिन जिंदगी से समझौता करने का यह उचित तरीका था। बकरियां भी शेय गुम्बा के रास्ते से जा रही थीं, इसलिए म्या, कैली और मेंढक की तिकड़ी बन गई। अब वह किसी से बात कर पा रहा था तो यात्रा छोटी लग रही थी। भक्तप्रसाद को याक की पीठ से बकरे की पीठ पर कूदने में और फिर वापस आने में खूब मजा आ रहा था। म्या ने इस खेल का नाम 'पीठ से पीठ' रख दिया।

प्रकृति उजाड़ थी और डोल्पो में जीवन कठिन था। नेपाल का यह सबसे बड़ा, लेकिन सबसे दूरस्थ इलाका था। म्या ने बताया, "बाहर से लोग शायद ही कभी यहां आते हैं। डोल्पो के लोगों के जीवन में बिजली, पानी, बच्चों के लिए स्कूल जैसे आराम के कोई साधन नहीं हैं। पर उनके अकेलेपन ने पुरानी परंपराओं और धर्म को जीवित रखा है।"

अंतिम दिन जब वे शेय गुम्बा पहुंचे काफिला एक छोर्तेन (स्तूप) के आगे से निकला। कैली ने दायीं तरफ से चक्कर लगाना शुरू किया। भक्तप्रसाद जानता था कि यह तरीका गलत था। हिंदू मंदिरों व बौद्ध मठों में किसी भी धार्मिक वस्तु के सम्मान के लिए बायीं ओर से परिक्रमा करते हैं, लेकिन कैली छोर्तेन यानी स्तूप की परिक्रमा विपरीत दिशा में क्यों कर रही है?

भक्तप्रसाद ने मुड़कर देखा कि दूसरे याक और म्या भी वैसे ही फेरी लगा रहे थे, घड़ी की विपरीत दिशा में। 'या तो डोल्पो के सब लोग पागल हैं या मुझे कुछ जानना बाकी है,' भक्तप्रसाद ने सोचा। उसने कुम्हार के बकरे म्या



को पुकारा और पूछा, "यहां डोल्पो में छोर्तेन की परिक्रमा सब विपरीत दिशा में क्यों कर रहे हैं जबकि नेपाल में सब जगह घड़ी की दिशा में करते हैं?"

म्या ने समझाया, "डोल्पो में पूजास्थलों की परिक्रमा दायीं ओर से इसलिए करते हैं क्योंकि हम 'बौन पो' धर्म का पालन करते हैं। यह धर्म हिमालय क्षेत्र में सब धर्मों से प्राचीन है।

"डोल्पो दूसरे बड़े धार्मिक स्थलों से पूरी तरह अलग-थलग है। इसलिए उन परिवर्तनों से अछूता है जिनकी वजह से तिब्बत और नेपाल का रूप बदल गया है। इसलिए दूसरे स्थानों पर सब लोग घड़ी की दिशा में फेरी लगाते हैं पर हम डोल्पो में पुराने तरीके से ही चलते हैं। इसके अलावा, महात्मा बुद्ध अपनी परिक्रमा घड़ी की दिशा में करते थे, तो जब हम विपरीत दिशा में चलते हैं तो हर चक्कर में एक बार महात्मा से मिलते हैं!" म्या ने बताया।



लंबू लामोलामा

कुछ दिन और साथ-साथ चलते हुए म्या ने भक्तप्रसाद को अपने विषय में बताया। आदमियों को भेड़-बकरी का मांस पसंद है—इस बात पर मेंढक ने घृणा दिखाई, "कितनी बुरी बात है, किस तरह वे तुम्हें खा लेते हैं!" वह बोलता गया, "इस बात में हम मेंढक भाग्यशाली हैं। कोई इंसान हमें अपना भोजन नहीं बनाता है। हां, हम मेंढकों को सांपों से बचना पड़ता है।"

"भक्ते, ये सच नहीं है," म्या ने सिर हिलाकर कहा। भक्तप्रसाद को असमंजस में देख उसने बताया, "इंसान मेंढक का मांस भी बड़े चाव से खाते हैं। सात समुद्र पार एक जगह है फ्रांस। वहां तो मेंढक का मांस पकवान माना जाता है। वे लोग तुम्हें पूरा नहीं खाते हैं। मैंने सुना है तुम्हारी टांगें उन्हें पसंद हैं।"

इस सूचना से भक्तप्रसाद बहुत उदास हो गया। म्या ने उसे पुचकारा, "भक्ते, फिक्र मत करो। काठमांडू घाटी में फ्रांस का भोजन नहीं खाया जाता है। कम से कम अब तक तो नहीं। वैसे भी, ऐसा स्वाद धीरे-धीरे पनपता है। तुम्हारा परिवार कई पीढ़ियों तक सुरक्षित है।"

उसी दिन बाद में जब वह कैली की पीठ पर ऊंघ रहा था, मेंढक ने सपने में देखा कि इचंगु की पूरी मेंढक जाति को अजीब बोली बोलने वाले लोगों ने बंदी बना लिया है। उसने भागना चाहा तो भेड़ का मुखौटा पहने एक व्यक्ति चिल्लाया, "से ज्यूने अवक लेस ग्रान्डेस क्यूसेस! वह भाग रहा है! पकड़ो उसे!" फिर एक हाथ आगे आया और उसने उसे गरदन से पकड़ लिया। भक्तप्रसाद डर से चीख उठा।

'यह मेंढक कैली की पीठ पर बैठा क्या कर रहा है और मुझ पर क्यों चिल्ला रहा है!' साधु ने सोचा।

"मुझे जाने दो! मुझे जाने दो!" भक्तप्रसाद चिल्ला रहा था और लंबे व



पतले लड़के की पकड़ से निकलने के लिए मचल रहा था। उस लड़के ने साधु जैसा चोंगा पहन रखा था। काफिला शेय गुम्बा पहुंच गया था और मठ के बाहर डेरा डाले था। नौसिखिए साधु को कैली का सामान उतारने का काम सौंपा गया था। तभी उसने भक्तप्रसाद को वहां सोते हुए देखा।

"अब कहो, क्या कह रहे थे? मेरा नाम लामोलामा है। तुम्हारा नाम क्या है?" "मैं भक्तप्रसाद भ्यागुतो।" "अच्छा, मचलना बंद करो और आओ, मेरे कंधे पर बैठ जाओ। मेरा कॉलर पकड़कर रखो, नहीं तो गिर जाओगे। मठ देखना चाहते हो?" उस लड़के ने पूछा।

मेंढक ने सभी बातों के जवाब में सिर हिलाकर 'हां' कहा। लड़के ने सामान का बोरा भंडार घर में पहुंचा दिया, फिर वह मुख्य इमारत की ओर गया। भक्तप्रसाद उसका कॉलर पकड़े कंधे पर बैठा था। शेय गुम्बा बहुत भव्य था हालांकि कुछ खुरदरा था। उसका ढांचा कीचड़ व पत्थर से बना था। दीवारें कुछ ढलवां थीं। कड़ियां, दरवाजों और खिड़कियों की लकड़ियां बहुत सफाई से नहीं तराशी गई थीं। भीतर से घंटे बजने की ट्रिंग-ट्रिंग और छोटी घंटियों की रुनझुन सुनाई पड़ रही थी।

वे एक लंबे, अंधेरे सभाभवन में पहुंचे जहां अगरबत्तियों की अद्भुत सुगंध फैली थी। मठाधीश दूसरे किनारे पर बने एक ऊंचे मंच पर बैठा था। उसके हाथ में पीतल की एक घंटी थी और दूसरे हाथ की उंगलियों से वह अबूझ किस्म का कोई प्रदर्शन कर रहा था। वे सब धार्मिक विधियां भक्तप्रसाद की समझ से बाहर थीं। प्रमुख लामा के आगे दो पंक्तियों में कुछ साधु पालथी लगाए बैठे थे। वे सब ग्रंथों पर झुके हुए थे और एक सुर में मंत्रोच्चार कर रहे थे। रोशनी केवल चिकने कागज के जलते हुए कई लैंपों से आ रही थी। उन लैंपों की नन्ही लौ वेदी के सामने भगवान की शांत मूर्ति के नीचे नृत्य कर रही थी।

नौसिखिया लामोलामा दरवाजे के पास सबसे नीचे वाली कतार में जा बैठा। उसने लाल कपड़े में लिपटी अपनी धार्मिक पुस्तक खोली, पन्नों को पलटा और सबके साथ सुर में पाठ करने लगा। एक सेवक मक्खन वाली चाय लेकर नीचे आया। मेंढक को यह चाय बहुत पसंद आई थी जब उसने पहली बार लो-मान्तांग में पी थी। लामोलामा ने सबके साथ सस्वर गान करते हुए, बिना रुके, इशारे से भक्तप्रसाद को चाय पीने के लिए कहा। मेंढक नीचे जमीन पर आया, उसने कप उठाया, मुंह से लगाया और झट से पी गया। "अहा! क्या अमृत था! मुस्तांग से डोल्पो तक की लंबी यात्रा का फल मिल गया।" मेंढक बहुत खुश था।



मेंढक डोल्पो में

याक के मक्खन वाली चाय से अपने को तृप्त कर चुकने के बाद भक्तप्रसाद छलांग लगाकर वापस लामोलामा की पीठ पर आ बैठा। लामोलामा सहित सभी नौसिखियों ने अपना सस्वर गान समाप्त किया और अपनी धार्मिक पुस्तकों को समेट लिया। वरिष्ठ मठवासियों का पाठ जारी था। लामोलामा ने मेंढक की ओर मुंह करके बताया कि प्रार्थना में क्या कहा गया है।

"प्रत्येक प्राणी की भूमिका क्या है? जीवन जन्म से मृत्यु तक एक चक्र है। जन्म, मृत्यु, फिर पुनर्जन्म। बुद्धिहीन प्राणी सहज ज्ञान से जीते हैं और तुम्हारे जैसे मेंढक और हम मनुष्य बुद्धिमान प्राणी हैं। हम पर जीवन-मृत्यु चक्र में अधिक जिम्मेदारी है। हमें अपने साथी जीवों के प्रति संवेदना व समझदारी दिखानी होती है।" लामोलामा ने बताया। भक्तप्रसाद ने सब बड़े गौर से सुना। सभी बातें दुनिया के बारे में उसको समझने के विषय में थीं।

"भक्तप्रसाद, बुद्धि वाले प्राणियों की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि वह दूसरों के नजरिए से चीजों को देख पाते हैं। अगर हम ऐसा कर पाते हैं तो एक अच्छे और समझदार इंसान हैं क्योंकि सारे झगड़े और विवाद स्वार्थी होने से ही होते हैं।" लामोलामा ने समझाया।

"यह तो सच बात है!" भक्तप्रसाद के दिमाग की खिड़की खुली। उसने जाना कि पृथ्वी पर केवल मेंढक ही विशिष्ट प्राणी नहीं थे, जैसा कि वह अब तक समझता था। अपनी इस यात्रा में मेंढक ने नेपाल के विभिन्न भागों की यात्रा की और तरह-तरह के प्राणी देखे, उनसे मुलाकात की। इनके अतिरिक्त और भी अनेक जीव थे जिनसे वह नहीं मिला था। पृथ्वी केवल मेंढकों का घर नहीं थी बल्कि यहां केंचुए, गिलहरियां, साइबेरियाई

सारस, लैमरग्रायर गिद्ध, ततैए, मच्छर, तितलियां, हिमचीते, नीली भेड़ें, मनुष्य और खुम्रे कीड़े भी रहते हैं। ये कीड़े जमीन के नीचे पौधों की जड़ों को कुतरकर जीवित रहते हैं।

फिर, तरह-तरह की वनस्पतियां हैं, वन हैं, उद्यान हैं जिनमें बारीक पत्तियों वाले फर्न, चीड़, अंगूर व साल के पेड़ हैं और चौड़े पत्तों वाले 'कर्कलो' पौधे हैं। बाकी दुनिया निर्जीव पदार्थों से बनी है। जैसे कि चट्टान, पत्थर, शिलाखंड, रोड़ी, मिट्टी व कीचड़ और नीला आसमान, लहराते बादल, बरसात, नदियां, झरने, झीलें, बर्फ से ढंके पर्वत चोटी, बिना बर्फ की चोटियां, घाटियां, मैदान—इन सब चीजों के बीच है भक्तप्रसाद, राना टिगरिना जाति का एक मेंढक।

"ये सभी प्राणी व चीजें अलग तरह की थीं, फिर भी सब आपस में जुड़ी थीं और एक बड़ी योजना का भाग थीं। जीवित रहने के लिए सब एक-दूसरे पर निर्भर हैं भले ही यह बात स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ती हो। ...कोई भी मनुष्य या चीज अकेली महत्वपूर्ण नहीं है। सब परस्पर जुड़े हैं। भेड़ को घास की जरूरत है, घास को मिट्टी चाहिए और मिट्टी भेड़ की मींगनी से उपजाऊ बनती है। इस तरह चीजों का एक चक्र है।" लामोलामा ने विस्तार से बताया।

घंटों की ट्रिंग-ट्रिंग, वेदी पर नृत्य करती रोशनी और एक सुर में मंत्रोच्चार करते साधु, सबने मिलकर भक्तप्रसाद पर विचित्र असर डाला। अभी तक मेंढक का ध्यान आंखों से बाहरी दुनिया को देखने पर केंद्रित था लेकिन अब उसने अपने भीतर झांका और सोचने लगा कि वह भ्रमण क्यों कर रहा है, प्राणी क्यों जीवित रहते हैं, मर क्यों जाते हैं आदि।

उसे गहरी सोच में देख लामोलामा ने कहा, "जब हम जिंदगी को समझने लगते हैं तब विनम्रता का मतलब समझ में आता है। फिर हम अपने आप को बहुत महत्व नहीं देते हैं। संवेदना बहुत जरूरी है। यानी बिना किसी आशा के दूसरों के प्रति दयालु होना और उनकी सहायता करना।"

भक्तप्रसाद ने बेचैनी से सिर हिलाया और कई बार पलकें झपकाईं। उसने पहले कभी इतना सोच-विचार नहीं किया था। इन सब बातों से उसका दिल भर आया। मेंढक ने नए विचारों को समझने की भरपूर

कोशिश की। उसके नन्हे दिमाग को ये विचार झिंझोड़ रहे थे। लामोलामा ने उसका सिर थपथपाया और प्यार से कहा, "जीवन में हर दिन कुछ नया जानने को होता है। सीखना कभी समाप्त नहीं होता और तुमने तो अभी शुरुआत की है।"

यहां डोल्पो की नुकीली चोटियों में, बौन पो परंपरा के एक मठ में, साहसी भक्तप्रसाद ने अपने मन के भीतर झांका। पहले अनजान अवस्था में मेंढक सब कुछ भूलकर मस्ती से उछल-कूद रहा था और चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा था, "ऐ, मैं हीरो हूं!" लेकिन अब वह एकदम चुप था। उसे अब भी सब कुछ अच्छा लग रहा था पर अब वह चिल्ला नहीं रहा था। उसने अपने आप से कहा, "तुम भीतर से खुश हो। जो लोग भी तुमको मिले सब बहुत अच्छे थे। सबने तुम्हारी सहायता की तो तुम हीरो कैसे हुए?" इस स्वार्थहीन विचार से भक्तप्रसाद को बहुत सुख मिला। वह शेय गुम्बा के सभाभवन में हो रहे धर्मानुष्ठान में बाकी समय आनंद की अवस्था में बैठा रहा।



सभी को विदाई

रात होने पर लामोलामा और भक्तप्रसाद उस नौजवान साधु की कोठरी में सोने चले गए। वह एकदम खाली कमरा था जिसमें एक खिड़की थी। सोने से पहले लामोलामा ने कहा, "तुम बहुत दूर-दूर तक घूम चुके हो और तुम्हें यह बात अब समझ में आ गई है कि दूर तक जाकर भी कहीं नहीं पहुंचा जा सकता और बिना यात्रा किए भी मंजिल पाई जा सकती है। तुम बहुत भाग्यशाली हो क्योंकि तुमने भ्रमण के दौरान स्वयं को खोज लिया है। यह सचमुच खुशी की बात है!"

फिर दोनों ने मिलकर आगे की योजना के विषय में बातचीत की। लामोलामा का विचार था कि अब मेंढक को अपने घर, इचंगु लौट जाना चाहिए। मेंढक ने उसकी बात मान ली। कल उसे दक्षिण दिशा की ओर जाना था।

सूरज की पहली किरण जैसे ही लामोलामा के छोटे-से कमरे में पड़ी भक्तप्रसाद जग गया। ठंडी हवा खिड़की से भीतर आई और बदन अकड़ाने लगी। लामोलामा पहले से ही बाहर था। उसने सवेरे के सभी काम और पूजा-पाठ पूरे कर लिये थे। कुछ साधु भक्तप्रसाद को विदा करने नीचे तक आए। लामोलामा एक 'खादा' लेकर आया जिसे काटकर मेंढक के नाप का बनाया गया था। वह नीचे पहुंचा और उसने वह बुना हुआ स्कार्फ भक्तप्रसाद के गले में पहना दिया। मेंढक भावुक हो गया, उसका गला भर आया। उसने वहां आए सभी साधुओं को हाथ जोड़कर प्रणाम किया। वह मुड़ा और डोल्पो से बाहर नीचे की ओर चल पड़ा।

मेंढक उछलते हुए जा रहा था और स्कार्फ उसके पीछे उड़ रहा था। मौज-मस्ती करते हुए वह जुफाल के हवाई क्षेत्र की ओर चलता गया। वह एक छितरे स्थान पर पहुंचा। वहां पहाड़ों के बीच में एक नीली झील थी।

झील का झुकाव नीचे की ओर था। वहा एक झरना सैकड़ों फुट नीचे तक गया था। झरने के तल पर एक बड़ा तालाब था। मेंढक वहां कुछ देर मौज-मस्ती के लिए रुका। उसने बहुत दिनों से अपने ऊपर चढ़ी धूल, पसीने और कालिख को धोकर साफ किया । मुस्तांग और डोल्पो में इतनी ठंड थी कि वहां नहाने का सवाल ही नहीं था।





झरने के नीचे थकान मिटाने के बाद मेंढक फिर उछलते हुए आगे बढ़ा। अब तक वह खूब मजबूत और सुंदर बन गया था, एक पूरा युवक मेंढक। उसकी चमड़ी पहाड़ी स्थानों पर सूरज की गरमी से काली हो गई थी। रास्ते पर चलते हुए उसकी जांघों की मांसपेशियां लहरा रही थीं। उसकी टांगों ने पहाड़ों पर इतनी कसरत की थी कि अब वह किसी भी सूरमा मेंढक से आगे निकल सकता था।

वह जुफाल हवाई क्षेत्र की ओर बढ़ता जा रहा था क्योंकि जमीन के रास्ते वापस काठमांडू लौटना नामुमकिन था। महीनों का समय लगेगा और मन इधर-उधर भटकेगा। इस तरह बरसों लग सकते थे और तब तक वह घर को भूल ही जाएगा। वह तो अभी ही अपने नाना बुद्धिप्रसाद और भाई-बहनों के चेहरों को ठीक से याद नहीं कर पा रहा था। बस, मां का चेहरा स्पष्ट था। एकाएक उसके मन में इच्छा हुई कि वह तुरंत मां के पास पहुंच जाए। इसी वजह से वह हवाई क्षेत्र पहुंचने के लिए पूरे समय लंबे डग भरता रहा।

जब वह जुफाल पहुंचा तो पाया कि वहां हवाई अड्डे के काउंटर पर तैनात अफसर बहुत अकड़ू था। नियम के अनुसार कीड़ों, मेंढकों, टोडों, सांपों और चूहों को टिकट देने की इजाजत नहीं थी। अफसर ने कहा कि मेंढक काठमांडू की लंबी यात्रा पैदल करे। भक्तप्रसाद परेशान हो उठा। उसने नीचे बहती भेरी नदी को उदासी से देखा। उसके किनारे के साथ दक्षिण की ओर जाने वाला रास्ता भी दिख रहा था।

भक्तप्रसाद ने निश्चय किया, "मैं नहीं मानता ये कानून। यह अनुचित है। मैं हवाई यात्रा ही करूंगा। मैं कल पायलट से बात करूंगा।" उसे याद था कि कैसे उसने नारायणघाट पर फुलमाया से ट्रक में जगह ली थी। वह ट्रक का ड्राइवर थी और पायलट हवाई जहाज का ड्राइवर है।

उस रात भक्तप्रसाद जुफाल में एक तराजू के नीचे सोया। उसकी घूमने की चाह बीती बात थी। अब वह स्वयंभू स्तूप के पीछे धान के खेतों में लौटना चाहता था। वह इचंगु में अपने परिवार और मित्रों के बीच जाना चाहता था।



परिचित आसमान में उड़ान

अचानक गड़गड़ की आवाज सुनकर भक्तप्रसाद भ्यागुतो चौंककर उठा। ट्विन ऑट्टर जहाज जो हवाई पट्टी पर उतर रहा था, यह आवाज उसके इंजन की थी। जुफाल हवाई पट्टी ढलवां व रेतीली थी। जहाज ने टर्मिनल पर आते हुए खूब धूल उड़ाई। यात्री जहाज से उतरे जबकि आस-पास के गांवों से लोग वहां तमाशा देखने जमा हो गए थे।

जहाज में अगले भाग का एक छोटा दरवाजा खुला। कलफ लगी सफेद पोशाक में एक चुस्त व्यक्ति जमीन पर उतरा। उसने घूमकर जहाज के दोनों परों, पंखे व पतवार की जांच की। यह ट्विन ऑट्टर का पायलट था। मेंढक ने तेजी से उसके आस-पास चक्कर काटा। वह आदमी जहाज के एक पर की लचक की गौर से जांच कर रहा था और उसका ध्यान जवाब के इंतजार में बैठे मेंढक की ओर नहीं गया।

भक्तप्रसाद ने अपनी मांसल टांगों में सारी शक्ति जमा की और पायलट की आंखों तक पहुंचने के लिए खूब ऊंचा उछला। इस बार पायलट की नजर उस पर पड़ी। उसने अपना धूप का चश्मा उतारा और घुटनों के बल नीचे बैठ गया। तब उसने एक मेंढक को 'खादा' पहने देखा।

"मेरा नाम भक्तप्रसाद भ्यागुतो है, पायलट जी," मेंढक ने बताया।

"हैलो, मेरा नाम आकाश भैरव नारायण है। तुम मुझे कैप्टन एबी कह सकते हो। बोलो क्या बात है?" पायलट ने पूछा।

हड़बड़ाते हुए मेंढक ने कहा, "ये लोग मुझे जहाज में चढ़ने नहीं दे रहे। मैं पिछले काफी दिनों से नेपाल घूम रहा हूं। अब मुझे अपने घर की याद आ रही है, अपनी मां, नाना, भाई-बहन सबकी। मैं अब अपने घर जाना चाहता हूं!"

कैप्टन एबी ने अपनी ठोड़ी पकड़ी और कहा, "आहा! मेंढक बोल



सकता है, कितने मजे की बात है!"

कुछ देर तक मेंढक की बात बीच में रह गई। "हां, ऐसा नियम है कि मेंढक यात्रियों के साथ यात्रा नहीं कर सकते। यह तो तुमको पता है। लेकिन नियम वाली किताब में यह कहीं नहीं लिखा है कि कॉकपिट में कैप्टन की जेब में बैठकर मेंढक नहीं जा सकता है।" कैप्टन ने कहा और आंख झपकाई। भक्तप्रसाद खुशी से उछल पड़ा। उसे लगा मानो वह घर पहुंच गया!

"तुम्हारे पास सामान है क्या? नहीं है तो चलें?" पायलट ने एक उंगली से कमीज की जेब चौड़ी की और मेंढक को अंदर आने का इशारा किया। एक ही छलांग में मेंढक जेब के अंदर घुस गया।

सभी यात्री जहाज में बैठ चुके थे, सामान लद गया था और जहाज के उड़ने का समय हो गया था। कैप्टन एबी कॉकपिट की ओर गया और भीतर उछलकर जा बैठा। उसने अपने साथी पायलट को अंगूठे से इशारा किया, जो उपकरणों की जांच कर रहा था। "हमारे साथ कोई है," उसने अपनी कमीज की जेब को थपथपाकर कहा।

भक्तप्रसाद ऊपर उचका, उसने जेब के किनारे पर हाथ टिकाया और कॉकपिट के शीशे से बाहर देखा। पायलट को दिखने वाले सभी दृश्य वह भी देख सकता था। कप्तान एबी ने बायें हाथ से स्टीयरिंग को संभाला और दायें हाथ से गतिरोधक। इसे आगे की ओर खींचा और जहाज के दोनों इंजन को पूरी ताकत से गति दी। जहाज को आगे बढ़ाने वाले पंखे हिले, घूमे और गरजे। जहाज उड़ने के लिए थर्राया। कप्तान एबी के इशारे पर ब्रेक छूट गए और ट्विन ऑट्टर ढलवां हवाई पट्टी पर दौड़ने लगा। पहिए जमीन से ऊपर उठे और भक्तप्रसाद हवा में उड़ने लगा।

छोटा जहाज भेरी नदी के किनारे से होता हुआ दक्षिण की ओर उड़ा और फिर पूर्व की ओर उड़ चला। वे आगे फैली पहाड़ियों, हरे-भरे मैदानों और बर्फ से ढकी चोटियों से उड़कर निकले। दायीं ओर धौलागिरि हिमाल था, उसके बाद बायीं ओर और भी बहुत-सी पहाड़ियां थीं, अन्नपूर्णा और अपनी पूंछ के साथ माछापुछे, मनास्लू व गणेश हिमाल, जो काठमांडू घाटी की रक्षा करते हैं।

हवाई जहाज के नीचे केंद्रीय नेपाल के पहाड़ थे। गरदन घुमाते ही सब भक्तप्रसाद के सामने था जो उसने महीनों घूमकर देखा था। अपनी यात्रा के दौरान उसने जो मित्र बनाए थे, वे सब वहां नीचे थे। हिमालय के पार अंतिम नीली पहाड़ी के दायीं ओर तराई के जंगल दिखाई पड़ रहे थे।

तराई की धुंध में तुलसीराम अपनी बैलगाड़ी बाजार ले जा रहा होगा, चितवन जंगल में शाहे बंगाल शेरनी अपना शिकार खोज रही होगी। ट्रक ड्राइवर फुलमाया नारायणघाट और पोखरा के बीच कहीं होगी, वहीं वह

बदमाश प्रजापति झील के पास बैठा पहरा दे रहा होगा। वह शालिग्राम खच्चर जोमसोम में पीठ पर बोझा लादे पसीने से लथपथ होगा। काली गंडकी नदी के बारे में सोचने पर भक्तप्रसाद को जो जोपा के साथ बीते मजेदार पल याद आए।

ऊपर लो-मान्तांग में वहां की हेमा मालिनी ने सवेरे मक्खन वाली चाय बनाने की तैयारी शुरू कर दी होगी। नीचे छंगतांग में लेटलतीफ पैंबा मूसा अभी भी अपने बिल में दुबका होगा। चुप रहने वाली कैली याक लो-मान्तांग लौट आई होगी और लामोलामा शेय के सभागार में दीपक जला रहा होगा। दायीं ओर देखते हुए मेंढक ने एक पल को तराई वाले टोड के बारे में सोचा। उसका वह मित्र 'मगर' घड़ियाल का निवाला बन गया था।



घर वापसी

भक्तप्रसाद अपने साथियों के खयालों में खोया था। कप्तान एबी ने हिलाया तो वह स्वप्न से जागा। पायलट ने उंगली से बगल वाली खिड़की की ओर इशारा किया। जहाज के दो इंजन इतना शोर कर रहे थे कि बात करना संभव नहीं था।

मेंढक उत्सुकता से जेब के बाहर उचका और उसने नीचे की ओर देखा। देखता क्या है कि हरी-भरी पहाड़ियों के बीच एक बहुत ही बड़ा कटोरा है और वह झाग वाले दूध जैसी किसी चीज से भरा है। फिर भक्तप्रसाद को अहसास हुआ कि यह तो काठमांडू घाटी है! धुंध की चादर से ढकी जमीन सवेरे के समय ऊपर से देखने पर कितनी सुंदर और चकित करने वाली है!

धुंध से ढके काठमांडू, पाटन और भक्तपुर शहर और उनके आस-पास के कांठ के सभी लोग धूप के बिना सर्दी से जम रहे थे। यहां ऊपर आसमान एकदम साफ था और सामने कभी न समाप्त होने वाले दृश्य। पूर्व में कंचनजंगा की पर्वत शृंखला और पश्चिम में धौलागिरि तक लगभग आधा देश था।

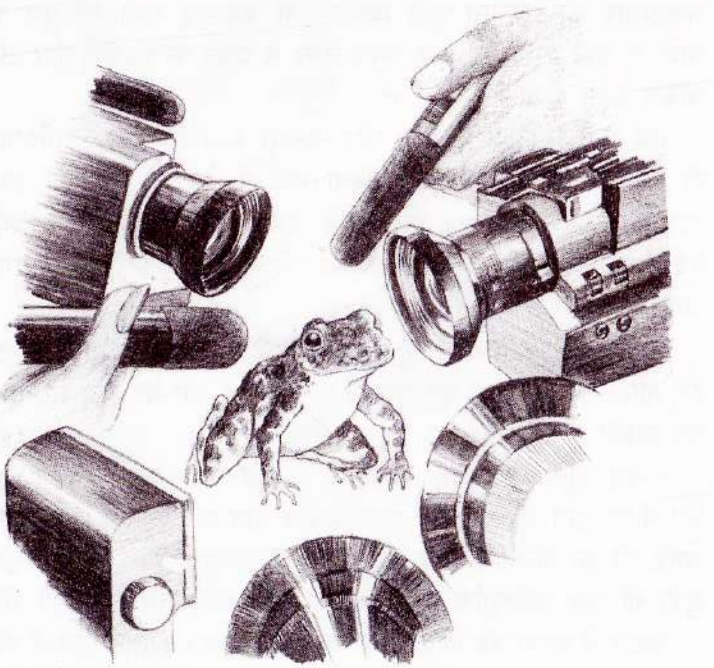
कप्तान एबी ने घाटी के कुछ चक्कर काटे कि सूरज की गर्मी से धुंध हट जाए। भक्तप्रसाद ने एक बार फिर नीचे देखा और वह ठगा रह गया। यह उसकी यात्रा का सबसे अद्भुत नजारा था।

स्वयंभू! सुबह की उजली सूरज की किरणों में सफेद गुंबद वाला स्तूप धुंध में ऐसे लग रहा था मानो झील में कोई द्वीप हो! बुद्ध की वही हितैषी आंखें, जो इस नौजवान मेंढक को बरसात के प्रारंभ में यात्रा पर जाते देख चुकी थीं अब शांतिपूर्वक हवाई जहाज से उसकी वापसी देख रही थीं।

जहाज ने घूमना बंद किया और नीचे आने लगा। कप्तान एबी ने गति

कम की और ट्विन ऑट्टर को पाटन शहर पर त्रिभुवन इंटरनेशनल एअरपोर्ट की हवाई पट्टी पर उतरने से पहले नीचे किया। सामने देखने से हवाई पट्टी किसी बड़े मुख्य मार्ग की तरह लगती थी। पायलट ने स्टयीरिंग को खींचा और ट्विन ऑट्टर खड़खड़ और चीं-चीं करता पक्की सड़क पर आ लगा।

कप्तान एबी जहाज को एक जगह खड़ी भीड़ की तरफ ले गया। ''लगता है कोई मशहूर आदमी जहाज पर है जिसके लिए इतने लोग आए हैं,'' भक्तप्रसाद ने कहा। कप्तान एबी हंसा और उसने जवाब दिया, ''जनाब, कोई वी.आई.पी. नहीं बल्कि एक वी.आई.ए.--वेरी इम्पॉर्टेंट ऐम्फीबियन--आया है, जहाज पर एक मेंढक आया है। मैंने कंट्रोल टावर को सूचना दी थी कि तुम्हारे घर वालों और मीडिया को तुम्हारे आने की खबर कर दी जाए।''



पायलट ने भक्तप्रसाद को अपनी जेब से बाहर निकाला और दरवाजे पर टिका दिया। भक्तप्रसाद को पहचानते ही लोगों ने जोरदार तालियों से उसका स्वागत किया। जैसे ही वह उछलकर जमीन पर आया किसी ने उसके गले में गेंदे के फूलों की छोटी-सी माला पहना दी। उसकी मां सानोमैया ने उछलकर उसे गले से लगा लिया। मां के पीछे खड़े हजूरबा बुद्धिप्रसाद भ्यागुतो अपने नाती को देखकर गर्व से मुस्करा रहे थे। बुद्धिप्रसाद के पीछे कोई ढाई सौ नन्हे मेंढक थे जो भक्तप्रसाद के यात्रा पर जाने के बाद पैदा हुए थे।

काठमांडू का मेयर भी वहां उपस्थित था। उसने घाटी के इस सर्वाधिक साहसी मेंढक की वापसी पर स्वागत भाषण दिया लेकिन भक्तप्रसाद अपने परिवार वालों से मिलने में लगा था, उसने कुछ ध्यान नहीं दिया। उसके सभी भाई-बहनों से जब उसका परिचय करवाया गया तो सभी शरमा रहे थे। वह सबके लिए हीरो बन चुका था।

तभी एक आवाज गूंजी, ''बोलो, बोलो!'' यह आवाज मीडिया से आए उन महिला व पुरुष संवाददाताओं-पत्रकारों की थी जो इचंगु के इस मेंढक की वापसी के समाचार प्राप्त करने आए थे। फ्लैश बल्बों की चौंध और भीड़ से घिर जाने पर भक्तप्रसाद ने गरदन उठाकर देखा कि माइक्रोफोन का हुजूम उसकी तरफ झुका था। वह उन्हें निराश नहीं करना चाहता था। उसने कहना शुरू किया--

''मित्रो, कुछ महीनों पहले जब मैं काठमांडू घाटी से यात्रा के लिए चला था तो मेरे मन में मौज-मस्ती का विचार था। लेकिन मैंने इससे कहीं ज्यादा पाया है। मैं यात्रा के दौरान जान पाया कि नेपाल सुंदर प्राकृतिक भू-दृश्यों से संपन्न देश है। सुंदर खेत व जंगल, पहाड़ी शृंखलाएं व बर्फ से ढकी चोटियां! नेपाल का सौभाग्य है कि यहां के निवासी दयालु व दूसरों का ध्यान रखने वाले हैं--मनुष्य, पशु, पक्षी, कीड़े, सभी निवासी। अभी तक मुझे पता था कि काठमांडू एक सुंदर घाटी है पर अब मैं जानता हूं कि नेपाल एक खूबसूरत देश है। हमें इसे ऐसा ही बनाए रखना है।'' भक्ते ने कहा।

भक्तप्रसाद इतनी देर तक पहली बार बोला था। वह झेंप गया और

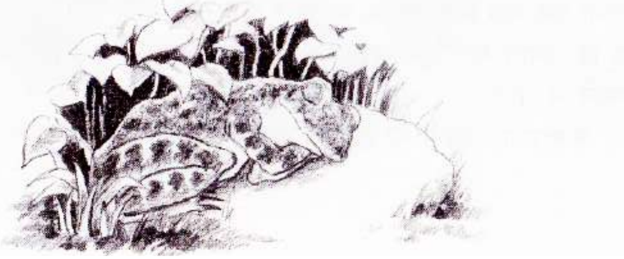
'धन्यवाद' कहकर उछलता हुआ अपने परिवार के पास चला गया। वे लोग बड़ी देर से उसे इचंगु, अपने घर ले जाने के लिए इंतजार कर रहे थे। साझा बस कंपनी का जनरल मैनेजर, जो पहले एक बार भक्तप्रसाद को बस में चढ़ाने से इनकार कर चुका था, अब पूरे मेंढक परिवार को हवाई अड्डे से रिंग रोड बस स्टॉप तक मुफ्त ले जाने को तैयार खड़ा था।

घर लौटते समय भक्तप्रसाद मां सानोमैया और नाना बुद्धिप्रसाद के बीच चिपटकर बैठा था। एकाएक उसे चक्कर आने लगा। उसे लगा कि यह सब घर लौटने की खुशी के कारण है, लेकिन उसने देखा कि उसकी मां को भी घुमेर आ रही थी। छोटे-बड़े सभी मेंढक एकाएक चुप हो गए थे।

अरे, तो क्या यह वही समय है! ऐसा कैसे हो सकता है? भक्तप्रसाद ने उत्तर जानने के लिए अपने नाना बुद्धिप्रसाद की ओर देखा। बूढ़ा मेंढक अपने नाती के मन की हलचल भांप रहा था। उसने सिर हिलाया और कहा, "यह सच है भक्ते! सर्दी शुरू हो गई है और काठमांडू घाटी की मेंढक जाति के लिए यह सोने का समय है। तुम सही वक्त पर लौटे हो।"

बस इचंगु के धान के खेतों के नीचे रुकी, सभी मेंढक शराबियों की तरह लुढ़कते हुए अपने छोटे व आरामदेह घरों में शीतनिद्रा में सोने चले गए। सानोमैया ने भक्तप्रसाद से कहा, "तुम अपने नाना के साथ जाओ और आराम से शीतकाल का समय बिताओ। जब हम सब सोकर उठेंगे और ताजा होंगे तब वसंत में तुम सबको अपनी यात्रा के विषय में बताना। उसी समय मैं तुम्हारे घर वापसी की दावत दूंगी!"

बुद्धिप्रसाद भक्तप्रसाद को अपने आरामदेह घर में ले गया। यह इचंगु के ढलवां खेत में ऊंची घास में बनी एक छोटी-सी खोखली जगह थी। उन्होंने जगह को ठीक किया ताकि कुछ महीनों तक आराम की नींद सो पाएं। नाना मेंढक और नाती मेंढक एक साथ शीतनिद्रा में चले गए।





शब्दावली

अजीला :	'अजी' तिब्बत में बड़ी बहन को कहते हैं। 'ला' सम्मानसूचक शब्द है।
बैल :	तराई इलाके में गाड़ी खींचने के काम आने वाला जानवर
भ्यागुतो :	मेंढक
चौतारा :	लोकसेवकों द्वारा पीपल के पेड़ की छांव में बनाया चबूतरा, जहां यात्री व कुली कुछ देर आराम कर सकते हैं।
छुर्पी :	ऊंचे पहाड़ी इलाकों में याक के दूध से बनाए जाने वाला सख्त पनीर
छोर्तेन :	निचले पहाड़ों में छोर्तेन स्तूप को कहते हैं। यह शब्द तिब्बत के बौद्धों में बोला जाता है। इसमें लामा यानी सम्मान योग्य लोगों के अवशेष रखे जाते हैं।
दरबार :	महल
दसैं :	नेपाल के मध्य भाग में शरद ऋतु के प्रारंभ में मनाया जाने वाला त्योहार, बुराई पर भलाई की जीत दर्शाता है। फसल तैयार होने की खुशी में लोग उत्सव मनाते हैं।
डोको :	बेंत से बनी टोकरी
गुम्बा :	तिब्बत का बौद्धमठ
हजूर :	बातचीत में अंग्रेजी के 'सर' की तरह सम्मानसूचक शब्द
हजूरबा :	पिता के पिता, यानी दादा
हिमाल :	बर्फीली चोटी या पर्वतमाला। जैसे कि माछापुछ्रे एक 'हिमाल' है जो कि 'अन्नपूर्णा हिमाल' का एक भाग है।
झाड़ी :	घना जंगल

कांठ : किसी शहर के सीमा पर के गांव को कहते हैं, जैसे बोल सकते हैं काठमांडू का कांठ। 'न' को नाक से और 'ठ' पर जोर देकर बोलेंगे। देहाती को नीचा दिखाने के लिए कहेंगे 'कांठे' है।

कांछा : छोटा भाई और अपने से छोटा कोई आदमी, कांछी माने लड़की

कर्कलो : चौड़े पत्ते वाला पौधा, जो नमी वाली जमीन पर उगता है।

खादा : रेशमी गमछा, जो किसी की शुभकामना के लिए या सम्मान के लिए कंधों पर डालते हैं। ऊंचे हिमालय के निवासी इसे निचली पहाड़ियों के हिंदुओं के फूलों के हार की तरह प्रयोग करते हैं।

खुम्रे कीड़ा : कीड़ों की इल्ली, जो जमीन में पौधों की जड़ें खाकर जिंदा रहती है।

''ला ता'' : विदा लेते समय किसी की तरफ हाथ हिलाना, जैसे ट्रक ड्राइवर फुलमाया कहती है ''ला ता, भाई'', यानी ''ठीक है छोटे भाई, विदा!''

लंगूर : सफेद मुंह व लंबी पूंछ वाला बंदर, जो नेपाल की तराई और पहाड़ी जंगलों में पाया जाता है।

मच्छा : मछली (कृपया पुछार भी देखें)

मूसा : चूहा

मुस्तांग : नेपाल के 'हिमालय-पार' क्षेत्र का नाम

ओम मणि पद्मे हम : बौद्ध तिब्बती प्रार्थना, बुद्ध से। इसका मतलब है–'कमल में रत्न उगाओ'। इसके बार-बार बोलने, प्रार्थना झंडों पर लिखने, चट्टानों पर खोदने, प्रार्थना से भरे घेरों को घुमाने से पुण्य बढ़ता है।

फुली : स्त्री के नाक का गहना

पीपल : हिंदुओं का पवित्र छायादार पेड़, जो घना और ऊंचा होता है।

पुछार : पूंछ (माछापुछ्रे मछली की पूंछ जैसी एक जुड़वां पहाड़ी चोटी का नाम है)

राजा : किसी राज्य के शासक की एक उपाधि, जैसे–'मुस्तांग का राजा'

रानीवन : रानी का वन। काठमांडू घाटी में इचंगु गांव के ऊपर ऐसे नामों वाले अनेक आरक्षित क्षेत्रों में से एक, नागार्जुन चोटी के ऊपर लकड़ी का बना एक आरक्षित क्षेत्र।

रिक्शा : तीन पहियों वाला आदमी की सवारी कराने वाला वाहन, जिसे आदमी खींचता है। चालक को 'रिक्शावाला' कहते हैं।

साहू : व्यापारी

सेमल : तराई के जंगल और निचली घाटियों में उगने वाला सेमल की रुई का पेड़

टोपी : टोपी। भक्तप्रसाद 'ढाका टोपी' पहनता है। इसकी उत्पत्ति बांग्लादेश की राजधानी ढाका में हुई।

छंपा : सत्तू, भुने जौ का आटा। तिब्बती बोलीवाले क्षेत्रों का बुनियादी खाना।

याक : हिमालय के आस-पास और तिब्बती पठार में पाया जाने वाला मंदबुद्धि जानवर। याक नर है और मादा को 'नक' कहते हैं। पूरी दुनिया में याक को एक जाति माना जाता है, इसलिए 'कैली' मादा है पर उसे याक बुलाते हैं।

पात्र

आकाश भैरव नारायण : भैरव भगवान शिव का रौद्र रूप है। आकाश भैरव–जो आकाश को वश में करे। नारायण कृष्ण भगवान के लिए प्रयुक्त होता है। अक्सर हिंदू नामों के साथ लगाया जाता है।

बहादुर : साहसी या हिम्मती। नेपाल के लोग नाम के साथ जोड़ते हैं, जैसे–शेर बहादुर।

भक्तप्रसाद : नेपाली नाम

भक्ते : भक्तप्रसाद का छोटा रूप, घर के बड़े अपने से छोटे को बुलाते हैं या मालिक नौकर को (ऐसा अपमान के भाव से बुलाते हैं)।

बुद्धिप्रसाद : भक्तप्रसाद के दादा का नाम

डोल्मा : तिब्बत की रक्षक व इच्छापूरक देवी तारा का बौद्ध नाम। डोल्मा लो-मान्तांग में रहने का डेरा चलाती है। लोग उसे मुम्बई की हीरोइन हेमा मालिनी के नाम से बुलाते हैं।

जो जोपा : बातूनी संकर जाति का बैल, जो भक्तप्रसाद को कागबेनी में मिलता है। नर याक और मादा गाय की संतान।

एकराज : नाम, राजाओं में प्रथम

कैली : नेपाली में भूरे बालों वाली औरत या लड़की को कहते हैं। कहानी में कैली भूरे बालों वाली याक है जो भक्तप्रसाद को मुस्तांग से डोल्पो ले जाती है।

लामोलामा : नेपाली में लंबा को लामो कहते हैं। लामा बौद्ध साधू है। कहानी में इसका अर्थ 'लंबा' है।

मगर : मगरमच्छ की दो जातियों में से एक, रॉयल चितवन नेशनल पार्क के पास बहने वाली नदियों में पाए जाते हैं। पूरा नाम है 'मार्श मगर'।

म्या : झबरे बालों वाला पहाड़ी बकरा

पैम्बा मूसा : तिब्बती में पैम्बा 'शनिवार' को कहते हैं। लड़का पैदा होने पर या किसी शुभ दिन के लिए प्रयोग किया जाता है।

फुलमाया : सुंदर फूल, नेपाल में प्रायः स्त्री ट्रक ड्राइवर का नाम

प्रचंड प्लोवर : प्रचंड का मतलब वेगपूर्ण। प्लोवर एक पक्षी की जाति है जो तराई में नदी के रेतीले व पथरीले किनारों पर पाए जाते हैं।

प्रजापति पोखेली : प्रजापति यानी 'जनता का स्वामी'। 'ब्रह्मा' के लिए प्रयुक्त होता है। पोखेली का मतलब 'पोखरा का निवासी'।

रॉयल बंगाल : 'शेरे बंगाल' कहे जाने वाले टाइगर की अब केवल पांच प्रजातियां बची हैं, वे भी समाप्त होने के कगार पर हैं। जो पहले दक्षिण एशिया में नेपाल, भारत व बांग्लादेश के जंगलों में फैला था अब केवल नेशनल पार्क और आरक्षित स्थानों पर ही बचा है।

शमशेर : शेर जैसी ताकत वाला। पुरुषों के नाम के साथ जोड़ा जाता है, विशेषकर नेपाल के शासकवर्ग में।

शालिग्राम : काली गंडकी घाटी में बहुतायत में पाए जाने वाला पत्थर

सानोमैया : बचपन में रखा नाम। सानो–छोटी, मैया–लड़की।

तराई टोड : नेपाल के दक्षिण में समतल भूमि का टोड

तुलसीराम बयाल : तुलसी–एक औषधीय व पूजनीय जड़ी। राम–रामायण महाकाव्य के नायक। बयाल–एक चौपाया, बैल, जो गाड़ी खींचता है।

*****

मुद्रण : कम्प्युडाटा सर्विसेज, नई दिल्ली–20